ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
साहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

नवंबर-दिसंबर 2025/ वर्ष 10 अंक 9

समीक्षा विशेषांक

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला

विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी

(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह

(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय

(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)

सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)

डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)

कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)

डॉ. हरेश्वर राय (सतना)

अशोक कुमार तिवारी (बलिया)

राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

रचना–आलोचना : भोजपुरी साहित्य –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 5–6

समीक्षा / पुस्तक चर्चा

भोजपुरी में रूसी किताब के अनुवाद 'एगो किताब मतारी बाप खातिर –डॉ शंकर मुनि राय / 7

फेर ना भेटाई ऊ पचरुखिया : एगो काल कथा– जितेंद्र कुमार / 8–12

झनकि बाजे हो : बदलत गाँवन के पीर – जितेंद्र कुमार / 13–15

भोजपुरी कविता के विकास–यात्रा के पड़ताल करे वाला ग्रंथ 'भोजपुरी कविता के इतिहास'– विष्णु देव तिवारी / 16–18

छौंकल गमगमात कथानक हव रेडलाइट – डॉ सुशीला ओझा / 18–20

"पढ़त–लिखत" : भोजपुरी आलोचना के कशमकश – जितेंद्र कुमार / 21–25

भोजपुरी साहित्य में महिला कहानीकारन क कहानी – डॉ रेनु यादव / 26–28

चुनाव बीचे रचाव– ' हर समय हँसे धरती'– डॉ सुनील कुमार पाठक / 29–32

जनवादी झलक के संगे माटी के गीत 'हरियरी रोपत हथेली'– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 32–33

सुघर, सचेत आ माटी के कवि : शशि प्रेम देव – कनक किशोर / 34–37

उचरत हरिनंदी के पीर के बहाने से –शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम' / 37–38

गँवई माटी में सनाइल कविता– डॉ राजेश कुमार माँझी / 38–41

भोजपुरी खातिर जरूरी किताब 'बात–बतकही'– केशव मोहन पाण्डेय / 41–42

भोगल यथार्थ के चित्रण 'गजल गवाह बनी'– डॉ संतोष पटेल / 43–44

बिसनाथ दुअरिया बइठ के

कुंडी क रहस्य– डॉ सुमन सिंह / 45–46

■■

रचना आमंत्रित

भोजपुरी साहित्य सरिता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

रचना–आलोचना: भोजपुरी साहित्य

एह संसार के हर मनई आपन भाव आ विचार के परोसे ला। भाव आ विचारन के सभके सोझा राखे के दुगो विधा होला । जवना के मौखिक भा लिखित का रूप में जानल पहिचानल जाला। भाषा के शब्दन के सजा–सँवार के एगो निश्चित क्रम में रखला के रचना कहल जाला। भा सोझ–सपाट रूप में कहल जाय त 'भाषागत प्रकाशन' के रचना कहला में कवनो गुरेज नइखे। एह दिसाई देखल जाव त 'भाषा में विचारन के राखल' मने रचना कइल कहल जा सकत बा। रचना के दुगो परकार होला–
1. गद्य रचना 2. पद्य रचना।

अब आलोचना का ह, एहु के जान लीहल जाव। 'आलोचना' शब्द 'लुच' धातु से बनल बाटे। 'लुच' के अरथ होला 'देखल'। समीक्षा आ समालोचना शब्दनो के इहे अरथ बा। आलोचना के काम ह, कवनो साहित्यिक रचना के नीमन से जांच–परख के ओकरे सुघरई, दोष–गुण आ प्रकृति के सम्यक विवेचन सोझा राखल । डॉक्टर श्यामसुन्दर दास आलोचना के परिभाषित करत कहले बाड़ें –'यदि हम साहित्य को जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा।'

एही क्रम में डॉ शंकर मुनि राय के कहनाम बा कि 'काव्य रचना एगो प्रतिभा ह, बाकिर समीक्षा भा आलोचना एगो ईमानदार नजरिया ।'कई लोगन का हिसाब से समीक्षा आ आलोचना अलग–अलग चीजु ह। समीक्षा में खाली किताबे के गुण–दोष परखल जाला बाकिर आलोचना में किताब का संगे संगे रचनाकार का रचनाधर्मो के उटकेरल जाला।

मने आलोचना के काम साहित्यक कृति के विश्लेषण परक व्याख्या ह। साहित्यकार जीवन आ अनभुव के जवने तत्वन के मिला के साहित्य रचना करेलें, आलोचना में ओही तत्वन के विश्लेषण कइल जाला। साहित्य में जहवाँ रागतत्व प्रधान ह, उहें आलोचना में बुद्धि तत्व। आलोचना मे ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियन के आकलन कइल जाला आ साहित्य पर ओकरे परभाव के विवेचना होखेला। अपना रुचि का हिसाब से कवनो कृति के निंदा भा परसंसा कइल आलोचना के धरम नइखे। आलोचना करत बेरा आलोचक के हर राग–द्वेष के अलगा राख के आलोचना करे के चाही। एकरा खातिर आलोचक के आलोचना पद्धति का हिसाब से चले के चाही। आलोचना के मुख्य रूप से चार गो पद्धति हो खेला–

1. सैद्धान्तिक आलोचना
2. निर्णयात्मक आलोचना
3. प्रभावाभिव्यंजक आलोचना
4. विश्लेष्णात्मक आलोचना

आलोचना के मूल उद्देश्य कवि के कृति के सगरे दृष्टि कोण से आस्वाद करावल आ पाठक लोगन के आस्वाद में मदद कइल होला। आलोचना रचना के विस्तार ह। आलोचना के रचनात्मक आ सकारात्मक होखल ओतने जरूरी बा, जेतना मनई के देह में प्राण । समीक्षा, आलोचना भा समालोचना कवनो रचना के उत्कृष्ठता के मानक पर ओकर मूल्यांकन करे वाली एगो साहित्यिक विधा ह, जवन सतत चलत चल आ रहल बा। अब अइसना में निर्णय करे वाला मने आलोचक से तटस्थता के उमेद सभे राखेला। मने आला. `चक के तटस्थ होखहीं के चाही।

आज जब हमनी के 'रचना– आलोचना: भोजपुरी साहित्य' के संदर्भ में बात कर रहल बानी सन त भोजपुरिया समाज में पसरल बात–बतकही,सोच–समझ,गोल–गोलबंदी आ ओही तारतम्य में रचना प्रक्रिया के गतिशीलता के नकार के आगु बढ़ पावल हमरा सहज ना बुझाला। ई अपना में हरमेसा से साँच बात रहल बा कि साहित्य कबों गोल – गोलबंदी से इतर नइखे रहल , त आज ओकर उमेद कइल जरिको उचित ना मानल जा सकेला। हर घरी साहित्य में कई गो धारा चलत रहेनी, एहु घरी चल रहल बानी। अगर हमनी के स्व0 विश्वरंजन जी के बिचार 'भोजपुरी भाषा के आपन संस्कार बा,आपन स्वर–संगीत बा। एह भाषा के साहित्य खातिर आपन रीति–नीति होखे के चाही । ना तै उधार लीहल नकल–नवीसी वाला धंधा हरदम रचना के संगे गड़बड़ी करत रही।' के आधार पर ई कहल जा सकेला कि भोजपुरी

साहित्य खातिर अबले आलोचना के कवनो विधात्मक स्वरूप नइखे बन पावल।एकर ई मतलब कत्तई नइखे कि भोजपुरी साहित्य में आलोचना नइखे लिखा रहल। आलोचना पहिलहूँ लिखात रहल आ अजुवो खूब लिखा रहल बा। आजु के समय में अगर विचार पूर्वक सोचल जाव त इहे लागेला कि आज जरूरत सर्जनात्मक आला. चना के ह ।

जवन विचारन के कई स्तर पर महसूसे आ ओकरा चलते रचना ना बलुक आलोचना केंद्र में आ जाव। रचना के चर्चा करत बेर आलोचक ओह रचना के सार अइसे परोसे कि चर्चा के सगरी परिभाषा मिल जाव। अइसन आलोचना के सार्थक आलोचना माने में केकरो गुरेज ना हो सकेला। भोजपुरी के किताबन के समीक्षा भा आलोचना करत बेर भोजपुरिया संस्कृति के धियान राखल बहुते जरूरी बा। एकरा के संस्कृत भा विदेशी साहित्य भा हिंदी के लाठी का संगे हाँकल रुचिकर ना होखी।हर बेर समीक्षक भा आलोचक के रचनन में नयापन के खोज जरूर करे के चाही। आलोचना करत बेर भाषा पर दीठी राखलो आलोचना के एगो खास गुण मानल गइल बा।

भोजपुरी साहित्य में आलोचना के शुरुवात 1915 ई0 से मानल जाला। 'बगसर समाचार' में कबों–कबों समीक्षा, टीका–टिप्पड़ी आ साहित्यिक विषयन पर लेख छपत रहे। बाकिर डॉ अशोक द्विवेदी भोजपुरी ब्यावहारिक आलोचना के शुरुवात 1948 ई. से मनले बानी। एह विषय में 1994 के पाती के आलोचना अंक में ओकर तथ्यागत उल्लेखो कइले बानी। डॉ सुनील कुमार पाठक अपने आलोचनात्मक कृति 'पढ़त–लिखत' में आपन बात राखत बेर भोजपुरी आलोचना के दिसाई भइल कामन के सलीके से निरूपित कइले बाड़न। कब–कब कवन–कवन किताब अइली सन, केतना शोध–प्रबंध प्रस्तुत भइल, केतना पत्र–पत्रिका भोजपुरी आलोचना के समरिध करे में आपन जोगदान देले बाड़ी सन।

भोजपुरी के जेतना पत्र–पत्रिका पहिले छपत रहल बानी भा एहु घरी छप रहल बानी। ओह सगरी पतरिकन में भोजपुरी के पोथियन के ढेर–थोर आलोचना/पुस्तक चर्चा लगातार होत चलल चल आवत बा। जरूरत बा छिटाइल चिजुइयन के समेटे के, संपादित करेके। अगर भविष्य में ई संभव हो पावल त भोजपुरी के आलोचना साहित्य कतों से कमतर न देखाई देही। एहु घरी भोजपुरी समीक्षा के पुस्तक खूब छप रहल बानी सन। हमरा उमेद बा कि ई क्रम विराम लेवे वाला नइखे। संगे–संगे सगरे रचनाकार लोगन के इहो डर सतावत रहेला कि लॉबी भा गोल–गोलबंदी का चलते नीमन रचना बिला न जा सन। कुल मिलाके ई कहल बाउर ना होखी कि भलही रचना कर्म कठिनतम होला बाकिर आलोचना के अइसन जरूर होखे के चाही कि रचना के मिठास बनल रहो। मने ई कहत बेरा हमरा जरिकों संकोच नइखे कि 'रचना के संगे ना त ढेर मनराखन पाड़ें वाला हाल होखे आ ना त एकदमे छील–छाल के बरोबर क दीहल जाव।

बाति कवन सुनाई , बा आलोचना
बा सभे मस्त आ ब्यस्त हमरी धना।

गोल क बाति बा, गोलबंदी क सँग
न देखाइल कतो, नामवर वाला रंग
देव सभके इतर, दीगर अराधना।
बा सभे मस्त आ ब्यस्त हमरी धना।

न मनीजर इहाँ, ना जपें ओम के
न पाठक मिसिर न दाऊ व्योम के
सभ कोसत सभे के ,सभै अनमना।
बा सभे मस्त आ ब्यस्त हमरी धना।

उपरहिता पग पग आ बा जजमानी
छछनत ह साहित्य, ऊ काटें चानी
तब्बो थोथा चना बाजे घनघना।
बा सभे मस्त आ ब्यस्त हमरी धना।

■■

रउआ सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनीं
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

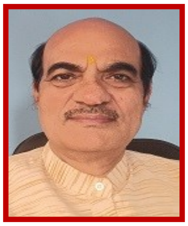

भोजपुरी में रुसी किताब के अनुवाद "एगो किताब मतारी–बाप खातिर"

डॉ. शंकर मुनि राय

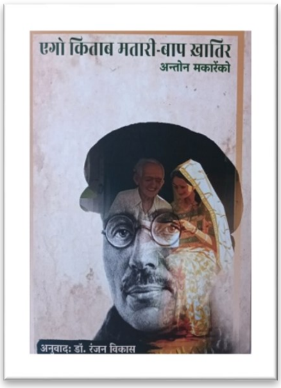

यह किताब प्रसिद्द रुसी लेखक अंतोन मोकारेंको की पुस्तक 'ए बुक फॉर पे. रेंट्स' का भोजपुरी अनुवाद है. और यह भोजपुरी अनुवाद किया है पटना के डॉ. रंजन विकास ने. बताना है कि रुसी भाषा में लिखी हुई इस पुस्तक का रुसी से अंग्रेजी में अनुवाद किया था किसी रॉबर्ट डगलिस नाम के एक लेखक ने. यह पहली बार फॉरेन लैंग्वेज पब्लिशिंग हाऊस मास्को से 1954 में छपी थी. इस प्रकार यह अनुवाद एक अनुवादित कृति का भोजपुरी अनुवाद है.

अब भोजपुरी में अनुवादित कृति की चर्चा करें तो बताना है कि सबसे पहले तो संस्कृत नाटकों का भोजपुरी अनुवाद बहुत हुआ. लेकिन विदेशी भाषाओ की कृति का भोजपुरी अनुवाद की शुरुआत मेरी जानकारी में मोती बी.ए . ने किया था. संभवतः 1970 के आसपास उनकी एक 'अब्राहम लिंकन' नाम की पुस्तक प्रकाश में आई थी जो किसी अंग्रेजी नाटक का रूपांतरण थी . संभव है उसके बाद भी रुसी–अंग्रेजी भाषाओं का भोजपुरी अनुवाद किसी ने किया होगा, पर मुझे इसकी जानकारी नहीं है.

इसलिए मैं डॉ. रंजन को सबसे पहले इसलिए बधाई देना उचित समझता हूँ कि आपने मुझे यह पुस्तक भेजकर बहुत बड़ा उपकार किया है. इतना ही नहीं, यह उपकार भोजपुरी पाठकों के लिए भी है. भोजपुरी साहित्य कोश को समृद्ध करने के लिए जरुरी है कि इसमें दूसरी भाषाओं की कृतियों का अनुवाद और प्रकाशन हो. इस मामले में हमारा भोजपुरी इलाका पीछे चल रहा है.

अब इस अनुवादित कृति के बारे में बताना है कि रुसी लेखक अंतोन मोकारेंको बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध, 1888 में जन्मे ऐसे लेखक का नाम है जिनकी इस कृति का देश–दुनिया के दर्जनों भाषाओं में अनुवाद हुआ है. इस कृति की लोकप्रियता का कारण यह है कि एक निरक्षर माता–पिता की संतान अंतोन मोकारेंको ने अपने जीवन में यह अनुभव किया कि शिक्षा वह नहीं है जो पुस्तकों में बंद है और पढ़कर प्राप्त की जाती है. बल्कि असली शिक्षा पारिवारिक परिवेश में पलकर ही प्राप्त की जाती है. इसलिए आपने यह बताया है कि बच्चों की पारिवारिक परवरिश अच्छी होनी चाहिए. इसलिए जरुरी है कि बच्चों की पढाई के लिए शिक्षकों से अधिक अभिभावकों का प्रशिक्षित होना जरुरी है.

उल्लेखनीय कि अंतोन मोकारेंको न केवल एक रुसी शिक्षाविद थे बल्कि समाजशास्त्रीय चिंतक और अपने समय के रुसी शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा देनेवाले मार्गदर्शक भी थे. इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा अंतोन मोकारेंको को उन्हें उनके एक शिक्षकीय जीवन की घटना से मिली थी. लेखक के अनुसार एक बार जब उन्होंने अपने छात्रों की मेरिट लिस्ट तैयार की तो अंतिम ३७वें छात्र को मात्र इसलिए नहीं फैल किया गया कि वह सबसे पीछे था, बल्कि इसलिए की वह शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ था. यह प्रसंग अंता. `न मोकारेंको को अंदर से झकझोर दिया. उसके बाद आपने पहले विश्वयुद्ध में अनाथ हुए बच्चों की परवरिश के लिए जो मानदंड तैयार किये, वही उनकी लोकप्रियता का कारण बना.

प्रस्तुत पुस्तक ' ए बुक फॉर पेरेंट्स' अंतोन मोकारेंको के जीवन के अंतिम तीन वर्षों में लिखा हुआ उनके जीवन का दर्शन है जिसे डॉ– रंजन ने यहाँ भोजपुरी में ' एगो किताब मतारी बाप खातिर' नाम से अनुवाद किया है. प्रसंगवश बताना है कि डॉ. रंजन न केवल एक अनुवादक बल्कि मनोवैज्ञानिक और सरकारी समाजशास्त्रीय परियोजनाओं के अनुसन्धानी भी रहे हैं आपने इसी दिशा में लगभग ढाई दशकों तक भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में काम किया है. उन्हें यह अनुवाद करने के लिए उनके बड़े भाई हिमांशु रंजन ने प्रेरित किया था.

डॉ. रंजन ने यह अनुवाद करके सभी भोजपुरी पाठकों के लिए सुलभ कर दिया है. रंजन जी के अनुवादी कला के बारे में बताना है कि आपने अंग्रेजी के कई जटिल शब्दों का भोजपुरी में ऐसा अनुवाद किया है कि पढ़कर मन खुश हो जा रहा है. अनुवाद वस्तुतः एक कला है, इसमें समझने से अधिक समझाने की कला आना बहुत जरुरी है, अनुवाद में स्रोत और लक्ष्य भाषा दोनों का सम्यक ज्ञान होना बहुत जरुरी है. किताब पढ़ने के बाद अनुवादक की कड़ी मेहनत का अंदाज लगाया जा सकता है.

'ए बुक फॉर पेरेंट्स' के कुल नौ अध्यायों को बड़ी मेहनत से रंजन जी नें २६३ पृष्ठों में विस्तारित किया है. भोजपुरी साहित्यांगन चौ. रिटेबल ट्रस्ट से प्रकाशित इस पुस्तक की प्रिंटिंग और बाइडिंग स्तरीय है.

❍ शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनादगांव

फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया : एगो काल–कथा

जीतेन्द्र कुमार

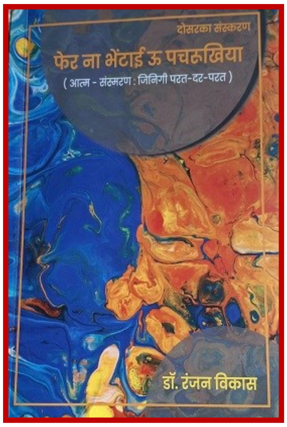

"फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया" डॉ. रंजन विकास के ऑफ–बीट संस्मरणात्मक रचना ह, जवना में इतिहास, वर्तमान के रोचक आवा. जाही में जनम भूईं, शिक्षा–भूईं, माई–बाबूजी, ननिहर शीतलपुर, मौसिहर तिलाकार–पिलुई–माधोपुर, 2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना के साहित्यिक माहौल, सरकारी सेवा के तैतीस बरीस के विहंगाव. लोकन–मूल्यांकन के मार्मिक–कारूणिक आ हास्य से भरपूर जीवंत पुनर्रचना बा। भोजपुरी गद्य में ई एगो नया प्रयाण बाय ई पूरा–पूरी ना संस्मरण ह ना जीवनीय कहानी ना उपन्यासय व्याकरण ना भाषा–विज्ञानय काव्य ना आलोचनाय बाकिर एकरा में पचरुखिया के एगो व्यापारिक केन्द्र में तब्दील होखे के अवलोकन–मूल्यांकन बा, जवना में नया सामाजिक–आर्थिक शक्तियन के उदय–कथा अनुस्थूत बाय पचरुखी चीनी मील के उदय आ अवसान के कारूणिक आख्यान बाय जमींदारी प्रथा के अवसान आ विखराव के बिम्ब बाय बंगलादेश के निर्माण से जनित मनई के अपना देश से पलायन आ ओकर मनोवैज्ञानिक प्रभाव के उल्लेख बाय कोलकाता वासीयन के खान–पान से ले के श्रम–संस्कृति पर चुटीला तंज बाय भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग में फइलल अराजकता आ भ्रष्टाचार के संक्षिप्त अक्स बा।

उल्लेख्य पुस्तक के लेखक डॉ. रंजन विकास भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग में मूल्यांकन पदाधिकारी रहले। उनकर सामाजिक अनुभव–संसार समृद्ध बा। "फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया" के एगो सामाजिक इतिहास के रूप में भी पढ़ल जा सकेला, जवना के फइलाव पचरुखिया से लेहले मणिपुर–नागालैंड तक बा। एह किताब के प्रस्तुति अठारह अध्याय में बा।

ई जानल प्रासंगिक होई जे एह किताब के लेखक भोजपुरी साहित्य–संस्कृति आ शिक्षा के लमहर विरासत के उत्तराधिकारी हउअन। उनकर दादा जी बंशीधर प्रसाद अपना जमाना के पहिलका ग्रेजुएट आ वर्मा (म्यामार) के राजधानी रंगून में शिक्षक रहले। उनकर हाथ के लिखावट अति सुंदर रहे। एगारह अक्टूबर, 1908 के अन्द्रेव विल्सन लिखत पुस्तक "स्केचेज ऑफ एनिमल लाइफ एण्ड हैबिट्स" के पहिला पन्ना पर बंशीधारी प्रसाद के हस्ताक्षर बा, जवना के फोटोग्राफ एह किताब के पृष्ठ 168 (दोसरका संस्करण) पर उपलब्ध बा। लेखक के बाबूजी शारदानन्द प्रसाद (2 जनवरी, 1929 – 8 अक्टूबर, 2003) भोजपुरी साहित्य के प्रसिद्ध हस्ताक्षर रहले। लेखक के तीनों मामा – पाण्डेय कपिल (1930–2017), पाण्डेय सुरेन्द्र आ पी. चन्द्रविनोद नामी साहित्यकार हवे लोग। उनकर नाना पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह (1905–1988) भोजपुरी उपन्यास "घर टोला गाँव" के लेखक हवन आ परनाना दामोदर सहाय सिंह 'कवि–किंकर' (1875–1932) अपना जमाना के नामी ब्रजभाषा के कवि रहले। नाना–नानी आ उनकर परिवार के नीमन वृत्तांत 'शीतलपुर – हमार ननिहर' में दर्ज बा, जवन भोजपुरी साहित्य के इतिहास के दृष्टि से महत्वपूर्ण बा।

एह पुस्तक के पाँच गो अध्याय – 'पचरुखी में हमार लइकाईं', 'पचरुखी में किसिम–किसिम के लोग', 'पचरुखी के अगली–बगली', 'पचरुखी के चीनी मील' आ 'पचरुखी बाजार के पसारा' में लेखक के आत्मवृत्तांत के अलावा एगो विशाल ग्रामीण क्षेत्र के समाजशास्त्रीय अध्ययन बा। किताब के दोसरका संस्करण (2024) में चार गो नया अध्याय जोड़ल गइल बा – 'पचरुखी बाजार के पसारा', इया आ उनकर सारधा बाबू'. '2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना के साहित्यिक माहौल' आ 'साहित्यायन से साहित्यांगन तक'। चारो नया अध्याय के जुड़े से किताब लेखक के खाली आत्म–वृत्तांत नइखे रह गइलय एकरा में पचरुखी के एगो कस्बाई शहर के रूप में पूँजीवादी विकास के इबारत बा। पचरुखी एगो आधुनिक व्यापारिक केन्द्र के रूप में आजादी के बाद विकसित कस्वाई बाजार के रूपक बा। आजादी के बाद भइल विकास के स्वीकारोक्ति बा – "हमरा लइकाईं के समय पचरुखी बाजार में एको गो प्राइवेट एम.बी.बी. एस. डॉक्टर ना रहे। ..... साठ के दशक के आखिर में पहिला बेर डॉ. एस.पी.वर्मा आ डॉ. एम.एल.वर्मा दुनू

मरद–मेहरारू पचरुखी आइल रहे लोग। एगो अइसन समय रहे कि पचरुखी बाजार में एलोपैथ के कवनो दोकान ना रहे।" आज ओही पचरुखी बाजार में मेडिकल के दोकानन के गिन लिहीं। एही तरे रेडिमेड कपड़ा के दोकान, मिठाई के दोकान, राशन–खाद के दोकान, किताब–कॉपी के अनेक दोकान खुल गइल बा। रोचक ई बा जे लेखक के पचरुखी छूटल जमाना हो गइल बाय ऊ आधुनिक पचरुखी के विकास के सर्वेक्षण करत बाड़न आ सब दोकानन के प्रोपराइटर सहित उल्लेख करत बाड़न। ऊ एह विकास पर समाला. चनात्मक टिप्पणीयो दर्ज करत बाड़न – "एतना बड़हन बाजार में मूलभूत सुबहिता के नाँव पर कवनो तरे के बेवस्था नइखे। पानी पीये ...... बाजार में शौचालय के बेवस्था नइखे। ...... सभ से जादे परेशानी मेहारारुअन के बा ...... अबले कवनो सामुदायिक भवन नइखे।" एह टिप्पणी में एगो सामाजिक चिंता बा।

एह किताब में बनारस के तत्कालीन जमींदार बाबू मोतीचन्द प्रसाद गुप्त के जमींदारी के उल्लेख बा। ई उल्लेख प्रासंगिक बा काहे कि गुप्त जी के जमींदारी में पचरुखी सहित बिहार के नारायणपुर, पागुरकोठी, गोपालपुर, मलूपुर, मखनूपुर, सुपौली, जसौली, जुड़ीहाता, गहिरवाबारी गाँव समाहित रहे। गुप्त जी 'बनारस कॉटन मिल्स' (1908) के संस्थापक रहले।

पचरुखी चीनी मील के संस्मरण बहुत कारूणिक बा। 1921 में स्थापित पचरुखी चीनी मील बिहार राज्य के तिसरका चीनी मील रहे। एकर मालिक रहले देश के मशहूर वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई। ऊ निजी कारण से चीनी मील बी.पी.अग्रवाल के हाथे बेच देहले। एह चीनी मील खातिर आसपास के गाँवन के किसान ऊख के जबर्दस्त खेती करत रहे। किसानन के बढ़िया आमदनी रहे। चारो ओर व्यापारिक–औद्योगिक गतिशीलता आ रोजगार के प्रचुर अवसर रहे। 1974 में ई अफवाह फइलावल गइल जे पचरुखी चीनी मील के सरकार अधिगृहित करे वाली बिया। मील मालिक चीनी मील बन्द क देहलस। बहुत लोग के जिनिगी बरबाद हो गइल। एह अध्याय में एकर कारुणिक प्रसंग बा।

एह चर्चित किताब के पहिला संस्करण (2022) के दूगो अध्याय के नाँव दोसरका संस्करण (2024) में बदल दियाइल बा – 'बाबूजी के बुआ' वाला चौप्टर में जादे बदलाव आ संशोधन भइल बाय अब एकर शीर्षक हो गइल बा : 'इया आ उनकर सारधा बाबू'। एमे भोजपुरी के यशस्वी लेखक शारदानन्द प्रसाद (लेखक रंजन विकास के बाबूजी) के संघर्षपूर्ण मार्मिक जीवन–वृत्तांत बा।

अचरज होला जे ऊ ओह विपरीत परिस्थितियन में कइसे जिन्दा रह गइले। शारदा बाबू के जनम के छव महीना बादे उनकर शिक्षक पिता बंशीधारी प्रसाद के निधन हो गइल। बरीस भीतरहीं माई राजकुमारी देवी घर में मरल परल रहली आ अबोध शिशु शारदा बाबू मुअल मतारी के दूध पियत रहले। एह अबोध शिशु के लालन–पालन बुआ कइली। एह चौप्टर में शारदा बाबू के बुआ सूरजमुखीय वर्तमान के दरौली मिडिल स्कूल, हुसेनगंज हाई स्कूल आ मैरवा हाई स्कूलय शारदा बाबू के शिवझारी चाचीय शारदा बाबू आ स्कूली दोस्तय पी. चन्द्रविनोद, शारदा बाबू आ मोलाबी साहेबय शारदा बाबू के बुआ के साथे लेखक रंजन विकास आ उनकर भाई–बहिन, मतारी आ बड़की अम्मा के स्याह–सफेद तस्वीर बा।

दोसरका संस्करण के चौप्टर 'गौरी आ बबुआ लाल के वंशज' लेखक के आत्म–वृत्तांत के दृष्टि से उल्लेखनीय बा। गौरी रंजन विकास के पैतृक गाँव ह। ऊ जब सेयान भइले त अपना गाँव में कायस्थ परिवार के इतिहास आ ओह लोग के सामाजिक, आर्थिक आ शैक्षिक स्थिति जाने–बूझे के एगो ललक उनका भीतर जागल। एह अन्वेषण में उनका सफलता मिलल। चौप्टर में गौरी गाँव के कायस्थ वंशावली समाहित बा। गौरी गाँव के सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक इतिहास आजादी के पहिले से आजादी के बाद 1973 में नक्सल आन्दोलन तक के इबारत बा। एही कड़ी में लेखक के फुफुहर – 'मचकना' के कथा पढ़ल जा सकत बा।

भोजपुरी साहित्य के मजबूत स्तंभ पाण्डेय कपिल जी रंजन विकास के बड़का मामा रहले। ऊ बिहार सरकार के राजभाषा विभाग में सहायक निदेशक रहले। 2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना उनकर सरकारी आवास रहे। ई आवास पाण्डेय कपिल जी के जमाना में साहित्य आ संस्कृति के केन्द्र बन गइल रहे। 1973 में मैट्रिक पास कइला के बाद आगे के पढ़ाई खातिर रंजन विकास आपन मामा कपिल जी के आवास पर आ गइले। पटना के बी. एन.कालेज में उनकर नाँव लिखाइल 1973–75 सत्र में। एह आवास के बारे में लेखक के रोचक आत्म–संस्मरण बा। एह छोट आवास में लेखक के नाना–नानी (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह आ उनकर पत्नी), नाना के बहिन, बड़का मामा पाण्डेय कपिल आ मझिला मामा पाण्डेय सुरेन्द्र के परिवार, छोटका मामा पी.चन्द्रविनोद, लेखक दूनों भाई आ सुधांशु रंजन रहत रहे। सबके विस्तृत वर्णन बाय बूढ़ नाना के सहज सोभाव के रसगर वृत्तांत बाय पटना बाढ़ पर रिपोतार्ज बाय लेखक के पटना विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर कइला

के संस्मरण बाय कालेज के सहपाठी विनोद कुमार सिन्हा, गुरु प्रसाद सिंह गाँधी, श्याम विहारी सिंह, सुधीर कुमार आदि के रोचक संस्मरण बाय बाकिर ओही काल में घटित अविस्मरणीय जे.पी.आन्दोलन के उल्लेख तनी आउर विस्तार में चाहत रहे।

तेरहवाँ अध्याय '2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना के साहित्यिक माहौल' भोजपुरी साहित्य के गतिशीलता के लिहाज से उल्लेखनीय बा। कपिल जी के एह आवास पर हिन्दी–भोजपुरी साहित्य के समकालीन अगड़धत्त रचनाकार लोगन के आवाजाही बा। एगो लमहर सूची बा – आचार्य शिवपूजन सहाय (1893–1963), रामवृक्ष बेनीपुरी (1899–1968), छविनाथ पाण्डेय (1890–1986), डॉ. लक्ष्मी नारायण सुधांशु (1906–1974), रामलोचन शर्मा कंटक, ब्रजकिशोर नारायण, गीतकार रामगोपाल शर्मा 'रूद्र' (1912–1991), सत्यनारायण, गोपीवल्लभ सहाय, आलोकधन्वा, ब्रजकिशोर प्रसाद 'पंकज', प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त', महेन्द्र शास्त्री (1901–1974), भैरवनाथ पाण्डेय, डॉ. शम्भूशरण सिन्हा, अविनाश चन्द्रविद्यार्थी (1926–), नागेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो. ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द कृष्ण, जगन्नाथ जी, विवेकी राय (1924–2016), पण्डित गणेश चौबे (1912–1997), भोलानाथ गहमरी (1923–2000), डॉ. विजय बलियाटिक, डॉ. अनिल कुमार आंजनेय, गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', सूर्यदेव पाठक 'पराग', हरेन्द्र देव नारायण (1910–1984), पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय (1911–), महेश्वराचार्य, प्रो. उमाकान्त वर्मा (1928–1999), कविवर अनिरूद्ध (1928–2019), सत्यवादी छपरहिया उर्फ सत्यदेव नारायण सिन्हा, अक्षयवर दीक्षित, रघुवंश नारायण सिंह, कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन', गणेशदत्त किरण, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ. ब्रज भूषण मिश्र, डॉ. महामाया प्रसाद विनोद, डॉ. विश्वरंजन, डॉ. स्वर्ण किरण, प्राध्यापक अचल आ बरमेश्वर सिंह समेत अनेक नामचीन साहित्यकारन के चरचा बा। भोजपुरी साहित्य के इतिहास का दृष्टि से ई चौप्टर महत्वपूर्ण बा। कपिल जी के आवास 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' आ 'भोजपुरी संस्थान' के कार्यालयो रहे। ऊ मई 1980 से दिसम्बर 2001 ले 'भोजपुरी सम्मलेन पत्रिका के सम्पादक रहले। लेखक रंजन विकास ओही साहित्यिक माहौल में रह के आपन पढ़ाई कइले। साहित्यकार लोगन के सेवा–टहल आ खियावे–पियावे के मोका मिलल। अनेक साहित्यकारन के संक्षेप में साहित्यिक भूमिका के उल्लेख बा, जवना में दिवंगत रचनाकार के नाँव के साथे कोष्ठक में जनम आ मृत्यु बरीस के जानकारी देहल चाहत रहे।

लेखक मनोविज्ञान में पीएच.डी. बाड़े। ऊ अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना में शोध सहायक सह अन्वेषक के पद पर 4 जनवरी 1982 के ज्वाइन कइले रहले। होस्टल जिनिगी के रसगर वर्णन बाय होस्टल में खाना पकावेवाली बंगाली महिला माया आ नेपाली बहादुर के रोचक प्रेम कथा के वर्णन बा। शोध सहायक कृष्ण मुरारी शर्मा आ सहेन्दर सिंह के संबंध के हास्यपूर्ण चरचा बा। शर्मा जी बिछावन पर जाते नाक बजावत फोंफ काटत बाड़े। सहेन्दर सिंह के नींन में खलल पड़ता। ओकरा बाद जवन होता ऊ किताब में पढीं – मजा आई। रणविजय शाही के गारीबाजीयो के चरचा बा। 27 नवम्बर, 1984 के दिने लेखक एह संस्थान के नोकरी से इस्तीफा दे देहले। उनकर नोकरी स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार के पटना स्थित कार्यालय में मूल्यांकन सहायक के पद पर हो गइल।

दूगो आउर अध्यायन के संक्षिप्त विवेचना जरूरी बुझात बा – अध्याय 15 'नोकरी के छब्बीस बरीस – पटना' आ अध्याय 16 'नोकरी के आखिरी सात बरीस – कलकत्ता'। नोकरी के ई तैंतीस बरीस के अवधि डॉ. रंजन विकास के जिनिगी के स्वर्ण काल बा।

'नोकरी के छब्बीस बरीस – पटना' वाला अध्याय में भारत सरकार के अधीन कार्यरत स्वास्थ्य मंत्रालय आ ओकर क्षेत्रीय कार्यालय के पतनशील कार्य पद्धति के यथार्थपरक मनोवैज्ञानिक अवलोकन आ विश्लेषण बा। स्वास्थ्य कार्यक्रम सरकारी उपेक्षा आ अकर्मण्यता के शिकार बा। स्वास्थ्य कार्यक्रम के

भौतिक आ आर्थिक कार्यपद्धति के नियमित देख–भाल करे खातिर पटना के क्षेत्रीय कार्यालय में मूल्यांकन दल के अलावे आउरो कई गो यूनिट रहे। मूल्यांकन दल के कार्य क्षेत्र बिहार रहे। देश में मूल्यांकन सहायक, मूल्यांकन अधिकारी आ वरीय मूल्यांकन अधिकारी के जादेतर पद बरिसन से खाली परल रहे। एह से पटना के मूल्यांकन दल के बिहार के अलावे देश के आउरो राज्य के स्वीकृत दौरा करे के परत रहे। मूल्यांकन अधिकारी ईश्वरी प्रसाद के खानपान के आदत के बहाने विभाग के अनियमितता आ भ्रष्टाचार के दिग्दर्शन हास्य–व्यंग्य के साथे बा। सिविल सर्जन लोग दल के खूब िखया–पिया के विभाग के भष्टाचार, अनियमितता आ नैतिक पतन पर परदा डालत बा – "दिन के खान–पान के बेवस्था ओजुगिया के प्रभारी करत रहे। ...... खान–पान लमहर समय ले चलत रहे। ओमे शराब के दौर चलत रहे। मरद होखे भा मेहरारू सभका हाथ में शराब के गिलास रहत रहे। लोग मस्ती में रहत रहे (पेज 270 दोसरका संस्करण)।" ईश्वरी बाबू आ के.एन.सिंह विभाग के चरित्र के एगो नमूना बा लोग। सिंह जी के अनगिनत रोचक प्रसंग बा। पटना के एह आफिस के कई गो अधिकारियन आ कर्मचारियन के लगातार मौत के विवरण बहुते कारूणिक बा। बाकिर मृत्यु के एह असाधारण प्रकरण पर गहराई से अवलोकन चाहत रहे।

स्वास्थ्य विभाग के भ्रष्टाचार पंजाब से ले के हिमाचल प्रदेश के मंडी, कुल्लू ले फइलल बाय कतहीं कम नइखे। मनाली से मणिकर्ण के राहे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जरी के अनियमितता समग्रता में स्वास्थ्य विभाग के रूपक बा। लेखक के टिप्पणी सटीक बा – "सरकार के नीतिगत गड़बड़ी, बेतरतीब कार्य–प्रणाली आ नौकरशाही–टेक्नोक्रेट के अराजक तंत्र के बीच तरे–तरे के विभागीय योजना आ थकाऊ स्कीम के जंजाल छब्बीस बरीस से बेसिए चलल" (पृष्ठ 279 दोसरका संस्करण)।

मार्च 2011 में लेखक के ट्रांसफर पटना से कलकत्ता हो गइल। "नोकरी के आखिरी सात बरीस – कलकत्ता" वाला अध्याय के संस्मरण बहुते दिल. चस्प बा। रंजन विकास के ममेरा भाई पी. नीरजनयन ओह घरी पश्छिम बंगाल के आई.जी. रहले। उनके किहाँ लेखक अगस्त 2011 ले रहले। नीरजनयन के साथे एगो लेबराडोर कुकुर सुतत रहे। ओही बिछावन पर विकासो जी सुतत रहले। नौकरशाह के जीवन शैली के रोचक वर्णन बा। लेखक के मूल्यांकनपरक नजर हर जगह हावी बा। ऊ आपन कलकत्ता आवास के चतुर्दिक गहराई से निखेरले बाड़े, बाकिर पटना प्रवास के दौरान ऊ पटना के ओइसे नइखन निखेरत। कलकत्ता नया जगह बा। सी.जी.एच.एस. डिस्पेंसरी, बैंक, पोस्ट आफिस, बिग बाजार आ जी.डी. मार्केट बगले में बा। ओजा पानी के समस्या बा। मीठा पानी के सप्लाई उड़िया लोग करत बा। कोलकत्ता के जन–जीवन के संवेदनशील चित्रण बा, जवना में भरत पानवाला, सब्जी विक्रेता भरत के भउजाई, हरेन चाय दोकानवाला, चाय–बिसकुट–सिगरेट विक्रेता बंगाली युवा दंपती, बेगुनी–प्याजी–आलू चप बेचेवाली भद्र महिला, विकलांग बापी के मोबाइल रिचार्ज के बेवसाय, आई.सी.ब्लाक कैम्पस के मेन गेट के बहरी चउदह नंबर पानी टंकी के बगल में मछरी बाजार के कार्य–व्यापार समाहित बा। खान–पान, सोच–विचार, रहन–सहन में बांग्ला–संस्कृति आ हिन्दी संस्कृति में दिलचस्प फरक बा। लेखक के मनोवैज्ञानिक पर्यवेक्षण सटीक बा।

बंगाल के आफिस में एक दोसरा के अभिवादन के कवनो चलन नइखे। बंगाली लोग के कार्य–संस्कृति में निष्ठा नइखे। ऊ लोग समय पर आफिस ना आवे आ कार्य–समय तामझाम में बरबाद करेला। एकरा बारे में लेखकीय टिप्पणी द्रष्टव्य बा – "सभे त एगारह बजे के बाद आवेला। ...... केहू–केहू त एक बजे ले आफिस पहुँचत रहे। ...... पाँच दस मिनट ले सुस्तात रहे लोग। फेर आराम से एक गिलास जल खात रहे। ओकरा बाद पाकेट से सिगरेट भा बीड़ी निकाल के ओकरो के खात रहे (एमे छीपल चुटीला तंज के महसूस करीं)। ओह लोग के मिजाज तनी हरियर हो जाव त आलमारी से फाइल निकाल के अपना मेज पर सरिहा देत रहे, तले लंच हो जात रहे। ...... ओकरा बाद हरेन के दोकान पर चाय खाये जात रहे लोग। दू–ढाई बजे ले सभे आपन–आपन कुरसी–टेबल ध लेत रहे (पृष्ठ 282)।" बंगाली कार्य–संस्कृति के एह नमूना में कवनो अतिशयोक्ति नइखे। सरकारी दफ्तरन के अइसन यथार्थ चित्रण विरल बा।

लेखक अपना आफिस के अंतरंग दुर्दशा के नीमन वर्णन कइले बाड़े। कार्यशाला आ प्रशिक्षण खातिर कुरसी–टेबल आ कम्प्यूटर के बेवस्था ना रहे। एकरा बदे आवंटन जरूरे आवत होई। वरीय क्षेत्रीय निदेशक डॉ. मल्होत्रा आ डॉ. सत्यजीत सेन अकर्मण्यता आ भेदभाव के नमूना रहे लोग। दैनिक मजदूरी पर खटेवाला बापी आ पलास के जिनिगी के कारूणिक वर्णन बा। एगो दैनिक मजूर के मासिक दरमाहा आ अकर्मण्य वरीय क्षेत्रीय निदेशक के सैलरी में सौ गुना के अंतर बा।

सबसे दिलचस्प अराजकता, अनियमितता आ नैतिक पतन के नमूना अरुणाचल प्रदेश के

स्वास्थ्य विभाग बा। लेखक आपन सहकर्मी अतिराम राभा के साथे अरुणाचल प्रदेश के पापुम परे आ लोअर सुबांसिरी जिला के दौरा पर गइल रहले। इटानगर के एगो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के कुल आबादी आठ सौ खातिर नियमानुसार दूगो डॉक्टर के जगह पर बिना सृजित पद के एगारह गो डॉक्टर के पोस्टिंग भइल रहे। अइसहीं इटानगर के एगो स्वास्थ्य उप–केन्द्र में दूगो ए.एन.एम के जगह पर आठ गो ए.एन.एम. आ चार गो जी.एन. एम. के पोस्टिंग रहे। एह दुनू जिला के स्वास्थ्य उप–केन्द्र के अस्सी प्रतिशत ए.एन.एम. आपन पो. स्टिंग राज्य मुख्यालय इटानगर के जेनरल हॉस्पिटल में करवा लेले रहली सन। दिलचस्प त ई बा जे अरुणाचल प्रदेश के एगो नया स्वास्थ्य मंत्री एह अनियमितता के सुधारे के कोशिश कइले त उनके के हटा देहल गइल। कुबेवस्था के ई वर्णन साहसिक बा।

बंगलादेश से कोलकत्ता आइल लोग मानसिक रूप से विचलित हो गइल रहे। धरम आ भाषा के आधार पर जब नया–नया देश बनेला त बहुत बड़ संवेदनशील मामला चुनौती के रूप में जनमेला। बंगलादेशी लोगन के अपना जन्मभूमि से जबरिया विस्थापन के मानसिक असर के लेखक संवेदनशीलता के साथे मनोवैज्ञानिक अवलोकन आ विश्लेषण कइले बाड़े – "एह लोग (बंगलादेशी) के आपन घर–परिवार, हित–नाता, खेती–बारी आ रोजी–रोटी के साधन सभकुछ छोड़ के आवे के परल रहे। अइसन लोग के ना त केहू से कवनो लगाव रहे आ ना कवनो मानवीय सम्वेदना। ...... ओह लोग में मानसिक विकृति घर क गइल रहे। ... ... केहू अपने में बुदबुदात चले आ बेमतलब के मुसुकी छोड़त (पृष्ठ 291)।"

"हमार आपन गिरस्ती के सबक" अध्याय पारिवारिक–सामाजिक दृष्टि से विशेष पठनीय बा। एमे उड़ीसा राज्य के भारी इंजीनियरिंग इकाई एल.एण्ड टी. कंसबहाल वर्क्स के बारे में विशेष जानकारी बा। एह इकाई में लेखक के ससुर प्रबंधकीय पद पर रहले। एकरा में जोधपुर के यात्रा–संस्मरण बा।

"साहित्यायन से साहित्यांगन तक" अध्याय में पचरुखी जइसन जगह में साहित्यिक माहौल गढ़े में लेखक के पिता शारदानन्द प्रसाद जी के अवदान के विस्तृत जानकारी बा। 1963 में ओजा 'साहित्यायन' के गठन भइल। ओकरा बैनर तले हर महीना कम से कम दू बेर कवि–गोष्ठी के आयोजन होत रहे। शारदा बाबू के प्रयास से पचरुखी में 'साहित्य परिषद्' के गठन भइल रहे। 1973 में पचरुखी के युवा साहित्यकार लोग 'नवलेखन परिषद्' नाँव के एगो संस्था बनवले रहे। एह तरे पचरुखी के साहित्यिक इतिहास दर्ज बा, जवन बहुते प्रेरणादायक बा।

एही अध्याय में शारदानन्द प्रसाद के रचना–संसार के जिक्र बा। "भोजपुरी साहित्यांगन" ई–लाइब्रेरी के जनम के कहानी बा। एह ई–लाइब्रेरी के स्थापना के उद्देश्य भोजपुरी साहित्य के संरक्षण आ भोजपुरी प्रेमी पाठकन ले ओकरा सहज उपलब्धता बा। लेखक के बड़ भाई रंजन प्रकाश "भोजपुरी साहित्यांगन" ई–लाइब्रेरी के जनक बाड़े। एकरा के तकनीकी जामा पहिरावे में रंजन प्रकश के बड़ बेटी शालिनी प्रकाश के खूब योगदान बा। लेखक डॉ. रंजन विकास सरकारी सेवा से मुक्त भइला के बाद "भोजपुरी साहित्यांगन" ई–लाइब्रेरी के सह–संचालक बाड़न। एह वेबसाइट पर भोजपुरी साहित्य के हर अनुशासन के मोटामोटी बारह सौ किताब फ्लिप बुक का रूप में अपलोड बा, जवना के कवनो आदमी फोकट में देख–पढ़ सकत बा। ओकर पीडीएफ डाउनलोड कइल जा सकत बा।

"फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया" में एगो सामाजिक इतिहास के साथे साहित्यिक इतिहास समाहित बा। ई एगो जबर्दस्त रचनात्मक पुस्तक बा, जवन खुद आत्म–संस्मरण विधा के अतिक्रमण करत बा।

❑❑

(संदर्भ पुस्तक : "फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया" आत्म–संस्मरण, लेखक : डॉ. रंजन विकास, दोसरका संस्करण : 2024 कुल पृष्ठ : 342 मूल्य : ₹ 400] प्रकाशक : भोजपुरी साहित्यांगन चौरिटेबल ट्रस्ट, 203 विश्व शाकुंतल प्लेस, मंदिर मार्ग, शिवपुरी पश्चिमी, पटना–800023)

❍मदनजी का हाता, आरा – 802301
(9113426600)

झनकि बाजे हो: बदलत गाँवन के पीर

जितेन्द्र कुमार

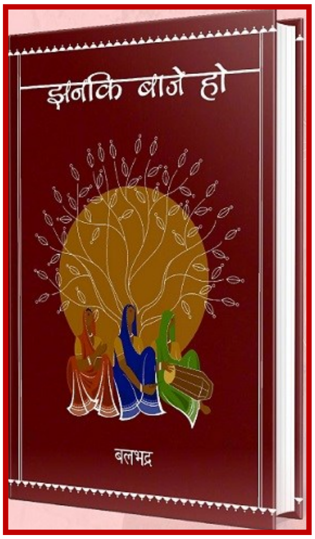

भोजपुरी में कथेतर गद्य रूप लगातार लोकप्रिय हो रहल बा।''झनकि बाजे हो''डॉ बलभद्र के 12गो कथेतर गद्य लेखन के संग्रह ह।कई गो पाठक एकनी के पढ़ि के ललित निबंध भा रम्य रचना भी कहले बाड़े।ललित निबंध के शिल्प –संवेदना –विषय के दिसाईं जवन बुनियादी शर्त होला –––आत्मपरकता, वैयक्तिकता,विषय प्रधानता –ओसभन के भी मजीगर निर्वाह विवेच्य संकलन के कुल्हि निबंधन में भइल बा।

डॉ बलभद्र के वैयक्तिक चेतना में किसान –चेतना आ जीवन शैली प्रखर रूप से दीप्त बा।उनुकर कृषि –संस्कृति के नाभिक श्रम –संस्कृति ह जवन अपना अर्थाभावो में प्रेम,वात्सल्य, आत्मीयता, सामूहिकता के भावन से आलोकित बा।उनुकर अनुभव –संसार कृषि –संस्कृति के संवेदनात्मक ज्ञान –संपदा से संपृक्त बा।आजादी के बाद विकास के मॉडल में उद्योग पर आधारित शहरीकरण के प्राथ. मिकता रहल बा।गाँवन पर शहरी संस्कृति के रूख आक्रामक बा। ग्रामीण संस्कृति अनपेक्षित संक्रामक बदलाव के दबाव में आंतरिक पीर से छटपटा रहल बा।संकलन के बारहो निबंधन के मूल स्वर इहे बा।

''समय के साँचा में'' एगो उल्लेखनीय कथेतर गद्य के बानगी बा।ई बलिया से प्रकाशित 'भोजपुरी विकास चेतना 'के 10—24अगस्त,2000अंक में छपल रहे।एह में कृषि श्रम सौंदर्य के नमूना देखीं आ ओकर पीर देखीं।एगो कटनिहारिन आपन गदेला के पलहारी प सुता के ताबड़तोड़ हँसुआ चला रहल बिया। परिवेश के ऐंद्रिक चित्रण में वात्सल्य के पुकार बा।हँसुआ चलावत मन में सपना संकल्प बा ––अबकी बाजार में गदेलवा खातिर हलुक –पातर एगो बहतर ऊ जरूर कीनी।ऊ सहयोगी कटनिहारिन से इनरा आवास जोजना में पसरल भ्रष्टाचार,घुसखोरी,दलाली के पर्दाफाश करत बिया।अबकी ऊ लूट –झूठ के प्रतिरोध करी।महँगाई के चरचा करत ओकर आँख लोरा जाता।गांव के नया यथार्थ के संवेदनात्मक चित्रण के साथे प्रतिरोध के एगो विचार के निदर्शन बा।

ललित –निबंध के आस्वाद परक गद्य रचना ''बाकी चइत के झकोर जनि माँगे'' समकालीन भोजपुरी साहित्य के जून,1998अंक में छपल रहे। भोजपुरी लोक–संस्कृति में फगुआ आ चइता सामू. हिक संस्कृति के असंदिग्ध प्रमाण बा।लोक जीवन में अभाव –सभाव,राग –विराग,शोषण –प्रतिरोध, मान –अपमान के बीच फगुआ आ चइता एगो बदलाव ले आवेला।साल के अंतिम महीना फागुन साइत संगोरत,छींटत –बांटत,कपारे चढ़त,नाचत –गावत बीत जाला।बिना मनोरंजन के जिनगी ना चले।ई पुरनका का विदा करेला आ नयका खातिर जमीन तइयार करेला।एह निबंध में लेखक मौसम के बदलाव के आदमी के मन –मिजाज पर परत रोमांटिक बदलाव के लय के सटीक काव्यात्मक व्यंजना कइले बाड़न।निबंध में मनोरम चइता गीतन के मनभावन उद्धवरण के प्रस्तुति साथे ओकर सटीक मीमांसा कइले बाड़न।अंत में वर्तमान यथार्थ का ओर साफ –साफ संकेत बा कि आजुकाल्ह एकर रूप बदल गइल बा।सिस्टम में बदलाव आवेला त गीतो –गवनई के शिल्प आ अंतर्वस्तु बदल जाला।एह बदलाव के रोकल नामुमकिन बा।निबंध के वैयक्तिकता के कतहीं क्षरण नइखे होत आ लोकरंजन तत्व के प्रमुखता आद्योपांत बनल रहता।एकरा में जबर्दस्त पाठकीयता बा।

''झनक बाजे हो धनि खेते –खेते चुरिया'''समकालीन भोजपुरी साहित्य 'के जनवरी –मार्च,1993अंक में छपल समीक्षात्मक निबंध बा। ग्रामीण निम्न वर्गीय समाज में नारी विरह वेदना से त्रस्त बिया।बारह बरिस से ओकर पति परदेश कमाये गइल बा।घर वापसी के लम्मा इंतजार बा।तबो दाम्पत्य –सूत्र अक्षुण्ण बा।निबंध में जीवन प्रसंगन के परिप्रेक्ष्य में सुख –दु:ख,मेहनत –मशक्कत,हंसी –मजाक,नोक –झोंक के संदर्भन में मार्मिक,शृंगारिक, कारुणिक गीत बाड़ सँ।एह सभन के बीचे आस –विश्वास,हास –परिहास आ अदम्य जिजीविषा के बिम्बात्मक व्यंजना बा।निबंध के सटीक समाहार बा कि ''इहाँ असली दरद अभाव के बायगरीबी के बायरोजी –रोजगार के कमी के बा।''एह निबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथन के सूची अपेक्षित लागता कि उद्धृत लोक गीतन के

सोत का बा।

''एकहवा'''भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 'केफरवरी–मार्च,2008अंकमें छपल रहे।लेखक के गाँव जोगीवीर आ बगही के ठीक बीचोबीच आम के एगो अलबेला छतनार पेंड़ रहे।ऊ गांव –जवार के जिनिगीये में ना बलुक पशु –पछीन के जिनगी में भी शामिल रहे।ऊ पर्यावरण संरक्षण के अपरिहार्य हिस्सा रहे। बाजार के दबाव में अचानक ओकर अस्तित्व मिट गइल।एकहवा के विनाश आत्मघाती विकास मॉडल के रूपक बा। देश के दशा बदले आ सुधरे के जगह करमोकरन बिगड़ गइल। हत्या,लूट,अपहरण,घपला,घोटाला, जनसंहार,जात –पाँत,दंगा –फसाद, महंगाई, बेरोजगारी सब बढ़न्ती प बा।''एकहवा के ब्याज से लेखक सिस्टम के बहुआयामी पतन के रूपक रचले बाड़न।

''कॉलेज में तोंत ''सन् 2005में लिखल आ 'भोजपुरी साहित्य सरिता 'के अप्रैल,2021अंकमें छपल ह।श्रीरामकृष्ण महिला कॉलेज, गिरीडीह के परिसर में स्थित खूंगाह तोंत से लेके खेत के गहुम के खूंटी तक के वर्णन के लालित्य आस्वादपरक बा।

कथेतर गद्य ''लेवा''भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के सितंबर –अक्टूबर अंक में छपल रहे।अमीर आदमी खातिर लेवा एगो तुच्छ ओढ़ना –बिछावना ह,जेकर उपयोग –सदुपयोग निम्नवर्गीय गरीब परिवारन में होला।कुछ मध्यवर्गीय किसान परिवारो में भी एकर पहुंच बा।ई किसाने परिवार के घरेलू हस्तशिल्प के उत्पाद ह।निबंध में एकर निर्माण प्रक्रिया के आत्मीय वर्णन बा। लेवा कृषक जीवन के रहन –सहन, आर्थिक –सांस्कृतिक स्तर के भेद बे पूछले खोलत चल जा रहल बा। लेवा के मार्फत व्यापारी गांव तक चलि जाता।लेवा सीये के एगो हुनर बायएह ग्रामीण हुनर पर बाजार कब्जा जमा लिहलसि।एह निबंध में भाव के संगे एगो विचार शृंखला पेहम बायतबे लेवा के निर्माण प्रक्रिया गांव से उठि के शहर के बाजार में चलि जात.।।''पुरान साड़ी आ दू अढ़ाई सै रोपया लेके शहर बाजार में, लेवा त ना,बाकी लेवे जइसन चीज सीये के कारोबार शुरू बा।बस एह में फोम रहेला पतराह।एकदम बीच में।सिआई –फराई,काट –डिजाईन एकदम लेवा अस।.....। बड़े–बड़े सेठ लोग बनवा के बेंच रहल बा । गांव आ गरीब के कला से बिना रॉयल्टी दिहले पइसा पीट रहल बा।बाजार गांव के आत्मनिर्भरता छीन रहल बायऊ गांव के हुनर छीन रहल बा।

कथेतर गद्य''ढूँढ़न हम आइबि ''भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के जुलाई –सितंबर,2015अंक में छपल रहे।जइसे –जइसे पूंजीवाद अपना विकास के सीढ़ी पर चढ़ल जाता ओइसे –ओइसे संयुक्त परिवार नाभिकीय परिवार में टूटत जाता। पूंजीवाद के आत्मकेंद्रित जीवन शैली में बूढ़ मतारी –बाप के कवनो जगहे नइखे। विवेच्य कथेतर गद्य में पूंजी द्वारा रचित संकुचित संवेदना के प्रत्याख्यान रचाइल बा।एह में यथार्थ के उद्घाटन बा।लेखक अपना बूढ़ मरन्नासन ईया के टूटत सांस के ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर से सम्हरले बाड़न।घर के संस्कार अइसन बनल बनावल बा कि उनुकर लइको फइका बूढ़ी आजी के अकेल नइखन सं छोड़तयऊ ईया से लागल –लपटाइल रहत बाड़े सँयकवनो आजी से गीत गावे के कहत बा। अद्भुत जियतार जीवन प्रसंग बा।अनुपमेय।भावना के साथे एगो जबर्दस्त विचार पक्ष बा लोकगीत ''ढूंढ़न हम आइबि''के शिल्प संवेदना में।एकर अंतर्वस्तुओ ओइसहीं बा। ''टभकल से टुभुकल ले''विवेच्य संग्रह के पहिला निबंध ह।ई 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 'के सितंबर,1997अंक में छपल रहे।बेटा जनमल बा।ओकरे जन्मोत्सव मनावल जाता।सोहर गावे खातिर गांव घर,टोला –पड़ोसा के लइकी –जवान –जवान –बूढ़ मेहरारू कुल्हि अंगना में जुटल बाड़ी सँ।एगो पुरान फुटल ढोलो के जोगाड़ हो गइल बा।सभके स्वागत सत्कार खातिर यथाशक्ति इंतजाम बा।आधी दुनिया के नीमन जुटान बा।संख्या –बल से ताकत के एहसास होला। अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता बा कुछ पल घरी खातिर। मेहरारू लोग निजी पीर भुला गइल बा।लेखकीय पर्यवेक्षण में सूक्ष्म नजरिया बा।एगो सांकेतिकता बा।संघे बल मिलेला।मुक्ति आ सृजनोत्सव के स्वर गूंजत.।।एकरा के पढ़त खानी फणीश्वरनाथ रेणु के प्रसिद्ध रिपोर्ताज ''विदापत नाच''इयाद आवता।. इहे एकर मजगूत रचनात्मक पक्ष बाय ग्रामीण संस्कृति के एगो झलक।

''बिरह से जिरह में''बनारस से प्रकाशित स्मारिका ''बरुणा –2006''में छपल रहे।स्त्री –विमर्श के एह जुग में ''भोजपुरी के कुछ कवि आ कहानीकार लोग''के पढ़ि के हरानी होला जेकरा कविता –कहानी में आजो कोइल –काग आ हाय –हूक के पुरनके राग अलापत जा रहल बा।जिनगी के नया यथार्थ के प्रति कवनो संवेदना नइखे। मेहरारू ओह लोग का नजर में बिरहे में बाड़ी सँ,ऊ जिरह के कवनो पोजिसन

लेखक के मीमांसा में कुछ महिलो लेखक निशाना पर बाड़ी जे तथाकथित संस्कार के देहरी पार कइल नारी के अपमान मान रहल बाड़ी। दरअसल ऊ संस्कार के नांव पर स्त्री के अधिकार से बंचित राखल चाहत बाड़ी।लेख में एगो आधुनिक वैचारिक विमर्श के स्पेस बा।एह में नारी स्वाधीनता पर विचारोत्तेजक सवाल बा।एहिजा हम अतने हस्तक्षेप कर सकीला कि लेखक डॉ बलभद्र के सिद्धांत आ व्यवहार में इचिको फर्क नइ खे।सामंती माइंडसेट के गीतकार लोग नवगीत लिखे लिखे लागलय काव्यरूप बदल गइल,गीत के काव्यवस्तु ऊहे रहि गइल।त ऊ नवगीत कइसे भइल।एह परिप्रेक्ष्य में एगो पारंपरिक लोकगीत ——''काँचहिं निनिया बाबा बिदइया कइले हो''के शानदार मीमांसा आधुनिक दृष्टि से लेखक कइले बाड़ें।ओसहीं एगो आऊ लोकगीत बा ——''आग लेवे गइलीं सिरिस तर माई....'' ।के मीमांसा पढ़े लायक बा। छीजत सामूहिक ग्रामीण संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ''ताल टूटे ना!''एगो विचारोत्तेजक विचारात्मक निबंध बा।गाँव आपन जरूरत,ताव,ताल आ तास समझेला।ताव आ तास अभाव के जमीन पर जादे सरसेला।शहर आ गांव के श्रम शक्तियन के बीच एका के वस्तुगत आधार तइयार हो रहल बा।एह एका के रऊंदे के परपंच रच के एह समाज के धधकत आग के बुझावे के पुरजोर कोशिश में शासन आ प्रशासन के आपन भलाई लउकत बा।गांव के आर्थिक सोत,साधन —संसाधन नष्ट क के,ओकरा के शहर देने ताके प मजबूर क देल गइल बा।निबंध में एह प्रतिपादन के गंभीर विवेचना बा।ई निबंध जनवरी,1998में 'बटोहिया'में छपल रहे।

कथेतर गद्य ''अँटका में परल बसन्त'''भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 'के मार्च—अप्रैल,2011अंक में छपल रहे।मात्र 1158शब्दन के ई एगो जबर्दस्त रोचक निबंध बा।गाँव के खेतन में बसन्त आ गइल बा।बसन्त के ई नजारा लेखक आपना आंखिन से देखत बा:''कतने जौ —गहुम में बाल निकलि आइल बा।माथ ऊँच कइले सोझ,कतनन में अबहीं बाल झाँक रहल बा।.... ।सरसों झार के फुला गइल बा।हवा मद्धिम —मद्धिम चल रहल बिया।झूम रहल बा सरसों।गहुम —जौ डोल रहल बा।तीसी दोम रहल बा।''अद्भुत काव्यात्मक चित्रण बा।बाकी लेखक आउर नगीच जा के यथार्थ के दर्शन कइल चाहत बा।''बहुत कुछ बा जगत में जे बे नगीच गइले ना लउकी ''।बधार अतना रंगीन लउकता दूर से तबो लेखक के मन उदास बा। प्राकृतिक सौंदर्य साथे ओकर मानसिक साधारणीकरण नइखे हो पावत।काहें?मनोज तिवारी के कैसेट्स बाजता।बाहर से खुशी गांव में ठेलल जाता,बाकी तबो सगरी गांव गली उदास बा।आंतरिक प्रसन्नता नइखे त बाहरी गीत सुनि के मन ना हुलसी।गाँव प बेरोजगारी,महँगाई, भ्रष्टाचार, तिकड़मबाजी के मार पर रहल बा।खेती के मशीनीकरण हो गइल बा।बैलन के खूँटा उदास बा।टी वी चौनल गाँव—गाँव में फूहर वसन्त,भड़ुआ वसन्त,दलाल वसन्त के प्रचार —प्रसार कर रहल बा।गाँवन में उदासी तारी बा।

मात्र 863शब्दन के एगो छोट भावात्मक कथेतर गद्य बा:''पीर हउवे जहँवा के पहचान''।ई निबंध ''पाती''पत्रिका के दिसंबर,2000अंक में छपल रहे।एह भावात्मक निबंध के कुल्हि शब्द विचार के एगो धागा में गँथाइल बाड़सँ।निबंध छपल ओह साल भारत आजादी के 54वाँ सालगिरह मनवले रहे।विकास के डंका ओहूघरी खूब पी. टाइल रहे।बाकी गाँव के पहचान पीरे रहे।गाँव दुःख से ना उबरल।''जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव आइल।रहन —सहन,सोच —विचार बदलल।खेतियो बारी एह बदलाव से अछूता ना रहल।केहू खातिर ई सकारात्मक रहल,केहू खातिर नकारात्मक।ना पहिले वाला धान रहल,ना पहिले वाला किसान।बाकी एगो चीज ना बदलल:सीमांत आ भूमिहीन किसान आ मजूर के माली हालत ना बदलल।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कथन बा:''यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है (पृष्ठ 360 हिंदी साहित्य का इतिहास)।''कथेतर गद्य संकलन''झनकि बाजे हो '', के लेखक डॉ बलभद्र के गद्य में धीर —गंभीर नदी के प्रवाह के सांगीतिक मस्ती बा।''लइकिन के मन के भीतर बहुत कुछ बा अइसन जवना के लेके कहल जा सकेला कि ऊ ऊपर —ऊपर से बेसी भीतर —भीतर मन बसेला,मुक्ति ओहनियो के एगो आपन जरूरत ह। प्रेम एहिजा सातो सुर में लहर मारेला।सातो सुर में लहरत ऊ प्रेम ह जेकरा चलते बेटी जोगी के सूरत प ना,ओकर बंसी के धुन प मोहित हो जाले।''लेखक से भोजपुरी साहित्य के आउर अइसन कथेतर गद्य के उम्मीद बा।

❑❑

किताब के नांवःझनकि बाजे हो
लेखक : डॉ बलभद्र
प्रकाशकःसर्व भाषा ट्रस्ट
जे ——49 स्ट्रीट नं —38
राजापुरी,मेन रोड, उत्तम नगर,
नई दिल्ली ——110059
मो नं 918178695606

❍ **आरा, बिहार**

भोजपुरी कविता के विकास–यात्रा के पड़ताल करे वाला ग्रंथ 'भोजपुरी कविता के इतिहास'

विष्णुदेव तिवारी

'भोजपुरी कविता के इतिहास' डा ब्रजभूषण मिश्र के शोध–ग्रंथ ह जे २०२४ में मैथि. ली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित भइल रहे। एह ग्रंथ के विशेषता के बारे में बात करत अकादमी के सचिव डा अरुण कुमार झा लिखत बाड़े कि–'हमरा समझ से भोजपुरी साहित्य के इतिहास जे अब तक लिखाइल बा, ओह सब के ग्रहण करे योग सामग्रियन के समेटत आ ओह सब के त्रुटियन के छोड़त एह इतिहास के अद्यतन करे के सफल कोशिश मिश्र जी कइले बानीं।'

नव अध्याय आ 468 पृष्ठ में फइलल एह ग्रंथ में भोजपुरी कविता के उत्पत्ति से लेके आज तक के इतिहास क्रमवार दर्ज बा।

इतिहास का ह? इतिहास दर्शन के मतलब का होला? भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखन के समस्या का बाड़ी स? भोजपुरी में इतिहास–लेखन के परंपरा का रहल बा? भोजपुरी काव्य के इतिहास के काल–विभाजन आ नामकरण के परंपरा का रहल बा?–– एह सब आवश्यक विषयन पर विवेक सम्मत ढंग से विचार करत इतिहास–लेखक कई–कई अन्य विद्वान लेखकनों के विचारन के उद्धृत करत बा, जे ओकरा गहिर अध्ययन, मनन आ अनुशीलन के परतोख बा।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, पं गणेश चौबे, डा कृष्णदेव उपाध्याय, डा रिपुसूदन श्रीवास्तव, रासबिहारी पाण्डेय, डा रामाशीष प्रसाद, डा तैयब हुसैन 'पीड़ित', राजेश्वरी शांडिल्य आ नागेन्द्र प्रसाद सिंह जइसन विद्वानन के काल विभाजन के ऊपर बात करत डा मिश्र भोजपुरी कविता के जवन काल विभाजन करत बाड़े ऊ एहतरी बा–

1. सिद्ध आ नाथ काल– 700 ई से 1100 ई
२. लोकगाथा–लोकगीत काल–1100 ई से 1400 ई
३. आध्यात्मिक काल– 1401 ई से 1900 ई
४. देशभक्ति काल– 1901 ई से 1947 ई
५. रचनात्मक आंदोलन काल भा भाषायी जागरण काल –1948 ई से 1977 ई
6. विकास काल– 1978 ई से 2000 ई तक
७. समकालीन काल या विस्तार काल– 2001 ई से चल रहल बा।

भोजपुरी कविता के प्रारंभ बतावे के क्रम में डा मिश्र सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में रहल सम्राट हर्षवर्धन के काल तक जा तारे आ उनका समका. लीन महाकवि बाणभट्ट के 'हर्षचरित' में लिखल गइल दू कवियन ईसानचंद्र आ बेनी भारत के नाँव ले तारे जे भोजपुरी में कविता करत रहले। डा मिश्र के कहनाम बा कि 'हर्षचरित' के अनुसार ई दूनों कवि लोग संस्कृत आ प्राकृत से हट के ओह समय के गँवई बोली में कविता करत रहे। ई गँवई बोली भोजपुरिए होई काहें से कि ईसानचंद्र के गाँव बिहार राज्य के शाहाबाद जिला के पीरो भा पिअरो रहे, जे भोजपुरी क्षेत्र ह। ओह घरी एह क्षेत्र के 'प्रीतिकूट' कहल जात रहे।

एह तरह से 'भोजपुरी कविता के इतिहास' के पहिला अध्याय 'पूर्व पीठिका' समाप्त होता बा।

ग्रंथ के बाकी अध्यायन में काल विभाजन वाला क्रम के अनुसार भोजपुरी के कवि आ उनकरा काव्य के बारे में बात कइल गइल बा। एगो अध्याय कई उपशीर्सकन में बाँटल गइल बा। उदाहरण खातिर पाँचवा अध्याय–'देशभक्ति काल' के लिहल जा सकता बा जेकरा भीतर ई सब उपशीर्षक बाड़न–'उद्देश्य', 'पृष्ठभूमि', 'राजनीतिक हालत', 'आर्थिक हालत', 'सामाजिक हालत', 'धार्मिक सांस्कृतिक स्थिति', 'साहित्यिक स्थिति', 'राष्ट्रीय धारा के प्रमुख कवि आ कविता', 'भोजपुरी लोकगीतन में देश–भगती', 'समाज–सुधार, दलित विमर्श आ नारी विमर्श के कवि आ उनकर काव्य', 'पूर्ववर्ती धारा के विकास' आ 'सारांश'।

पाँचवाँ अध्याय के उपशीर्षक 'पृष्ठभूमि' में राष्ट्र के स्वरूप के स्पष्ट करे के क्रम में डा मिश्र डा सुनील कुमार पाठक के शोध–ग्रंथ 'छवि और छाप'(राष्ट्रीयता के आलोक में भोजपुरी कविता का पाठ) से कथन उद्धृत करत बाड़े– "…. विभिन्न विद्वानों ने राष्ट्र के लिए कुछ सत्ताओं (विशेषताओं) की अनिवार्यता मानी है, जैसे देश सम्बन्धी एकता, धर्म की एकता, वर्ग की एकता तथा ऐतिहासिक पूर्वजों के प्रति गौरव की एकता।

स्वरूप भी संकुचित या विस्तृत होता है।"

एह अध्याय के उपशीर्षक 'राष्ट्रीय धारा के प्रमुख कवि आ कविता' में नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह 'ईश', शिवशरण पाठक, मदन मोहन सिंह, रघुवीर नारायण, मनोरंजन सिंह, गुंजेश्वरी मिश्र 'सुजस', छांगुर त्रिपाठी 'जीवन', सुंदर (कजरी गायिका), शायर मार्कंडेय, चंचरीक, सरदार हरिहर सिंह, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, राम विचार पाण्डेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, दूधनाथ सिंह आदि कवि लोग के जीवन आ उनकरा कवितन के उदाहरण दिहल गइल बा। अइसहीं 'समाज सुधार, दलित विमर्श आ नारी विमर्श के कवि आ उनकर काव्य' उपशीर्षक के अंतर्गत हीरा डोम, भिखारी ठाकुर, बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'ढीबरी लाल', महेंद्र शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, विश्वनाथ प्रसाद शैदा आ रसूल मियां के जीवन-वृत्त आ कविता रखल गइल बा। महेन्द्र मिश्र, श्याम बिहारी तिवारी देहाती, लक्ष्मण शुक्ल 'मादक', बिसराम, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' जइसन लोग 'अन्य तरह के कवि आ उनकर काव्य' उपशीर्षक के अंतर्गत रखल गइल बाड़े।

द्रष्टव्य बा कि दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह अपना ग्रंथ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में जे काल विभाजन कइले बाड़े ओह में सन् 1900 ई से 1950 ई तक के समय के आधुनिक काल(जेकर दोसर नाँव राष्ट्रीय काल आ विकास काल बा) कहल गइल बा आ एह अवधि में जवन कवि लोग भइल बाड़े ओह में ढेर जाना शृंगारोपरक कविता लिखले बा लोग। डा मिश्र के इतिहास ग्रंथ में एह काल के कई महत्वपूर्ण कवि लोग के नाँव नइखे आ पावल जे दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के इतिहास ग्रंथ में प्रमुखता से आइल बा। डा मिश्र एह बात के जानते बाड़े, एकर पता उनका 10/04/ 2025 के लिखल एगो फेस बुक पोस्ट से चलत बा। डा मिश्र के कहनाम बा कि– "कवनो भाषा का साहित्य के इतिहास ओकरा कविता के इतिहास के आधार पर लिखाला। जहाँ तक भोजपुरी भाषा का साहित्य के इतिहास के सवाल बा , बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ के 'भोजपुरी के कवि और काव्य' खोज पूर्ण बा ।अपना दम भर सामग्री उहाँ का जुटवले बानी । सबसे बेसी उहाँ के मेहनत संत कवियन के बाद जवन श्रृंगारिक आ राष्ट्रप्रेम के कवियन के आ उनका कवितन के खोज बा , में लखार बा । एक से एक कवि आ कविता। अइसन कवियन में बीसू, महादेव, खलील, अब्दुल हबीब, बच्ची लाल, लालमणि, बिहारी, भैरो, ललर सिंह, रूपन, कैद, रसिक किशोरी आदि के नाम शामिल बा । परवर्ती इतिहास लेखक लोग एह में चूक कइले बा । हमहूँ समय सीमा आ ग्रंथ का आयतन के धेयान राखत चाह के भी अइसन कई लोग के छोड़ देले बानी । बाकिर अइसन भुलाइल बिसरल लोग पर लिखहीं के पड़ी । हम लिखब आ छूटल लोग पर लिखब।"

ग्रंथ के छठवाँ, सतवाँ आ अठवाँ अध्याय सुराज मिलला के बाद के कवि आ उनकरा कविता के लेके लिखाइल बा आ मजगर लिखाइल बा। डा मिश्र के कोशिश रहल बा कि हर ओह कवि के, जेकरा रचना से भोजपुरी साहित्य के कुछुओ हित सध रहल बा, अपना ग्रंथ में स्थ. ान दिंल जाउ। ई सद्भाव सामान्य इतिहास रचयिता खातिर ठीक बा। डा मिश्र के इतिहास सामान्य इतिहास ना ह, एह से एह में कुछ कवियन के उपस्थिति खटक सकत बा। अइसहीं, कुछ नीक-नीक कवियन के जवन कविता उद्धृत कइल गइल बा ऊ सामान्य कोटि के बा, ईहो बात खटक सकत बा।

विकास काल (1977–2000) के उपशीर्षक 'नवकी कविता' पर बात करत डा मिश्र लिखत बाड़े– "एह काल में नया-नया बोध आ सोच के कवितो खूब उजिआइल आ ओकरा विकास में पुस्तक प्रकाशन आ पत्रिका सब के योगदान रहल। शशिभूषण लाल के 'कुछ खास किसिम के आवाज' एह कालावधि के सबसे पहिला नवबोधी काव्य संग्रह रहे। छंद से छुटकारा आ बौद्धिकता के बात। दूसर संग्रह सम्पादित रहे 'आगे-आगे' जवना में लगभग अठारह कवियन के मुक्तछन्द के कविता रहे आ सोच आ शैली से ई सब कवि मुक्तछन्दी नवबोधी कविता के धारा के पोढ़ बनवलें। बहुत कवि लोग अपना-अपना कविता संग्रह में गीत-गजल के साथ मुक्तछन्द के कवितन के जगह दिहले रहलें। महेन्द्र गोस्वामी के 'एगो मेहरारू' आ प्रकाश उदय के 'बेटी मरे त मरे कुंवार' पूरा क पूरा मुक्तछन्द में रहे, बाकिर लयात्मक रहे।"

जइसन पहिले से चलत आइल बा, एहू इतिहास ग्रंथ में पहिले कवि लोग के बारे में एगो परिचयात्मक टिप्पणी बा आ तब उनकरा एगो अथवा एगो से अधिका कविता के उदाहरण। कवि लोग के परिचय में यथावश्यक किफायत से काम लिहल गइल बा।

डा ब्रजभूषण मिश्र के 'भोजपुरी कविता के इतिहास' विशुद्ध रूप से कृतिकार के अपना श्रम आ मेधा के फल ह। डा अर्जुन तिवारी भी 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' लिखले बाड़े। बड़हन कलेवर में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से छपल ई इतिहास भानुमती के पेटाही ह, जेकरा में पन्ना के पन्ना आनै के रचना से उड़ावल गइल बा। एगो अन्य इतिहास डा

कृष्णदेव उपाध्याय के बा जे इतिहास त ह, बाकिर ओमे विचार तनिक बेसी बा, व्यवहार तनिक कम। रास बिहारी पाण्डेय के 'भोजपुरी भाषा के इतिहास' जइसन कि एकरा नाँवें से जनात बा, भाषा के इतिहास ह, साहित्य के ना। नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ डा तैयब हुसैन 'पीड़ित'अपना इतिहास– पुस्त. कन में, कथ्य के लेहाजे समदर्शी नइखन रह सकल लोग। 'पीड़ित' के इतिहास–पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा' (2004) 47 पृष्ठन में भोजपुरी साहित्य के प्रमुख विधा सब के ऊपर लिखल गइल तत्कालीन आलेखन के एगो संग्रह ह जेमें कविता के इतिहास (भोजपुरी काव्य: उद्‌भव आ विकास) पर मात्र सात पृष्ठ (12 से 18) बा। अइसन आलेख भोजपुरी साहित्य–लेखन में थोक के भाव से लिखल गइल बाड़े।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के कालजयी इतिहास ग्रंथ 1958 में छपल रहे। बाद के इतिहास–लेखक लोग अपना समय के साथ चलत अपना समझ आ दृष्टि के सहारे इतिहास–लेखन कइल। डा मिश्र के इतिहास में प्राय: 2019 के पहिले के सामग्री शामिल बा। कुछ लोगन के एह ग्रंथ में एके बतिया के दोहराव आ दोसरा के कहलका के उद्धरण के बहुलता से अनस बर सकत बा। सभ्य, सुशिक्षित आ वैज्ञानिक विवेक से भरल लोगन के समाज से लगाइत एगो जिज्ञासु पाठक तक एके तहेदिल से पसन करिहें, एमें संदेह करे के कवनों गुंजाइश नइखे जनात।

❑❑

❍ बक्सर,बिहार

डॉ सुशीला ओझा

छौंकल गमगमात कथानक हव रेडलाइट

रेडलाईट भोजपुरी द्वादस वन ह वृन्दावन के जहाँ किसुन के होठ वा पर चढ़के बाँस के एगो बिना गाठ के हरिहर कमनीय बाँसुरी रास लीला के सिरजन करतिया, परेम के गीत गावतिया अपना माटी में सरदामृत में नाच तिया, भीजतिया परमा नंद के अनूभूति करावतिया।

इ भोजपुरी माई होठ के सहज, सरल बाँसुरी की मीठ बोल हई। माई के आँचरा में छुपके जौन छाती के अमरित पिए के आनंद बा। उ एही भाखा के रस में नहाला से मिलेला। दिल दिमाग ईहे माई पोख्ता करेली।

केशव भारद्वाज जी के'' रेड लाईट''किताबिया के नाम सुनी के हम अचकचा गइनी। रेडलाईट मानो रंडी महाला। माने मन मे उत्सुकता जागल एगो विदेस में आफसर रहल लइका भोजपुरी के अपना लेखनी में महत्व देले बाड़े ई बड़ा लमहर बात बा। एगो आफसर अफ्रीका में रहतारे आ आपना माटी के मिठास ओकरा खुसबू में कइसन लपटाइल बाड़े। किताब के पढ़ला से देस बिदेस के बहुत जानकारी मिलल। आ पढ़नी त जेहन में आइल इ रेडलाईट अफ्रीका के चौराहा के कहानी ह। आजकल त एगो मजदूरी करे गाँव के लइका जा तारे सन ओकनी के आपना के बिहारी कहे में बड़ा सरम लागेला। आ ओह पर हई भोजपुरी त निपट गँवारु भासा ह। आपना घर में लइकन के अँगरेजी भासा सिखावतारे सन। अँगरेजी पढ़के लोग साहेब बनेला। एको आछर ना जाने वाली काकी कहतारी''हैपी बर्थ डे'' भले हयपी बरदे टी यु '' कहाला ओकर अर्थ केहु के नइखे बुझात सबका अँखिया पर विदेसिए चस्मा चढ़ल बा '' सुभ जन्मदिन, सुभ होरी, सुभ दसहरा गाँव के पिछवारी हगुअइनी बेलज के गछिया से से अँकवार लेता। हमार केशव बबुआ त साहेब बनके भोजपुरी के मिठास में जीभिया लटपटा गइल बिया।

परेम ना भासा जानेला ना आपन अवकात जानेला। परेम त बस गंगाजी के पनिया ह सबके हियरा के धोवत माजत रहेला। केशव जी त मैथली भासा के संस्कार में पलल बानी। मैथिलियों में गजब के मिठास बा। ओहिसे नु विद्यापति कहनी "देसिल बयना सब जन मीठा " आपन तुलसी बाबा अवधी में रामायन लिखनी दुनिया में उनका नाम के डंका बाजता। इ ही हमनी लोगन के भासा के परभाव कंठ के पियुस धार ह जेकरा में जीवन नहाला।

हत देखिना इ रेडलाईट में लइकी के परेम आपन सब टोकरी के आम लेखक के दे देतिया। केतना परेम से भरल बा ओकर जियरा। दुनो ओर परेम के सिंधु जवार भर भर के हियरा के ध्ाोवता। ए गो छोट आँखिन में प्रेम छलछलाता उत कृष्ण के प्रेम हो जाता , विरनदावन के गोपियन राधा के परेम किसुन के परेम में पगली दीवानी। एक दिन ना देखला पर दुनु ओर बेचौनी बढ़ जाता। ट्रैफिक जाम भइला से आँ ख में परेम के अजगुत भुख पियास बा। परेम के दुनु ओर बड़ा तड़प रहे। आम के सउसे टोकरी केहु ना लेत रहें। पहिले त ओकरा बड़ी अजगुत लागल। बड़ा मन में संतोख भइल। एगो त ओकरा दिन भर बइठे के परत रहे। आ इहाँ साहब केतना भल बानी। लेखक ओकरा से कवनो बारगेनिंग ना करस। उ आपना मन के बात बड़ी सहजता से कह दीहलस"रउवाँ बड़ी भल हईं हमरा के आपना देस ले चली "कातना समरपन के भाव बा। एतना बड़का आफिसर के एगो आम बेचे वाली के परेम में उपर से नीचेले आ भीतर ले भीज गइनी। आ परेम के सुगंध से हियरा महमहा गइल। ऊहाँ के दोसर कहानी बा "खेलौना" खेलौना के चरित्र के केतना सुनर ढंग से सबद में गुथल बा अपने आप में एगो लमहर बात बा। खे लौना जरिए से दरबार में रहलन काम कम करस माने मालिक पर गजब के सरधा विसवास रहे। मालिक के दुख सुख के साथी खेलौना में कातना अपनत्व रहे, कातना सहजता, सरलता रहे। सबद में बान्हे के केकरा लगे सक्ति बा? आ उहे, एक बेर मालिक के लइका के उदंडता पर एगो पुरान गरजियन बनके लाठी उठा ले तारे खेलौना। खेलौना के ए हिम्मत पर सब गाँव के लोग में एगो आदर बढ़ गइल। "रमरतिया "त खेलौना खातिर आपन बिअहुआ के छोड़ देलस आ गाँवों के लोग साथ दिहलस। ओकरा बिअहुआ के गाँ व हे बहरियाए के दम लेलस लोग। खेलौना से रमरतिया के बिआह होगइल। बाल बाच्चा भइल, माने खेलौना से पहिले मर गइल एकर अबसोस खेलौना के बड़ा सतावे। समय बइठल ना रहेला खेलौना के बाल बाच्चा बड़ होके कमात रहले हा स। माने खेलौना दरबार के पुरान आदमी दरबार के प्रति आपन निष्ठा आ हिरोह ना छोड़ले। जब लेखक के टीसन पर जाए के रहे त उनका खातिर पहिलहिं जाके टएन के पता लगवले ओमे देरी रहे ते लउट के खबर जनावे खतिरा आवत रहले खेलौना। नया पीढ़ी के लोग के खेलौना फुटी आँखियो सोहास ना । कहेलोग कामचोर ह लहकट ह। माने खेलौना के कवनो लालच ना रहे। एगो असीम परेम रहे, निष्ठा, इमानदारी, समर्पन के भाव रहे। मालिक मलकिनी के प्रति सनेह से लबालब हियरा रहे "प्रतिकूल रहला के बादो हम ओकरा कबो ना छोड़ पइनी। उ हमेशा हमार सनेही बनल रहेला " बाबूजी खेलौना के विषय में कहनी कि आउर मजदूर पइसा लिहल गइलस। माने खेलौना से हियरा के संबंध रहे। "शोषण केखिलाफ " आवाज उठावेवाला एरिया के सबसे पहिल बेकती रहलन खेलौना । नवका पीढ़ी के बाद में बुझाइल खेलौना के कर गुजारी पटना से एगो दैनिक अखबार में "खेलौना के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर" एगो व्याख्यान माला आयोजित कइले रहे। जियता जीव आदमी के आदर ना मिलेला मरला पर पूजा कइल जाला। खिस्सा कहल जाला "जियत मछिया ना घोटाला आ मुअला पर घोटा जाला " उहे हाल खेलौना के रहे। मुअला पर उनकर पचिष्ठा बढ़ गइल।उ गाँव के भगवान हो गइले। इहे दुनिया के रीत ह जियला भर गुह भात आ मुअला फर दूध भात ""खेलौना के मुअला पर "हिरदया से सरधा के फूल लेखक खेलौना के दे दिहलन" उनका बुझाइल खेलौना अइसन आदमी धरती पर बार –बार जनम ना लेला " खेलौना भगवान हवन तेसर कहानी "बड़की बहुरिया " एगो बाप के मन में मनोरथ रहेला आपना बेटी के सुखी घर में बिआह करेके ओकरा खतिरा आपन सब कुछ दाँव पर लगादेला बेटी के बाप। माने बेटी बड़की बहुरिया बन गइली। मलकिनी सास रहली उ जवन कहस तवन होखे। बाप के बेमारी हेमारी पर सास ना भेजली बड़का घर के बहुरिया के नाम पर घर में ठसक बड़ा रहे। नईहरो ना जाए देस सास हालाकि

“माइ चोरउका सनेस भेजअवले रहली खवास भेजले रहली। खवास लउट आइल माने चान दाई ना अइली ” बाप बेटी से मिलेखतिरा छ छ पाती रोअस। माने कठिन के पत्थर करेजा ना भेजलन स अइसन बड़का लोग ना दे खनी। रामबाबू के परान बेटी के देगे गतिरा छछनत रहे ।आ बिन देखले बेटी के अ खरहरे परान चल गइल” बड़ा हियरा के छुए वाली कहानी बा “बड़का घर के बहुरिया चान दाई अपना बाबूजी के प्रति सनेह के बलिदान क देहली ”

बेतिया शहर के पुरनका आउर नवका बदलल वेवहार के प्रति लेखक के “वेवहार” कहानी में बहुत स्वाभाविक बतकही भइल बा। नवका में सब जगह देखावा बा पइसा के बतकही बा। हित नाद के पुरनका लोग में केतना आवेश रहे। अब उ सहृदयता मिठास के चासनी परेम के खुसबू आ गंगा खनिया पवितरता कहाँ बा? जग परोजन में सब लोग से भेट घाट होला परेम के सुरसरिता में डुबकी लगावे के मौका मिलेला एक बेर आपन जमाना आँखि के लगे नाचे लागेला। देह में नयापन हिलोर मारेला। जिए के आस जाग जाला। आनंद के चासनी में तर मन में लबालब एगो नवजीवन मिलेला। अब उ कहाँ बा? होटल में बिआह होता आ कुकुर भोजमें पतल लेके नेवतहरी लोग घुम घुम के मांग मांग के खाता ।अब उ सरधा कहाँ बा पात में बिछाके इदर के साथ पुछ पुछ के खिआवे वाला सब सिसटम नवका वेवहार में फरदा के ओट से ताकता बाकिर कुछु कहेके नइखे। रामबाबू के इ वेवहार मन में काँट खनिया चुभत रहे“पूरा जतरा बोझ बुझाए लागल” राम बाबू के लौटे बेर में एगो सेयान बचिया आके सीट पर बइठल आईटी कंपनी में काम करत रहे आधुनिकता आउर पारंपरिकता के मेल से रामबाबू के मन उत्साहित हो गइल आपन पतोह बनावेके मन ही मन लड्डु फुटत रहे। ट्रेन खुलल आ उ लइकी फोन पर आपन लइका दोस्त से बतिआवे लागल। अइसन अइसन बात की सुनत में कान गल जाय। उत जानत रहे कि बुढ़वा सुतल बा। ओकनी मे “कवनो लिभ रिलेसन” के बात होत रहे। उनका बुझा गइल “पश्चिम संस्कृति आ कुछ संस्कार के पाछे पाछे समाज आँख मुनले भाग रहल बा” अब रामबाबू के आँख खुलल अइसन पतोह का बूढ़ा बूढ़ी के देखी। जाए के बेरिया कहलस“जस्ट चील अंकल! आप बहुत सोचते हो इन्ज्वाय करो “गोलकी फ्रेम के चश्मा ” कल्पवास, फैसला सब कहानी रोचक, मनहर जिज्ञासा से बन्हाईल उत्सुकता बनावे में बड़ा निमन बा। सब कहानी एक से एक बढ़के बा ‘को बड़ छोट कहत अपराधु” कहानी में कथा के बुनावट एक बेर हाथ में लेला पर छोड़े के मन नइखे करत। मन के बान्हे के तारतम्यता बेजोड़ बा। कहानी के गुणवत्ता से छौंकल गमगमात कथानक मन के खिड़िकिया से खुलके एगो देसिल बयार के सुगंधमयता से सराबोर आपना देसवा से मिले के ललक जगावे वाला बा। तु त केशव हव बबुआ बिदेश में रहिके आपना जड़ आपना माटी के महक से चिपकल गइल बाड़ फेबी काल अइसन। आपन भोजपुरी गिरमिटिया मजदूर सब विदेस में ले जाके ओकर मान बढ़वले बाड़े।सब लोग आपना साथे एगो रामचरितमानस मानस ले गइल। ओह जुग में अंगरेजन के कठोर यातना में भी आपन भोजपुरिया संस्कार के ओ माटी में खुसबू फैलावे के परानपन से कोसिस कइले।धन बाड़े उ गिरमिटिया मजदूर।उनका गोड़ के धूर माथ पर छढ़ाके भोजपुरी अमर हो गईल। आपन भाखा इपन माटी के स्वाभिमान आत्मीयता के उन्नयन के संकेत ह “केशव कहि न जाय क्या कहिए ” एगो छोट बीज आपना माटी में सड़के जड़ में पसर जाला अन्हार में जड़ रहके वटवृक्ष बनल जाला ओकर छाह आत्मा के कातना परितृप्त करेला ! आंक्सीजन के अमर कोष ह आपन भोजपुरी।

बहुत बहुत आसिरबाद। हमार लगे सबद घुटना के बल पर लड़खडाड़ात लेकिन माटी में लपटाए के एगो दोसरे आनंद बा। मैथली, भोजपुरी, अंग्रेजी के सबद के साथ आउर कहानी में हरिहरी बढ़ावता।

कुल मिलाके अपना भाखा के समादृत करके बिलुप्त भा खा के पुर्नप्रतिष्ठा करे खतिरा बबुआ हम तहार कृतज्ञ बानी।

जय भोजपुरी! जय मैथली! जय हिन्दी तहार ले खनी दीर्घजीवी होखो।

❑❑

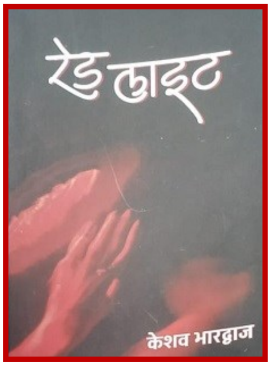

❍ **बेतिया, चंपारण, बिहार**

''पढ़त–लिखत'': भोजपुरी आलोचना के कशमकश

जीतेन्द्र कुमार

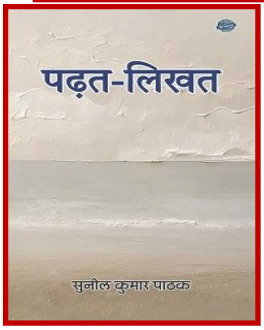

भोजपुरी आलोचना में डॉ ब्रजभूषण मिश्र, डॉ विष्णुदेव तिवारी,डॉ सदानंद शाही आ डॉ बलभद्र के बाद डॉ सुनील कुमार पाठक एह सदी के तीसरा दशक में उभरत एगो आश्वस्तिदायक हस्ताक्षर बाड़न, हालांकि बहुत कम उमिर में ऊहां के भोजपुरी में एगो उभरत निबंधकार के रूप में आपन पहचान दे देले रहीं जब सन् 1985में''पाण्डेय योगेन्द्र नारायण छात्र निबंध प्रतियोगिता ''भोजपुरी कविता के सामाजिक चेतना ''विषय पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 9वाँ राँची अधिवेशन में पंडित गणेश चौबे के हाथे प्रथम पुरस्कार ग्रहण कइले रहीं। सरकारी सेवा में गइला के बाद ऊहां का हाइकु छंद में कविता लिखे का ओर प्रवृत्त भइलीं आ सन् 1993 में भोजपुरी साहित्य के पहिला हाइकु संग्रह ''नेवान''दिहलीं।उहां के जनम 8 फरवरी,1964ई के ह। सरकारी सेवा के अझुरहट में साहित्य सेवा मार खाला,एह में दू राय नइखे।16बरिस के अंतराल के बाद सन् 2009 में किताबघर पब्लिकेशन, मुजफ्फरपुर से हिन्दी कविता संग्रह ''कविता का सर्वनाम''प्रकाशित भइल।दू बरिस बाद सन् 2011 में हिंदी निबंध संग्रह''उमड़े निबंध मेघ ''प्रकाशित भइल। सन् 2020के बाद भोजपुरी साहित्य पढ़े लिखे के प्रति पाठक जी के एगो नशा लेखा चढ़ि गइल।एकरे परिणाम ह डॉ सुनील कुमार पाठक के ''पढ़त –लिखत''जवन भोजपुरी कविता संग्रहन के समीक्षन के संकलन ह। भोजपुरी आलोचना में ई एगो विधागत आलोचना पुस्तक ह। भोजपुरी में प्रायः एके आलोचना पुस्तक में कविता,कहानी, उपन्यास, गीत, नवगीत,निबंध पर समीक्षात्मक आलेखन के संकलन प्रस्तुत करे के प्रवृत्ति बा।एह दिसाईं विवेच्य पुस्तक ''पढ़त –लिखत''के विधागत प्रस्तुति सराहनीय बा।

''पढ़त –लिखत''दू खंड में प्रस्तुत बा –– खण्ड क आ खण्ड ख।खण्ड क में छौ गो आलेख बा आ खण्ड ख में 15गो भोजपुरी कवियन के कविता संकलनन पर समीक्षात्मक आलेख बाड़ सँ।बाकी एके संकलन में गीत, नवगीत, गजल, समकालीन कविता आदि पर समीक्षात्मक आलेखन के प्रस्तुतियो भोजपुरी में एगो नया प्रयोगे कहाई।काहे कि गजल आ नवगीत आ समकालीन कविता के शिल्प, संवेदना, सरोकार,परंपरा, जमीन अलग–अलग होला।बात बा कि रचना होई तब नूं आलोचना होई। एगो अर्थ में आलोचना रचना के विस्तार ह।मूल होई तब नूं सूद के उमेद होई। समीक्षा में रचना के गुण –दोष के सहृदयता से विश्लेषण –विवेचन के अपेक्षा रहेला।एह ना बेसी झाल बाजे आ ना बेसी छील –छाल के बरोबर कइल जाये।

आलोचना अइसन पारदर्शी होखे कि पाठक आ सर्जक दूनों के अंतर्दृष्टि पुष्ट होखे आ साहित्य नवनिर्माण के एगो नया दिशा मिले।

खण्ड 'क' आ खण्ड 'ख'से पहिले समालोचक डॉ सुनील कुमार पाठक के आत्मकथात्मक –संस्मरणात्मक भूमिका बा 'आपन कहनाम 'एह में समालोचक के प्रज्ञा भोजपुरी आलोचना के एगो नया दिशा देवे खातिर जबर्दस्त अंतर्द्वंद्व में उफनत बिया। बायें ना दायें,वाद में ना प्रतिवाद में,उत्तर ना दखिनयतनी मनी पछिमाहुत बाकी अपना ठांव पर अंगद पांव जमवले।एक ओर विचारधारा लउकत बा ––''आज के दुनिया विचार –प्रधान बिया,तर्क आ तथ्यने के आधार पर मूल्यांकन के निकष तइयार हो रहल बा..... साहित्य में भावना आ संवेदना के साथे –साथे आज विचारो के खूब तरजीह मिल रहल बा (पृष्ठ 16½।''महाकवि तुलसीदास जी के दरवाजा खटखटावला पर ऊहां के कहनाम बा –––

''जौं बरसई वर वारि विचारू,
होहिं कवित्त मुकुतामनि चारू।''

बाबा तुलसीदास के आदेश के अवहेलना कुंभीपाक के दर्शन करवाई। विचार –वारि से कविता के मुकुतामनि के चारूता आउरो बढ़ि जाई। समालोचक के जिज्ञासु मन संस्कृत के विद्वान राजशेखर से लेके हिंदी के आलोचक डॉ श्यामसुंदर दास लगे जाता।मन संतुष्ट नइखे होत। विचार, विज्ञान,दर्शन, पंछी, वनस्पति,मेघ,जल,जीव कुल्हि मानव निर्मित सरहद के अतिक्रमण करत रहेला।बाजार त सीमा सरहद मनबे ना करे,ऊ त राजपाट उलाट के आगे बढ़ि जाला।त समालोचक विचार खातिर सरहद पार करत बानीं,ऊहां के जात बानीं इन्साइक्लोपीडिया

'ब्रिटेनिका', इंग्लिश कवि –आलोचक जॉन ड्राइडेन (1908-08.1631&&12-05-1700) जेकर काव्य प्रतिभा कविता में गीतात्मक तत्वन के आलोचना कइले बा), मैथ्यू आर्नल्ड (सन् 1822–1888) सैमुअल टेलर कॉलेरिज (सन् 1772—1834इ),ईवर आर्मस्ट्रांग रिचर्ड्स (सन् 1893—1979),टामस कार्लाइल (सन् 1795——1881),आदि।एगो आउर अधूरा नाम बा वर्सफोल्ड के।गूगलो कुछ बतावत नइखे। विदेशी विद्वानन के पूरा नाम कोष्ठक में कालावधि सहित होखे से पाठक के सुविधा होला।अधूरा विवरण से पाठक के मन आतंकित होला। एगो धारणा बनता कि समालोचक विदेशी आलोचना के खूब अध्ययन कइले बानीं। भोजपुरी पाठक के ई प्रेरणा मिलत बा कि खूब पढ़े के चाहीं।एह सूची में भारतीय काव्य आलोचकन के नांव ना मिले से मन तनी मनी निराश होता।

''पढ़त –लिखत''के लेखक भोजपुरी आलोचना में दिशा निर्देश खातिर संस्कृत वा^3मय के आलोचक के चार प्रवृत्तियन के स्मरण करवले बानीं ——(1)काक वृत्ति,(२)कोकिल वृत्ति,(३)मधुकर वृत्ति,(४)हंस वृत्ति। आलेख में एह वृत्तियन के कवनो उदाहरण नइखे।

आपन कहनाम में ओह तमाम भोजपुरी पत्र पत्रिकन के उल्लेख बा जे भोजपुरी आलोचना के समृद्ध कइले बा।एही तरे ऊ तमाम भोजपुरी आलोचना –समीक्षा ग्रंथन के प्रकाशन सहित उल्लेख बा।एही क्रम में भोजपुरी शोध ग्रंथन के भी उल्लेख बा। सरकार भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल करो भा मत करो, भोजपुरी भाषा के हर विधा विकसित हो रहल बा। भविष्य के शोधार्थीन खातिर ई सूची बहुत उपयोगी बा।एह श्रमसाध्य कार्य खातिर लेखक बधाई के पात्र बाड़न।

खण्ड –'क'के पहिला आलेख 'मातृभाषा के सवाल बा '।एह में जनपदीय भाषा 'भोजपुरी के पक्ष में मजबूत तर्क बा,साथ हीं सत्ता के संरक्षण ना मिलला से भोजपुरी राजस्थानी अइसन समर्थ जनपदीय भसन पर आसन्न खतरा का ओर भी संकेत बा।

खण्ड –'क'के दोसर आलेख बा:''गाँधी बाबा दुलहा बने हैं''। ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति खातिर भारतीय जनता के संगठित करे में महात्मा गाँधी के बहुत अवदान बा। बिहार के चंपारण में गांधी जी सत्याग्रह के श्रीगणेश कइलीं।ओह सत्याग्रह के भोजपुरी जनमानस पर अमिट छाप बा। भोजपुरी लोकमानस अपना भाषा में महात्मा गाँधी के खूब इयाद कइले बा, उनुकर खूब गुनगान कइले बा। महात्मा गाँधी के प्रति लेखक के नजरिया के ई प्रमाण बा।

तीसरा आलेख महान स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद बाबू कुँवर सिंह के वीरतापूर्ण बलिदान पर केन्द्रित बा। भोजपुरी जनमानस में बाबू कुंवर सिंह के लोकप्रियता के प्रमाण ऊहां पर भोजपुरी में रचित विपुल साहित्य बा।हर समाज अपना नायक के संघर्ष के अइसहीं इयाद करेला।ई आलेख शोधपूर्ण आ श्रमसाध्य बा।एह में बाबू कुंवर सिंह पर रचित होली,चइता,धोबी –गीत,पँवरिया,मानर,पँवारा,कजरी,खेल –गीत,घनाक्षरी,प्रबंध काव्यन के उल्लेख बा।बाबू कुंवर सिंह के लोकप्रियता भोजपुरी समाज के हर जाति –वर्ग में बा। भोजपुरिया समाज के अस्मिता –प्रेम के गहन समाजशास्त्रीय अध्ययन उल्लेखित रचनन के आधार पर संभव बा। भोजपुरिया समाज के जातीय सांस्कृतिक दृष्टि के समझे में ई आलेख सहायक बा।

चउथा आलेख ''एही ठइयां झुलनी हेराइल हो रामा''चइता गीतन पर केन्द्रित बेजोड़ आलेख बा। ई आलोचना से बेसी समालोचक के रम्य रचना बा।ऐन्द्रिक वर्णन से आलेख सुशोभित बा। महाकवि कालिदास के ऋतु संहार, रीतिकालीन बिहारीलाल,पदमावत के जायसी, कबीरदास, धर्मदास,दरिया साहब, संत केशोदास के निर्गुनिया चइता गीतन से खूब मुलाकात होता।

पाँचवा आलेख''बासमती चाँदनी उबीछ दीं त कइसे ''भोजपुरी नवगीत के उदगम आ विकास पर केन्द्रित बा। हिंदी नवगीत के प्रथम प्रस्तोता 'गीतांगिनी'के संपादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह (मुजफ्फरपुर, बिहार) के मानल जाला (5फरवरी,1958के प्रकाशित गीतांगिनी)।बाद में शंभुशरण सिंह दावा पेश कइलन कि ऊ सन् 1951–52में काशी में नौका –गोष्ठी में नवगीत सुनवले रहलन।ऊ आउर कहलन कि 1956में इलाहाबाद में परिमल के काव्य गोष्ठी में नवगीत संज्ञा के प्रयोग कइले रहलन। हिंदी में ई विवाद चलत रहल कि नवगीत के पहिला प्रस्तोता राजेन्द्र प्रसाद सिंह रहलन कि शंभुशरण सिंह।जे जादे दिन जिही ऊ जीतबे करी।अइसने विवाद भोजपुरी नवगीत के बारे में ह कि भोजपुरी नवगीत के पहिला प्रस्तोता के ह डॉ विश्वरंजन (15-01-1940—16-07-1999इ)कि डॉ उमाकांत वर्मा (1931—07-08-1999)। आलेख में भोजपुरी के 24गो नवगीतकारन के नाँव बा। भोजपुरी में एगो आदत बा कि लेखक/कवि/गीतकार/आलोचक आदि के नांव के आगे कोष्ठक में उनकर कालावधि के

जिक्र ना रहेला।ई जुटावल बड़ा कष्टसाध्य बा,बाकी करे के त पड़बे करी। डॉ विश्वरंजन के एगो कथन अकाट्य बा कि ''भोजपुरिया लोग हिंदी में नवगीत लिखत रहे,उहे लोग हिंदी नवगीत के कामयाबी से प्रेरित होके,अपना भाषा भोजपुरियो में 'नवगीत' रचना शुरू कइल लोग।''एहिजा एगो विवेचना अपेक्षित रहे कि स्वतंत्रता के पश्चात छठा दशक के अंत (1958) में हिंदी –भोजपुरी दूनों काव्यधारा में परंपरागत काव्यरूप गीत के छोड़ि के नवगीत काव्यरूप अपनावे के कवन ऐतिहासिक सामाजिक सांस्कृतिक कारण रहे?का परंपरागत गीत अपना समय आ संदर्भ के चित्रित करे में असमर्थध्असफल हो गइल रहे?गीत आ नवगीत के काव्यवस्तु आ अंतर्वस्तु में का फर्क बा?काव्यरूप के बदल जाये से कवित्व चेतना में विकास मान लिआई?

एह आलेख के अंत विजेंद्र अनिल (21-01-1945——03-11-2007) के जनगीत से भइल बा। हालांकि समालोचक जनगीत के नवगीत कहे में सुविधा महसूस करत बाड़न।एह लेख में डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित', विजेंद्र अनिल, कैलाश गौतम, डॉ ब्रजभूषण मिश्र, कमलेश राय के एके पांत में राखल बा। कैलाश गौतम के एगो हिंदी नवगीत पढ़ी ———

''कंडे बीन रही है/झुनियां देखो सूखे ताल में।
आग बरसती,लू चलती है,कितनी तेज न जाने।
अपना काम इसे सौंपा है। विधवा बूढ़ी मां ने।
बात –बात में चित हो जाती।
पांच रूपली में सो जाती।
जैसे इसकी मां सोती थी,कभी पाव भर दाल में।

नवगीतकार कैलाश गौतम के उक्त नवगीत के अंतर्वस्तु पर विचार करीं आ आजु के नारी अस्मिता पर विचार करीं। कंडे बीन के जीवन यापन करेवाली,अदम्य जिजीविषा वाली, संघर्षशील झुनियां के शारीरिक शोषण आ अमानवीय यातना के कैलाश गौतम पुश्तैनी धंधा घोषित कइके शोषक –शासक समाज के वर्गीय मानसिकता के परिचय देले बाड़न।एह प्रतिगामी, प्रतिक्रियावादी,सामंती सोच के नवगीत में कतना रस झरत बा! भोजपुरी में सक्रिय अनेक नवगीतकार लोग के नांव बा।

समालोचक डॉ सुनील कुमार पाठक नवगीतकार शंभुनाथ सिंह (1916–1991) द्वारा घोषित 'नवगीत के प्रतिमान 'से लगभग सहमति जतावत बानीं।शंभुनाथ सिंह अपना पचहतरवां वर्षगांठ के अवसर पर नवगीत के घोषणापत्र जारी कइले रहीं जवना में 17गो प्रतिमान तय कइले रहीं ——(1)छांदसिक लयात्मकता जे गेयता से भिन्न होखे,(2)संवेदनधर्मिता आ संस्पर्श शक्ति,(3)ग्राह्यता आ स्मरणीयता, (4)सम्प्रेषणीयता, (5)बिम्बधर्मिता भा चित्रात्मकता, (6)अनलंकृति आ सादगी,(7)खुलापन अर्थात स्वायत्तता भा प्रतिबद्धता,(8)लोक संपृक्ति आ जन के प्रति संसक्ति,(9)भारतीयता के चेतना आ जातीय बोध,(10) यथार्थ प्रसंग, विसंगतियों के दर्द आ सामाजिक पीड़ा के अभिव्यक्ति,(11)जीवन के केन्द्र में मानव के प्रतिष्ठा,(12) भारतीय ढ़ग के आधुनिकता बोध, (13) ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक चेतना, (14)परंपरा के भीतर से जनमल नवता,(15)सौंदर्य, प्रेम आ मानवीय भावस्थितियन के जीवनी शक्ति के रूप में स्वीकृति,(16)जीवंतता आ गत्यात्मकता एवं (17)आम आदमी के कविता।

विद्वान समालोचक डॉ सुनील कुमार पाठक आलेख के समाहार करत शंभुनाथ सिंह के नवगीत के प्रतिमानन के एगो संशोधन के साथे दोहरावत प्रस्तुत कइले बानीं।शंभुनाथ सिंह के सातवां प्रतिमान ''प्रतिबद्धता''के अप्रतिबद्धता क देले बानीं (पृष्ठ –76)। ई बदलाव विचारणीय बा। दसवां प्रतिमान ''यथार्थ प्रसंग''भी संपादित बा। आलेख विचारोत्तेजक बा।

विवेच्य पुस्तक के खण्ड –'क'के अंतिम आलेख बा ——''कोरोजीवी कविता भोजपुरी के''। एह आलेख में कोरोना काल के दौरान लिखत रचित भोजपुरी के कवितन,गीतन,गजलन के सकारात्मक नकारात्मक पहलुअन के मानवीय दृष्टि से बेबाक विश्लेषण विवेचन बा। कोरोना काल के जवन कविता जाति,धर्म,रंग,रूप,भाषा आदि हर तरे के विभेदन से मुक्त एगो विवेकपरक आ वैज्ञानिक मानवीय जीवन दृष्टि सम्पन्न समाज के सपना आ उम्मीद के पक्ष में सृजित बिया,ओकर भूरि भूरि प्रशंसा एह आलेख में बा।लेखक के विश्लेषण बा कि ''भोजपुरी के कोरोजीवी कविता के अंतर्वस्तु के फलक बहुते व्यापक बा आ एकर संरचनो में विविधता बा।पीड़ा आ दर्द के अभिव्यक्ति प्रायः साफ –सूथरा आ पारदर्शी बा।एह से एकनी में बिम्बधर्मिता आ प्रतीकात्मकता के गुंजाइश कमे बा।''

आलेख में भोजपुरी पत्रिका''हम भोजपुरिया ''के लगातार छपल पाँच अंकन में छपल 'कोरोना कवितावली'स्तंभ में छपल कवितन के व्यापक समालोचना बा। कोरोना काल में भय,निर्वासन आ मउअत के अनुभूतियन से मनई रोज –रोज गुजरत रहे।ऊ अकुलाहट आ उबियाहट महसूस करत रहे।एकाकीपन के बोध तारी रहे भोजपुरी के

समकालीन कवि लोग ओह भय, निर्वासन, मउअत,उजबुजाहट,ऊब आ एकाकीपन बोध से संघर्ष करत मनई पर कविता लिखलक। आलेख में डॉ सदानंद शाही, डॉ धर्मप्रकाश मिश्र, अशोक कुमार दीप, डॉ बलभद्र, रंजन विकास, डॉ शशि कुमार सिंह 'प्रेमदेव',भगवती प्रसाद द्विवेदी,माधवी उपाध्याय, संध्या सिन्हा 'सूफी',सरोज त्यागी,दिवाकर उपाध्याय आदि के कविता गीत गजल के व्यापक उल्लेख विश्लेषण बा।

भोजपुरी के कोरोना कालीन कुछ कवितन के पढ़ि के समालोचक के बहुत निराशा भी होता।एह प्रसंग में आलोचक के निर्मम टिप्पणी बा,''कोरोना पर कविता मतलब कइगो कवि लोग गाय पर लेख लिखे के बुझ लेले बा'' ।आपदा में अवसर तलाशेवाली राजनीतिक जुमलेवाजी पर निर्मम टिप्पणी बा। डॉ बलभद्र के फेसबुक वाल से उधृत एगो कविता पर मंतव्य बा:''भोजपुरी के ई कोरोनाजीवी कविता श्रम के मूल्य आ मजदूर मेहनतकश के जिनिगी के बड़ी भरोसा आ विश्वास के साथ देख रहल बिया आ ओकरा संघर्ष के भविष्य खातिर मनुष्यता के थाती मान के चल रहल बिया''।

विवेच्य पुस्तक के दोसरा खण्ड–'ख'में भोजपुरी कविता के 15गो दमदार कृतिकार लोगन के कविताध्गीतध्गजल पर समीक्षात्मक आलेख बाड़े सँ। समग्रता में विचार कइला पर एह आलेखन से अंतर्ध्वनि आवता कि समालोचक स्वयं आधुनिक भोजपुरी कविता के एगो नया प्रतिमान गढ़े खातिर जद्दोजहद कर रहल बाड़न। भोजपुरी आलोचना खातिर ई शुभ संकेत बा एह खातिर ऊ महाकवि तुलसीदास से लेके पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्रीयन तक जात बाड़न, भारतीय काव्यशास्त्रीयन से लेके आधुनिक हिंदी कवि त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन,अरुण कमल, श्री प्रकाश शुक्ल तक जाताड़न।उक्त कवियन में नागार्जुन आ त्रिलोचन के छोड़ि के सभ नागर बोध के कवि ह लोग।एगो नाम उल्लेखनीय बा: डॉ बलभद्र।इनकर कविता संग्रह ''कब कहलीं हम''के समीक्षा बा:''जतिए भइल जहमतिया,ना ढोयले ढोआला ना इजतिया''। उदारतावाद आ वेश्वीकरण,मशीनीकरण,छँटनी, निजीकरण के एह जुग में जहां युद्धक विमानन से लेके कविता कथा के फॉर्म आ अंतर्वस्तु तक के आदान–प्रदान हो रहल बा,ओहिजा समालोचक के काव्य –दृष्टि में ''आयातित माल से ती वितृष्णा बा। समकालीन कवि बलभद्र के कविता संकलन''कब कहलीं हम ''(2015) के बारे में मंतव्य बा कि ''बलभद्र के कविता भोजपुरी जन –जीवन में एकतरहीपन...देखे के नइखे मिलत।....विषय –वस्तु में विविधता, भावाभिव्यंजना में तरलता बा।''

''खरकत जमीन आ बजरत आसमान''भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ ब्रजभूषण मिश्र के कविता –संग्रह (एही नाम से) के समीक्षा ह।एह संग्रह में 28गो मुक्तछंदी कविता संगृहित बाड़ी सँ,बाकी दोसर दोसर काव्यरूप के कविता बाड़ी सँ।संकलन के एगो कविता 'कविता'के व्याख्या बा जवना में समाला. ेचक के हिंदी के कवि निराला के कविता इयाद आवता।एगो नयी काव्य धारा 'नवबोधी कविता 'के आलोचक पाठक जी उल्लेख करत बानीं।'नवबोधी कविता 'भोजपुरी आलोचना में एगो नया प्रत्यय बा,जवना के विशेषता ''शब्दन में नया –नया अर्थ के विधान''कहल गइल बा।ओइसे कवि –गीतकार –गजलकार डॉ ब्रजभूषण मिश्र के गीत जनगीत के करीब ना समतुल्य बा,बाकी समालोचक उनुका के जनग. ीतकार गोरख पाण्डेय, रमाकांत द्विवेदी 'रमता', केशव रत्नम, विजेंद्र अनिल के पांति में बइठावे में हिचकिचात बाड़े। संग्रह के अन्य काव्य रूपन के व्याख्या सटीक बा।

विलियम वर्ड्सवर्थ (1770––1850), के काव्य दृष्टि समीक्षक के अति पसंद बा।टी.एस. इलियट(1888–1965) के वर्ड्सवर्थ के काव्य दृष्टि के बारे में अभिमत बा:''वर्ड्सवर्थ भाव से इतने आविष्ट हैं कि काव्य के लिए विचार को अनावश्यक ही नहींय अवांछनीय भी मानते हैं और कहते हैं कि बुद्धि काव्य की हत्या कर देती है (पृष्ठ 209), पाश्चात्य काव्य शास्त्र: देवेन्द्र नाथ शर्मा)।इलियट के मत बा:''महान कवि और महान काव्य में भाव और विचार का, भावुकता और बौद्धिकता का, वैयक्तिकता और परंपरा का, समकालीनता और शाश्वतता का समन्वय रहता है।''आ.देवेन्द्रनाथ शर्मा, के एह प्रसंग में कथन बा:''हिंदी साहित्य के संदर्भ में.... तुलसीराम एकीभूत संवेदनशीलता के सर्वश्रेष्ठ निदर्शन सिद्ध होते हैं। उनमें भाव और विचार का विचार का जैसा अद्भुत समन्वय है,वैसा किसी भी दूसरे कवि में नहीं है।.... प्रायः पूरे रीतिकाल में विचार पक्ष गौण है। द्विवेदी युग में विचार का प्राधान्य है तो छायावाद युग में भाव का।''कहे के मतलब बा कि भोजपुरी कविता ना हिंदी के छायावाद युग में लवटी ना विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य दृष्टि ओकर आदर्श होई।

भोजपुरी में समकालीन कविता खूब लिखाइल आ आजुओ लिखा रहल बा,बाकी ओकर चरचा कम होला चाहे ना होला। समीक्षक

डॉ सुनील कुमार पाठक 'पढ़त–लिखत'में समकालीन भोजपुरी कवि लोग पर यथेष्ट ध्यान देले बानीं।एह सिलसिला में प्रो ब्रजकिशोर, भूतपूर्व संपादक 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 'आ'जौ जौ आगर 'के वरिष्ठ कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी के काव्य संकलनन पर विवेच्य पुस्तक में मजीगर चरचा बा।

''पढ़त –लिखत''के खण्ड –'ख'के पहिला आलेख 'बिसरइह जनि जब चलि जाईं ''में भोजपुरी में पाँच पुस्तकन के प्रणेता, स्वतंत्रता सेनानी,चिकित्सक डॉ राम विचार पाण्डेय (3-03-1900—05-02-1988) के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित बा।

''चहकत प्रान मधुप मन डोलत''प्रेम प्रकृति के गीतकार अनिरुद्ध जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित बा।खण्ड 'ख'के तीसरका आलेख ''हम त राही हईं,रुकीं कबले''भोजपुरी के ख्यातिलब्ध गजलकार, दोहाकार, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के भूतपूर्व संपादक आ भोजपुरी के चर्चित उपन्यास ''फुलसुंघी''के रचयिता पाण्डेय कपिल के व्यक्तित्व आ कृतित्व बा केन्द्रित बा।किताब के सबसे छोट आलेख इनीके पर बा।तबो लेख के लंबाई चौड़ाई के ममिला में पाण्डेय कपिल जी गांधी बाबा के समतुल्य बानीं।

पं अक्षयबर दीक्षित जी (02-07-1930–13-01-2020) भोजपुरी साहित्य के अनन्य सेवी रहीं। ऊहां के भोजपुरी के कवि, कथाकार, निबंधकार, समीक्षक, संगठक, यात्री आ शिक्षाविद् रहलीं। 'पढ़त–लिखत रहीं,गुनत मथत रहीं ''आलेख में दीक्षित द्वारा प्रेषित प्रथम ग्रंथ 'अंगऊं'(1977) में संकलित 11गो कवितन के समीक्षा बा।समीक्षक के कथन बा कि एह कवितन में भाव आ विचार के विविधता,कल्पना के नवीनता,रस के प्रवहमानता आ शिल्प के सौष्ठव देखे लायक बा।

''तन के दीप नेह के बाती,जरी देस खातिर दिन राती ''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' (23–01–1938–17–04–2015) भोजपुरी के बहुत बड़ रचनाकार रहीं। काव्य के हर रूप विधा में ऊहां के पुस्तकाकार रचना बाड़ी सँ। भोजपुरी गद्य में भी ऊहां के अविस्मरणीय अवदान बा। विवेच्य आलेख में चौधरी जी के कविता संग्रह''माटी करे पुकार 'के विस्तृत समीक्षा बा।

सूर्यदेव पाठक 'पराग'संस्कृत, हिंदी आ भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर हईं।'पराग'जी के जनम ३मार्च,1943ई के ग्राम बगौरा जिला –सिवान, बिहार में भइल रहे।

भोजपुरी में ऊहां के (1)हीरोचित मानस (हास्य व्यंग काव्य,1978), (2)भँवर में नाव,(गजल संग्रह, 2003), (3) अलग–अलग रंग (गीत –नवगीत संग्रह, 2009),(4)अंजुरी भर फूल (रुबाई संग्रह,22009), (5)भइल भोर (बालगीत संग्रह,2009), (6)अछूत (उपन्यास,1986), (7) जंजीर (नाटक,1994),(8) प्रश्नचिन्ह (कहानी संग्रह,1998) (9)तिरमिरी (लघुकथा संग्रह,1994) आदि प्रकाशित बा।''विचार के झोरी जथारथ के जमीन पर''में 'पराग जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर चरचा बा।

'पाती' के यशस्वी संपादक डॉ अशोक द्विवेदी हिंदी –भोजपुरी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हईं।''पढ़त –लिखत''में 'कवि!तू धरती राग लिख 'उनके व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित बा।ऊहां के भोजपुरी पत्रकारिता आ साहित्य में अपूर्व योगदान बा। समालोचक डॉ सुनील कुमार पाठक विवेच्य आलेख में द्विवेदी जी के कृति ''अढ़ाई आखर''(कविता संग्रह, 1978)'फूटल किरिन हजार (गीत गजल संग्रह,2004), 'कुछ आग कुछ राग '(कविता संग्रह,2014),'रामजी के सुगना '(निबंध संग्रह),'गाँव के भीतर गाँव'(कथा संग्रह, 1998),'आव लवटि चलीं '(कथा संग्रह,2000),'भोजपुरी रचना आ आलोचना '(समालोचना,2019) उल्लेख कइले बानीं। एह में डॉ अशोक द्विवेदी के तीसरका कविता संग्रह 'कुछ आग कुछ राग 'के विस्तृत समीक्षा बा।

एकरा अलावे विवेच्य पुस्तक में वरिष्ठ कवि डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित ', डॉ जौहर शफियाबादी,शायर तंग इनायतपुरी, प्रकाश उदय, के कविता संग्रह पर विशद समीक्षा बा।

पुस्तक के नांवः पढ़त –लिखत
लेखकः डॉ सुनील कुमार पाठक
प्रकाशकः सर्व भाषा ट्रस्ट,नई दिल्ली –59
जे.–49 स्ट्रीट नं 38 राजापुरी मेन रोड
उत्तम नगर
मूल्यः₹229-00अजिल्द

❑❑

❍ **आरा,मो नं 9113426600**

भोजपुरी साहित्य में महिला कहानीकार क कहानी

डॉ. रेनू यादव

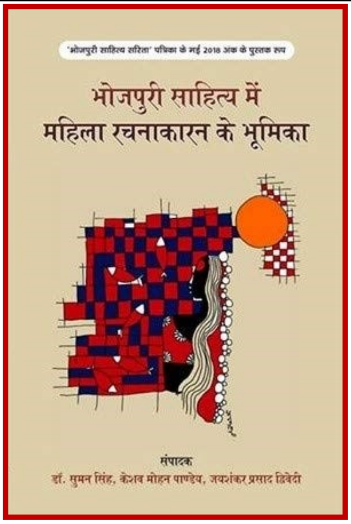

वइसे त भोजपुरी लोक साहित्य क इतिहास बहुत पुरान हव लेकिन डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित क किताब 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा' के अनुसार लिखित में भोजपुरी कहानी क शुरूआत हिन्दी कहानी के चार दशक बाद शुरू भइल हव । उनके अनुसार 1948 में श्री अवध बिहारी सुमन जे बाद में दण्डी स्वामी विमलानंद सरस्वती के नाम से जानल गइअन, उनकर कहानी 'जेहल के सनदि' प्रकाशित भइल । ओकरे बाद कई भोजपुरी क कहानीकार जइसे कि विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, आ. शिवपूजन सहाय, वृन्दावन बिहारी, आ. पंडित नर्मदेश्वर सहाय, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह आदि नाम समने आइल । जवने समय हिन्दी में नई कहानी क दौर चलत रहल त वो ही समय भोजपुरी में कई महिला लेखिका क नाम भी समने आइल । यानी कि 60–70 के दशक में भोजपुरी में इक्का दुक्का महिला लेखिका दिखायी दिहली । जब इनकर परिचय देखनी त समझ में आइल कि लगभग इ सब लेखिका संभ्रान्त परिवार आ कि इनकर पति आ परिवार भोजपुरी क साहित्यकार रहऽन । हमके ओ समय कवनो साधारण घर क महिला लेखिका क नाम दिखायी नाहीं दिहलस । बाद में भले ही साधारण परिवार क लेखिका क नाम सामने आइल बा लेकिन ओ समय नाहीं । येकर मतलब हव कि अबहिन बहुत शोध कइले क जरुरत बा । हो सकेला माटी में गड़ल खजाना उभर आवऽ ।

60–70 के दशक से लेके वर्तमान समय में बहुत सी महिला लेखिका लिखले बाड़ी अउर लिखत के रूप में लिहल जा सकेला । महिला लेखन खाली भारत में ही नाहीं बल्कि विदेश में जइसे कि मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी, नीदरलैंड, अमेरिका, लंदन, नेपाल आदि में लिखल जात बा । कुछ साल पहिले सुमन सिंह और केशव पाण्डेय जी के संपादन में 'भोजपुरी साहित्य में महिला लेखिका क भूमिका' नामक पुस्तक प्रकाशित भइल रहल अउर अब हाल ही में संपादक मनोज भावुक जी के संपादन में 'भोजपुरी जंक्शन' क महिला विशेषांक तीन भाग में निकलन हउवँ, जवने में महिला लेखिका लोगन क बहुत बड़ी सूची दिखाई देत बा ।

राधिका देवी श्रीवास्तव, चन्द्रमुखी वर्मा, बिन्दु सिन्हा, स्नेह प्रभा श्रीवास्तव, सुधा वर्मा, रूपश्री, डॉ. सुशीला ओझा, डॉ. आशारानी लाल, डॉ. उषा वर्मा, डॉ. शारदा पाण्डेय, मधु वर्मा, मालती त्रिपाठी, डॉ. प्रेमशीला शुक्ल, बच्ची देवी, ज्योत्स्ना, डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद, मीनाधर पाठक, डॉ. मंजू सिन्हा, इंदु उपाध्याय, सरोज सिंह, प्रियम्बरा, श्यामा सिंह, डॉ सुमन सिंह, प्रज्ञा पांडेय, डॉ. दिवा, रजनी श्रीवास्तव, शालिनी कपूर, नीतू सुदीप्ति 'नित्या', डॉ. कादम्बिनी सिंह आदि अइसन लेखिका बाड़ी जे भोजपुरी संसार के समृद्ध कइले बाड़ी अउरी करत बाड़ी ।

भोजपुरी महिला लेखन के तीन भाग में बाँटल जा सकेला, पहिलकी पीढ़ी, हमार पुरखिन पुरनिया जिनकर रचना 60–70 के दशक में समने आइल । दूसरकी पीढ़ी, जिनकर रचना 80–90 के दशक में समने आइल अउर तीसरकी पीढ़ी जिनकर रचना इक्कीसवीं सदी में झमझमात बा । ये तीनों पीढ़ी में समयगत कथानक, शिल्प अउरी शैली में अंतर देखल जा सकेला ।

60–70 के दशक क कहानीकार राधिका देवी श्रीवास्तव, चन्द्रमुखी वर्मा, बिन्दु सिन्हा, स्नेह प्रभा श्रीवास्तव, सुधा वर्मा, रूपश्री के रचना आदर्शवादी रचना के अंतर्गत देखल जा सकेला । जवने में समयगत नैतिकता अधिक हावी रहल लेकिन अपने अस्मिता करतीन चाहत भी दिखाई देला । जइसे कि राधिका देवी श्रीवास्तव क कहानी 'धरती क फूल' बड़ा ही सरल अउरी मन के छू देवे लायक कहानी बा । आज के समय में जब

एकतरफा प्रेम एसिड अटैक और अपराध तक पहुँच जात बा, वो ही जा ये कहानी में धरती क फूल यानी कि कुकुरमुत्ता तूरे गइल नायिका रम. रतिया एकतरफा प्रेम करे वाले महेसर के अचक्का से राखी बाँध देले, जबकि महेसर रमरतिया से बियाह करे करतीन ओकरे पिता से बात कर चुकल रहेला । राखी क महत्त्व ये बात से समझल जा सकेला कि महेसर भी राखी बन्हले के बाद ओके बहिन माने करतीन विवश हो जाला ।

ये कहानी में धरती क फूल एक प्रतीक के रूप में लिहल गइल बा । धरती क फूल रम. रतिया हव, जवन स्वतंत्र निर्णय ले लेले आ कि महेसर हउव कि स्वतंत्र निर्णय लेवे वाली स्त्री क सम्मान करेला आ कि समाज द्वारा बनावल नै. तिकता हउव जेके लाँघ के जाइल मुश्किल हव । ये कहानी में हमके तीन बात प्रमुख रूप से दि खाई देला दृ पहला, नैतिकता के आगे वासनात्मक प्रेम क थम गइल, दूसरा, 1968 में धरती क फूल कहानी छपल रहल, ओ समय जाति–पाति क भेदभ. ाव समाज पर हावी रहल । लेकिन लेखिका वो समय में लिखले बाड़ी कि "रहल जात–पाँत क बात, त अब ई के देखता"। इ बात तनि हैरान करेला कि जवने समय में जाति–पाति गेडुल मारके बइठल रहल, वो समय में लेखिका जाति–पाति से ऊपर उठले क बात करत बाड़ी। तीसरकी बात, आज भी मन चाहे वर से बियाह कइले पर ऑनर कीलिंग हो जाला, वो समय में राधिका जी क नायिका मन चाहे वर से बियाह करेली अउरी जेसे बियाह लागल बा ओके तोड़ देली । ये हिसाब से देखल जा सकेला कि राधिका जी समय से आगे क बात करत रहली।

ये कहानी के बिल्कुल विपरीत बिन्दु सिन्हा अपने कहानी 'लाल निशान' में लक्खी एकतरफा प्रेम में हार जाले । काहें से कि ओकरे प्रेम से अन्जान हरभज ट्रक से बकरी कचरइले पर ओके थप्पड़ मार देला । लक्खी गाले पर लाल निशान लेके अधेड़ आदमी से बियाह करतीन तइयार हो जाले अउर लाल खून, लाल गुलाब अउरी लाल निशान में प्रेम ढूँढ़त रह जाले लेकिन प्रेम कहीं बिला गइल बा ।

स्नेह प्रभा श्रीवास्तव अपने 'बतिया न बिसरे' कहानी में अकेल स्त्री सुलोचना क पीड़ा, अंतर्द्वन्द अउरी प्रतीक्षा दिखाई देत बा । एक छद्मी पुरूष रंजन के भडकउले पर ओकर पति जवन प्रेम विवाह कइले रहल, उ चुप चाप घर छोड़ देला । ये कहानी में प्रेम और विश्वास के प्रति नायिका बार बार सवाल उठावेले अउरी निर्णय लिहले में कमजोर पति के प्रेम क बात बिसरा नाहीं पावेले ।

80–90 के दशक के कहानी में स्त्री करतीन पितृसत्ता के मापदंड के तोड़ के निकलले क चाहत त बा पर पूरी तरह से निकल पावल मुश्किल बा । फिर भी उनके रचना में विरोध क स्वर अउर अंतर्द्वन्द दिखाई देत बा । सुधा वर्मा, पार्वती देवी गौरा, डॉ. उषा वर्मा, बच्ची देवी, ज्योत्सना अस्थाना, डॉ. शारदा पाण्डेय, डॉ. प्रेमशीला शुक्ला, श्यामा सिंह आदि कहानी घर क चौखट लाँघ के बाहर भी निकल के समाज क भी चिंतन करेली अउर अपने अस्तित्व के प्रति सजग रहेली ।

सुधा वर्मा क कहानी 'देहदान' में नायिका पुरुषवर्चस्ववादी सत्ता के षड़यंत्र में फँसल स्त्री क कहानी हव, जवने के देह क वस्तुगत मूल्यांकन अउरी ओकरे इच्छा क अवमूल्यन भइल ह । गगन गिल लिखले बाड़ी "स्त्री देह एक भाव है" । ये कहानी क नायिका लछमीनिया के अपने देह के भाव के परे जाके अपने पति के जेल से छुड़ावे करतीन ओकरे मालिक के आपन देह सौंपे के पड़ल । अउर उ अपने देह के अपने पति क अमानत अउरी अमरबेल मान लेले, जवन अपने पति के बिना खड़ी ही नाहीं हो पायी । ये मार्मिक कहानी क जड़ मनुस्मृति में लिखल ये संदर्भ से जुड़ल बा कि स्त्री के आजीवन कवनो न कवनो आदमी के आधीन रहे के चाहीं ।

डॉ. आशारानी लाल क कहानी 'करिया कोट' क नायिका अपने सोझबकई से निकल के समझदारी से काम लेले अउर अपने पति के भौजाई के प्रेम से निकाल के आपन बनावेले ।

ज्योत्सना अस्थाना क 'बेवसी' कहानी एक महिला के बाइज्जत बरी भइले के बाद जेल से बाहर निकलले के बाद संघर्ष क कहानी हव जवन आत्महत्या करे करतीन मजबूर हो जाले । घर, परिवार, समाज सब ओके ठुकरा देला तब ओके घर से अच्छा जेल ही लागे लागल लेकिन एक बार जेल से निकलने के बाद वापस नाहीं जाइल जा सकेला । अंत में उ थक के आपन जान ले लेले । सम्मान के साथ जियले करतीन जिये वाले स्त्री क आत्महत्या नाहीं बल्कि समाज द्वारा हत्या हउव ।

डॉ. प्रेमशीला शुक्ल क कहानी 'गांवे जाए के बा' में शहर में बसल भोजपुरिया लोगन के मार के भगावल जात रहल । जे भोजपुरिया लोग सहर के अपने पसीना से सिंचले रहन । ये ही से सब भोजपुरिया एक साथ ट्रेन में लद–फद के जाये करतीन तैयार रहेन । जेके एक आदमी सलाह देला कि समस्या से भागल कवनो समाधान नाहीं हव, बल्कि समस्या क सामना करे के चाहीं ।

दूसरकी पीढ़ी क खास बात बा कि उ घर क चौखट के अंदर अउरी बाहर आवाजाही करत बा । भारतीय संस्कार क रक्षा करत के कहानी के विषय में विस्तार कइले बा ।

21वीं सदी के कहानीकार में प्रज्ञा पांडेय, डॉ. सुमन सिंह, सरोज सिंह, डॉ. सीमा स्वधा, प्रियम्बरा, डॉ. दिया, नीतू सुदीप्ति 'नित्या', रेनू यादव, रजनी श्रीवास्तव 'अनंता', शालिनी कपूर आदि क कहानी में आधुनिक समय क छाप देखल जा सकेला, विषय क विस्तार देखल जा सकेला । समाज, समस्या अउरी भाषा में अंतर आधुनिक बदलाव छन छन के धीरे धीरे आवत बा, देखल जा सकेला ।

डॉ. सुमन सिंह क कहानी 'मरून कलर सड़िया' में समय के साथ बुढ़ लोगन में परंरागत रूढ़िवादी सोच के त्याग के नये समय के साथ चलले जइसन बदलाव क कहानी हव । लइकन के सोच के साथ अगर बुढ़ लोग नाहीं बदलिहँ त लइके उनसे दूर हो जइहँ । ये कहानी में जवन अम्मा कबो अपने बेटी के प्रेम पत्र पाके ओके खूब थूरले रहली उह अम्मा नाती क प्रेम देखके अप. ने बेटी के सलाह देत बाड़ी कि लइकन के समझे के चाहीं अउर उ जेसे बियाह कइल चाह ओसे बियाह करे दीह ।

मीनाधर पाठक क कहानी 'आखिर कबले जगिहें हलकू' कहानी प्रेमचंद क कहानी पूस की रात क याद दिलावेले । खेत के नीलगाय से बचावे करतीन रामबेलास नीलगाय से मारल गइल रहअन । लेकिन भृगुनाथ पंडित खेत के बचावत बचावत नींद में सूत गइअन अउरी पूरा खेत नीलगाय चर गइली ।

सरोज सिंह क कहानी 'दलित के ?' बहुत अच्छी कहानी बा । जवन समाज के जाति–पांति अउर स्त्री क स्थिति देख के प्रश्न खड़ा करत बा कि सचमुच दलित के हव ? जाति–पांति के आधार पर बँटल अउर ब्राह्मणवादी सत्ता से पीड़ित दलित समाज आ कि कवनो भी जाति में जनमल स्त्री, जवन पितृसत्ता से पीड़ित बा, येमन से दलित केके कहल जा सकेला । ये कहानी क नायिक अंजोरा दलित समाज में जनम लिहले बा अउर ओकरे सुंदरता जइसे कि जहाँ जाले अंजोर हो जाला ओकरे देह पर सबकर नजर रहेला । घर में ससुर से लेके गाँव के मुखिया तक क वासनात्मक नजर ओकरे ऊपर रहेला । जहाँ से उ भाग के दिल्ली जाले अऊर दूसर बियाह करेले । दिल्ली में जाति नाहीं करम प्रिय ह, फिर भी जाति पाति के भेदभाव से बचे करतीन उ आपन सरनेम नाहीं लगावेले खाली अंज. ोरा नाम से दूसरे के घर में काम करे जाले । जिनके घर में काम करेले सरिता अऊरी सूजी, दूनो औरत बड़हन घर क हई । लेकिन समाज के चकाचौंध में गुम बाडी अउरी अपने घरवालन से पीड़ित भी । अपने अस्मिता करतीन छटपटात बाड़ी लेकिन स्वतंत्र रूप से फैसला नाहीं ले पावत बाड़ी । अइसन स्थिति में अंजोरा सोचेले कि सचमुच यहाँ दलित के बा, बड़हन खानदान क सरिता, सूजी आ कि दलित समाज में जनम लेके उ खुद ?

प्रज्ञा पांडेय क कहानी 'लजाधुर' एक व्यक्ति क आत्मसम्मान कहानी हव । ये कहानी में नायक भोलानाथ के आपन काम प्रिय हव । काम करत के भूख प्यास कुछ नाहीं लागेला अउर सुध बुध खो के खाली काम करेन । लेकिन एक बार कचरा साफ करत के अर्द्धनग्न अवस्था में बाबू साहब ओकर फोटो खींच के वायरल कर देन । जब भोलानाथ के पता चलेला त ओके मिटावेक कहेन । लेकिन जब उनके पता चलेला कि इ फोटो वायरल हो चुकल अउर सब उनपर हँसत बान त उनकर जान चल जाला । आज के समय में सोशल मीडिया क दुष्प्रभाव ये कहानी में दिखल जा सकेला ।

डॉ. सीमा स्वधा क कहानी 'रानी दिदिया' समाज में अन्याय के खिलाफ आवाज उठवले क कहानी हव । रानी दिदिया क बियाह दहेज के कारण नाहीं हो पावेला, अउर जीतन बहू के दहेज करतीन जरा दिहल जाला, जवने के विरोध में रानी दिदिया पुलिस अउर न्यूज चौनल के बोलावेले अउरी सच्चाई उजागर करेले ।

नीतू सुदीप्ति 'नित्या' क कहानी 'छहिरा' में नायिका रानी अपने पिता के विरोध में जाके अपने अपाहिज पति के साथ रहले क फैसला करेले, श्यामा सिंह क कहानी 'ठकुराइन मइया' एक विधवा स्त्री के हक क लड़ाई क कहानी हव, डॉ. कादम्बिनी सिंह क कहानी 'सूरजमुखी' मन से मन तक बात पहुँचले के टेलीपैथीकहानी कहल जा सकेला । 'पइया' कहानी इकोफेमिनिज्म पर लिखल गइल बा । बिम्मी कुंवर क कहानी 'पचरूखया वाली' ससुराल में प्रताड़ना सहत स्त्री–दुर्दशा क कहानी हव ।

21वीं सदी के भोजपुरी कहानी में भी कहीं भी हिन्दी के कहानी जइसन झंडा उठा के विरोध क भावना नाहीं दिखाई देत बा । येकर मतलब ह कि गाँव क यथार्थ क छाप कहानी में बा । काहें से कि शहर में हिन्दी बोलल जात बा आ कि चाहे उ केहू केहू घर में भोजपुरी बोलल जात होई जबकि भोजपुरी गाँव क भाषा ह अउरी गाँव क स्थिति अबहीन बहुत नाहीं बदलल बा । जाति–पाति, बेरो. जगारी, भूखमरी, अशिक्षा, अर्द्धशिक्षा, स्त्री, खेती–किसानी, खडंजा सब अबहिन एक बड़ा बदल. ाव करतीन टकटकी लगवले बान, इ सब कहानी में साफ साफ झलकत बा । लेकिन इ देखल जा सकेला कि 60–70 के दशक से अब तक आदर्शवाद से लेकर यथार्थवाद तक कहानी अउर कहानी क प्लॉट, शिल्प में बहुत अंतर आइल बा जवन कि भोजपुरी साहित्य क नया मानक तय कर सकेला ।

❑❑

❍ **गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय**
ग्रेटर नोएडा – 201312

चुनाव बीचे रचाव–'हर समय में हँसे धरती'

डॉ.सुनील कुमार पाठक

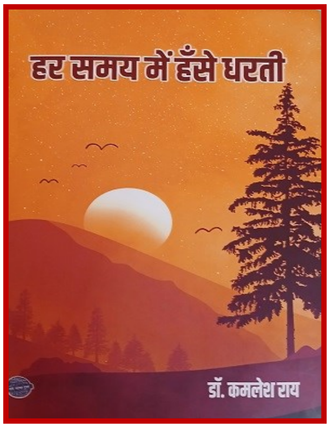

भोजपुरी आ हिन्दी के सुकवि डॉ. कमलेश राय जी के कृति – ' हर समय में हँसे धरती'–उनकर भोजपुरी के तीसरका गीत संग्रह हटे।एकरा पहिलहूँ प्रकाशित दू गो भोजपुरी गीत –संग्रह –'तोहरो बिहान दाँव पर' आ 'अइसन आज कबीर कहाँ ' के भी भोजपुरी साहित्य जगत में काफी समादर आ ख्याति मिल चुकल बा।कमलेश जी भोजपुरी के एगो अइसनका गीतकार बाड़न जेकर गीत उनका मुँहे सुने में जेतना रुचिर,रमणीय, भावपूर्ण आ कर्णप्रिय लागेला , छपल पढ़हूँ में ओतने जीवंत,कलावंत आ कुलवंत दिखेला। कमलेश जी के गीत वैयक्तिक भावना,संवेदना आ कल्पना में सनल जेतना मरम के छूये वाला बाड़न सँ ओतने मानव जीवन,परिवार,समाज आ देश –दुनियो से ओकनी के जुड़ाव रहल बा। कमलेश जी के गीतन के वैयक्तिक स्वरो समष्टिगत चेतना आ चिन्तन से भरल–पूरल रहल बा।उनका गीतन में समाहित जन–जीवन के संवेदना ,संघर्ष आ संकल्प के मुखर स्वर एतना व्यापक आ बहुआयामी संदर्भन से जुड़ल बा कि ओमें सुख–दुख,राग–विराग आ भाव–अभाव सबके समाहार संभव हो सकल बा।

'हर समय में हँसे धरती ' के 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के अमनौर अधिवेशन के तत्वावधान में '' रामनगीना राय पुरस्कार '' दिहल जाये वाला बा । 2024 में सर्वभाषा प्रकाशन ,नई दिल्ली से छपल एह गीत संग्रह में कमलेश जी अपना काव्य–प्रतिभा के ओह ऊँचाई पर ठाड़ करे में कामयाब रहल बाड़ें जवन कवनों कवि के साधना के मूल संकल्प होला।

'हर समय में हँसे धरती ' –ई शीर्षके बतावत बा कि कवि हर तरे के विपरीतता आ विसंगतियन के बावजूद समस्त मानव–समाज के कल्याण–कामना में अपना के सजग–सचेष्ट रखले बा।जहाँ हर जगे काँटन के ब्यापार फइलल होखे,जहर के कारोबार फूलल–फलल होखे, दहकत समय में जहाँ साँझो धुँआ में बोथाइल होखे,शीशमहल तक न्याय के फरियाद ना पहुँच पावत होखे –ओइसनका दौर में 'दरपन सरीखा','आँगन सरीखा','चन्नन सरी खा' ,'कुंदन सरीखा 'आ 'पाहन सरीखा' गीत लिखे के कवनों कवि अगर आग्रही बा तऽ ई ओकर सकारात्मक चेतना,सुभग भविष्य के शुभकामना आ सभसे बढ़िके मानवता के विजयिनी बनवले रखे के मंगलेच्छे मानल जाई। कवि के उत्कट कामना बा–

'' का कहीं हम आज के /दहकत समय क बात/साँझ बा बूड़ल धुँआ में /जरत बा परभात/आगि में तपिके लिखऽ/ कुन्दन सरीखा गीत। '' कविता एही तरे के साधना आ संकल्प, संघर्ष आ समन्वय के भावना हर मनइयो के भीतर जगवले चलल बा ,जवना के चलते ऊ एह सृष्टि के अनमोल रतन बनल रहे।

कमलेश राय जी के काव्य–चेतना के व्यापक फलक पर हर तरे के भाव,विचार, कल्पना, आदर्श, यथार्थ –सभके पर्याप्त स्थान मिलल बाटे।उनका काव्य–संसार में चाँद–सितारा वाला गाँव के सपना जरूर बा बाकिर ओह गाँव में फइलत जा रहल नफरत, छल,प्रपंच आ तबाही के आलमो के कवि नजरअंदाज
नइखे कर सकल। ऊ साफ–साफ कहत बा –

''सबका खातिर ओढ़न अउर/ बिछावन वाला गाँव /टूट–टूट के बिखरल/ अब घर–आँगन वाला गाँव। अँगना से भारी मन के/भीतर डँड़वार परल/छल–फरेब के धुँआ धुँध/ से हवा –बयार भरल /सुनुगि–सुनुगि के जरत नेह /के सावन वाला गाँव! '' कवि के चिन्ता बा कि टेढ़–मेढ़ पगडंडी वाला गाँवन के मन पहिले सीधुआ–सरल होत रहे बाकिर आज जब गाँव तक सीधा चीकन सड़क पहुँच गइल त एकर मन खुराफाती आ जटिल–कुटिल हो गइल बा।कवि के मन एह गाँव के बदसूरती आ बदहाली से ब्यथित त बा बाकिर निराश नइखे।कवि के चिन्ता आज ई जरूर बा कि टेढ़मेड़ पंगडंडी वाला गाँवन के लोग–बागो अब ओतने टेढ़ आ जटिल होत जा रहल बा बाकिर ओकरा ई भरोसो बा कि गाँवन के भाईचारा,आपसी प्रेम ,सहयोग–भाव , प्रेम–रिश्ता– सगरी आखिर–आखिर तक बनल रही ,कटुता के कालिमा कट जाई आ नेह–नाता

के अँजोरिया सगरो छिटक जाई–

" मन में लेके आस–गीत/सुधियन से भरल हिया/ठाँव–ठाँव पर बारि–बारि/के सगरो नेह–दिया/हम हेरीलां निरछल/चान– सितारन वाला गाँव। "

एह संग्रह में जवन भी गीत गाँव–जवार,खेत–खरिहान, खेती–बारी,मेहनत–मजूरी आदि से जुड़ल बाड़न सँ ओकनी में एगो आदर्श स्थितियन के प्रति एक तरे के अनुराग–भाव तऽ कवि में बा जरूर बाकिर ओजवा आइल बदलाव आ विसंगतियनो के देखे–परखे में तनिको कोताही करत ऊ नइखे कइले। अतीत के प्रति राग (Nostalgia)एजवा अइसनका व्यामोह के स्थिति पैदा नइखे करत कि कवि आधुनिक विकास के अस्वीकार करिके कवनों जड़ता–बोध के शिकार हो जात होखे।ऊ आधुनिक भारतीय गाँवन में आ रहल बदलाव, तकनीकी आ संचार–सुविधा के विकास से अवगत बा ,बाकिर ऊ साथही 'बाजारवाद' आ 'उपभोक्तावाद' के कुप्रभाव के प्रति आगाह कइल नइखे भूलत।कवि के गीत–पाँतिन के देखल जा सकत बा –

"डिजिटल तरजूई पर/सगरी रिश्ता–नाता तोली /जइसे ई बाजार डोलाई /ओइसे अब सब डोली।घर के भीतर हँसी बाथटब/सिसकी ताल–तलैया /अंगने ना चहकी ,दिवाल पर/साटल मिली चिरइया/ना माँगी कबहूँ अकास ईध्कबो आँखि ना खोली/लोग रही सब अपार्टमेंट में /घर हो जाई खाली/विज्ञापन में देखल जाई/होली अउर दिवा. ली/कागज पर अल्पना सजी/कागज पर सजी रंगोली/मोल –भाव बिक्री– खरीद में/जिनिगी जरी बुताई/टका सेर में बिकी आदमी /जोरत धेला पाई/हाँफि–हाँफि के हेरल जाई /सगरो हँसी–ठिठोली।"

भोजपुरी कविता पर ई आरोप लागेला कि ऊ खाली गाँव–गँवई,प्रकृति–प्रेम, देशभक्ति,श्रृंगार–प्रेम –विरह आदि तक सीमित रहे वाली कविता हियऽ बाकिर कमलेश जी के गीतन में गाँवन के प्रति अनुराग–भाव के साथे–साथे, गाँव आ नगर– दूनू के बेचौनी ,तबाही आ चुनौतियन के यथार्थपरक चित्रण देखे के मिलत बा जवन सार्थक रूप से सोचे–विचारे के साथ–साथ मानवीय संवेदना के जगावे वाला बा। अपना गीतन में भोजपुरी अंचल के किसानी जीवन के तंगिश आ लाचारी के साथे–साथे ओकरा जीवट आ संघर्ष के आवाज पुरजोर बनावे में गीतकार कमलेश जी पीछा नइखन रहल–

"हाँफि–हाँफि के जाँगर तोड़े/करम कुदारी किस्मत कोड़े/करजा चढ़ले रहे कपारे/सगरी उमिर घटावे –जोड़े/ सुख के सपन नीन भर बाटे/दुख बाटे दुनिया जहान क/××× कुँआ खोद के पानी पीये/मन राखे गंगा नहान क /ढेर गँवावे थोरे पावे /सगरी जिनगी आस जोगावेध्मन भीतर पीरा अभाव कध्हँसि–हँसि सबद–रमैनी गावे/अनगिन फिकिर रहे माथे पर/पगरी बान्हे स्वाभिमान क /बजर करेजा बा किसान क।"

कवि के सामाजिक प्रतिबद्धता के स्वर बहुत स्पष्ट आ गरीब, पीड़ित, सुख–सुविधा से अभिवंचित, निर्बल–निरीह जन के साथ पूरा ईमानदारी आ निडरता के साथ ठाड़ बा।सामाजिक शोषण ,असमानता ,उत्पीड़न आ अन्याय के विरुद्ध कवि के स्वर में तल्खी ले जादे एगो संवेदनामूलक पक्षधरता दिखाई पड़त बा जवन सामाजिक समरसता बहाल राखत न्याय के साथे अशक्त जन के बहुमुखी विकास के वोकालत करत बा।कमलेश जी के सामाजिक संवेदनशीलता आ चिंतन से जुड़ल कुछ पाँतिन के देखल जा सकत बा–

1–"कहीं खात–खात देखीला अघात बा केहू/जाबि–जाबि मुँह कतहीं लोरात बा केहू/रही रोटी–दाल केहू के मोहाल कबले /केहू जाँगर ठेठावे में सुखाइ देला चाम /केहू सेठ–साहूकार बनि भरेगा गोदाम/धोती रोई,टोपी होई मालामाल कबले/××××बाटे कइसन ई बिधि बाटे कइसन बिधान /केहू भुइंया परल केहू छूवे असमान/भला अइसे चली ऊँच–खाल कबले?"

2–"भरल पेट जेकर बा /ओकरे नावें रोटी बा /अब त एजहां नया तौर क /कफन –खसोट बा।रोज मरे बुधिया घुट– घुट के /भरल जवानी में /बदलल मौसम मन मिजाज/बदलल चन्नन रोटी /भाग भरोसे अबहीं जिनगी/काट रहल बा होरी।"

ऊपर के दूनू उद्धरण में अमीरी –गरीबी के खाई पाटे में हो रहल देरी पर व्यक्त चिंता ले जादे कवि के आगाही एतना पुरजोर बिया कि ओकर सवाल–"ऊँच– खाल कबले ?"– हर मनई के सवाल बन जात बा।एही तरे दूसरका उद्धरण में कथाकार प्रेमचंद के दूगो कथा –पात्रन के प्रतीकात्मक प्रयोग के जरिये समाज में गरीबन के हालत देखावत ई साफ तरे सँकारल गइल बा कि एकनीं के जिनिगी अबहियो भागे भरोसे बा।

एही तरे कमलेश जी अपना गीतन में नारी–जीवन के जवन चित्र उरेहले बाड़न ऊ आज के वास्तविकता से पूरा तरे जुड़ल बा।नारी–जीवन के पीड़ा आ संत्रास से जुड़ल एगो गीत के पाँतिन के पढ़ि–सुनि के कवनों कठकरेजियो के हियरा पघिले लागी–

''चुपे–चुपे रोवलीं,दर्द पीर सहलीं/केहू से कुछऊ ना कहलीं/पिया हो माथे अँचरा जोगवलीं।/झंकहूं ना पवलीं दुआरी के बहरा/गतरे– गतर में लगल मोरा पहरा/नाक में नथुनी गोड़े में गोड़हरा/गोवा में हँसुली पहिरलीं /मन में रहल कि सुरुज–रूप दे खतीं/भोरे फूलबाग में तितिली निरखतीं/उड़त चिरइयन संग उड़ले क सपना /मनवा में सजलीं –सँवरलीं/सांसते में संसिया रहल दिन–रैना/रहलीं मों बनिके पिंजरवा क मैना/पिंजरे में रहना पिंजरवे में उड़ना /पिंजरे भर पंखिया पसरलीं/अंखियन में दूनो कुल क पानी/कबहूं जेठानी त कबो देवरानी/सासुजी क महना ,ससुर के ओरहना/ननदो क नखरा उठवलीं/बिटिया जो हो. इहें त थरिया बजाइब /अंगने उछाहे क लेना लुटाइब /अब ना गुनब कवनों बन्हना, बरजना/अबहीं ले बहुते निबहलीं।''

–ई पूरा गीत नारी –जीवन के पुरहर रूप में सामने ले आवत बा। मैथिलीशरण गुप्त जी कबो कहले रहलें कि ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी /आँचल में है दूध और आँखो में पानी।'' अर्थात आँचल में मातृत्व भा ममत्व आउर आँखिन में आँसू भा पीड़ा–नारी–जीवन के इहे पहचान बा। कमलेश जी नारी लोग के ओह आँखिन में एगो चीज आउर निरेखले बाड़न ऊ बा– ''दूनू कुल क पानी '' । दूनू कुल के मरजादे जोगावत स्थिति इहाँ तक पहुँच गइल बा कि ''पिंजरे भर पाँखि पसारे के लाचारी से नारी आजो जूझ रहल बाड़ी।बाकिर गीत के आखिरी बंध तक आवत–आवत कवि बेटियो के जनम पर थरिया बजावे के संदेशा देत अपना नारी–चिंतन के विद्रोह आउर क्रांति के ओह मुकाम ले पहुँचा देत बा जवन आज के आधुनिक जुग आ जमाना के एगो वाजिब जरूरत आ पुकार बा–''अब न गुनब कवनों बन्हना ,बरजना।'' कमलेश जी के नारी विषयक गीत –चेतना उनका एह संग्रह में ओह ऊँचाई पर पहुँचल दिख रहल बिया जहँवा कवि समय आ समाज के हकीकत आ जरूरत बनल रहला के साथे–साथे , बन्धन आ बरजन से मुक्ति के आधुनिक चिंतन आ वैचारिक आग्रह से गलबाँही करत, अपना गीतन के ऐकान्तिक वैयक्तिक आत्मानुभूति से उबारत –व्यापक सामाजिक संदर्भन से जोड़े में सफल हो गइल बा। कमलेश जी के एह संग्रह के 'मैना ' शीर्षक गीतो बड़ी मार्मिक बन पड़ल बा जवना में ऊ पिंजरा से बाहर आके आसमान के नापे के निहोरा आ कामना करत बाड़ें–

''कबले रहबू पड़ल अलोता /बेर भइल अब छोड़ऽ खोंता /सोझा तोहरा आसमान बा /देखऽ आँखि उघारऽ मैना /अब तऽ पाँखि पसारऽ मैना ! ×××अपना बदे राह जोहऽ तू आपन ठाँव बनावऽ /हर मौसम खातिर अपना/ माथे क छाँव जोगावऽ/मन भीतर तोहरा उड़ान बा /हाथे में सगरी जहान बा /नया समय क सपना सिरजऽ/संचय धरऽ ,ओसारऽ मैना!''

–साँच बात तऽ इहे ह कि ''मन के हारे हार है , मन के जीते जीत।'' जाँगरो तबे साथ देला जब मन आपन डेग पहिले उठा लेला।कवनों तरे के परवशता के पाश तबे टूटी जब मन उड़ान भरे के सोच ली।आ जब मन ठान ली तऽ फेर के रोक पाई? एह संग्रह के एकमात्र गजल के एगो शेर में कवि साफ कर देले बा– ''हिम्मत रहे त आदमी असमान चूम ले /बाटे कवन बिसात ए पाथर–पहार में।'' नारी –स्वतन्त्रता के बात करे वाला कवि अपसंस्कृति से बचत भारतीय संस्कृति के मरजादो आ आदर्श के जोगावहूँ के बात करत बा –ई सबसे बड़हन बात बा।

आज सामाजिक जीवन में रहे वाला कवनों आदिमी भा कला का बिना कवनों राजनीतिक चेतना के प्रबुद्ध भइल कठिन बा।राजनीति से परहेजो आज एक तरे के राजनीतिये मानल जा रहल बा।अइसनका समय में कवनों कवि अपना गीत भा कविता में कवनों राजनीतिक निहितार्थ लेके सामने हाजिर हो रहल बा तऽ ई ओकर ओकर स्वाभाविक संस्कारे मानल जाई। अपना कतिपय गीतन में देश आ देश के शहीद आ सपूत के इयाद करत राष्ट्रीयता के महोच्चार करेवाला कवि कमलेश जी के राजनीतिक चेतनो बहुते संतुलित आ व्यापक हित के बात करेवाली बिया। उनकरा एगो गीत के पाँतिन के देखल जा सकत बा जहवाँ राजनीति के जाति आ धर्म से हो रहल गठजोड़ के ऊ एगो व्यावसायिक–व्यापारिक व्यवहार मानत बाड़ें–

''जाति धर्म कुनबा जमात क /गढ़े रोज परिभाषा/जिनगी के सवाल खातिर/ना भाव न कवनों भाषा /कारोबारी आग –धुँआ क /चन्न–लेप लगावे आइल।×××जादू का झप्पी दे दे के /सबके मति भरमावे /सोधि–सोधि के दाना डाले /सगरो जाल बिछावे/उठऽ जाल चिन्हऽ ए भाई /फिर ऊ तोहें भोरावे आइल।''

अइसनका बेबाक टिप्पणियन के जरिये कवनों कवि अगर राजनीतिक छल–छद्म के विदारे के कोसिस अपना गीतन के जरिए करत बा त ई मानल जाये के चाहीं कि उनकर गीत खाली कोमल अनुभूतियन आ आत्माभिव्यक्ति के मधुर

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

अवलेहे भर नइखन सँ, बलुक ओकनीं के तेजाबी तजुर्बा आ तल्ख अंदाज कुछ अइसनका बा कि ओह से जुरते आँखि खुल जाई ,सगरी भरम टूट जाई आ सगरी तिलिस्म आ जादूगरी के अँगूठा देखावत सच्चाई सभके सामने आके आसन मार ली।

गीतकार बाजारवाद आ भौतिकतावाद के कुचक्कर में पेरात–गरात जा रहल आम मनई के बदहाली से पूरा तरे परिचित बाड़ें।ऊ जानत बाड़ें कि महँगाई–डाइन का–का,केने–केने आ कइसे– कइसे खात–पधोरत जा रहल बिया।ऊ कहत बाड़ें–

''जाँगर जीवन जरा के केहू /केतनो करे कमाई/झार पोंछि के चाटि जात बा/ई निठुरी महँगाई। ''

अर्थतंत्र के शोषणपरक निठुराई आ अपना वास्त. विक जरूरत के बीच संतुलन ना बनाके चलला पर एह भौतिकतावादी दौर में मनुष्य के ना केवल सुख–सुविधे पर खतरा के बदरी मेंड़राये लागी बलुक ओकर भाव–संपदो लुटाये लागी ,अस्तित्वो हेराये लागी।भाव–जगत आ संवेदना के संसार सिकुड़त देखिये के कवि जादे चिन्तित बा आ इहे कारण बा कि ऊ हर जगे आस–भरोस, भोर–अँजोर के दामन थम्हले नजर आवत बा –

''वेदना संवेदना पथरात/देखीं हर कहीं/शब्द बा बेकल कहीं/बेचैन बा आखर कहीं/हार के एहसास से हम /आस लेके जीत सिरजीं।''

हार के अंदेशा रहला के बावजूदो जब आस भरल हियरा से जीत के ओर मनई डेग बढ़ा दी तऽ ओकर साधना आ संकल्प देखि के सफलता–सुन्दरी खुदे ओकरा के बरमाल डाल दीहें।

कवि कमलेश जी के गीत–संसार में इहे आस आ विस्वास के बिरवा एतना छतनार बा कि ओकरा सघन छाँव में कविता के हर तरे के रूप–लावण्य , साज–सज्जा,रस–पेशलता,अयत्नज अलंकृति ,भाव–माधुर्य, विचार –नैपुण्य स्वतः सहज रूप में हेरल–बिटोरल जा सकत बा।एजवा अनर्गल बिम्ब आ प्रतीकन के प्रयोग के जरिये चमत्कार आ नाहक नवता देखावे के आतुरता नजर नइखे आवत,इहाँ जवन कुछ काव्य– सौन्दर्य आ सौष्ठव बा ऊ सहज स्वाभाविक रूप में कवि के काव्य–प्रकृति में रचल–बसल ,घुलल–मिलल दिखत बा।अपना एही कामयाबी से कमलेश जी के गीत गमक उठल बाड़ें सँ । एह कवि में भोजपुरी कविता के सुन्नर–सुघर रूप आ भाव–सौन्दर्य के निरखल–परखल जा सकत बा।बहुत–बहुत बधाई बंधुश्रेष्ठ!

❑❑

❍ **फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस**
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।

जनवादी झलक के संगे माटी के गीत 'हरियरी रोपत हथेली'

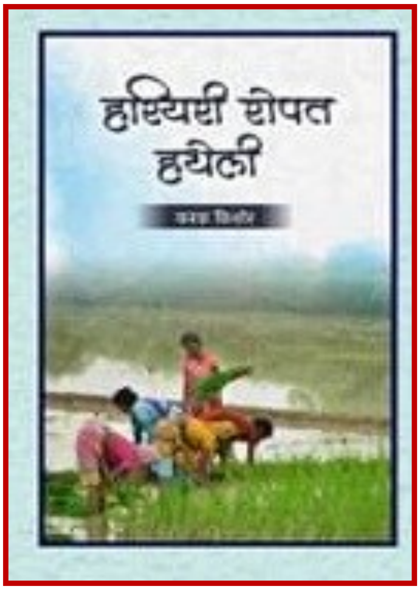

आदरणीय कनक किशोर जी से हमार पहिल संवाद भोजपुरी के पितामह स्व० चौ० कन्हैया प्रसाद सिंह जी के किताब भेजे खातिर भइल रहे। ओकरा बाद गवें गवें उहाँ के रचना भोजपुरी साहित्य सरिता में प्रकाशित हो खे खाति आवे लगली सन। ई क्रम अजुवो अबाध रूप से चल रहल बा। जवना के परिणाम आज उहाँ के पहिल काव्य संकलन 'हरियरी रोपत हथेली' का रूप में हमनी के सोझा बा। ई काव्य संकलन अपना में कविता, गीत,गजल, सनेरयू,हाइकू आ जापानी तर्ज के कविता संजोवाले बा। एह किताब के प्रकाशन में सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन के मेहनत नीमन से सोझा आइल बा, जवान सराहे जोग बा।

हम मानिले कि जब केहु अपना मातृ भाषा में लेखनी चला रहल बा, त ओकरा के सनमान से देखे,पढ़े आ समुझे के चाही। ई

केहु नइखे जानत कि ओकरा लेखनी क धार कब चो खगर होके अइसन सिरजना क देही, जवना के पढ़े खाति बेकल हो जाई लो। अइसने एगो नवही सृजन जतरा 'हरियरी रोपत हथेली' बा, जवना के आजु चरचा कइल जा रहल बा।

'हरियरी रोपत हथेली' अपना भीतरि समाज के ओह लोगन के पीड़ा पर चलल लेखनी से निकसल रचनवन के संजोवले बा, जेकरा के सर्वहारा कहल जाला। अगर हम श्री कृपाशंकर प्रसाद जी के विचार पर नजर डालीं त ओहमे जनवाद के झलक के बात तर्क का संगे स्वीकार कइल गइल बा। उनुका बिचार से असहमत होखे के कवनो विशेष कारण ना हो सकेला बाकि रचनाकार अपना के हर वाद से अलग राखे के बात कहत स्वीकरले बाड़ें–

''लेलिन अउर मार्क्स के नइखी पढ़ले
सर्वहारा के सिद्धांतो ना जानी
विशेषज्ञता कहाँ बा कुछ के
बाकिर देखले बानी
आपन बनिहार ललन कहार के जीयत
आ रकटू चा के मुअत।''

रचनाकार के भावना के आउर खुल के देखल जाव–

''हम जनवादी ना हईं
बामपंथ होखे चाहे दक्षिण पंथ
ना प्रभावित कइलस आज ले
धर्म निरपेक्षता के ढोंग ना आवे हमके
राम मंदिर आ बाबरी मस्जिद
एके जस भावेला
बाबरी टूटला पर ओतने दर्द भइल
जतना राम मंदिर ना बनला के।''

किसान आ मजदूर के पीड़ा पर रचनाकार के लेखनी के जादू देखीं–

''खेत कारखाना के मक्का मदीना समझनी
बाकिर ना भेंटाइल
एक मुट्ठी अंजोर
ई देख के मन रो देला।''

एह संग्रह में गीत पारंपरिक धुनन के संगे बाड़ी सन। सनेरयू में वैश्विक महामारी कोरोना से उपजल स्थितियो पर नजर गइल बा–

''कबले चली खेल
कोरोना
विश्व आफत में।''

आजु के सामाजिक परिवेश पर प्रहार करत हाइकू देखीं–

''बेटा भतार
कहाँ केहू आपन
कलयुग ह।''

आ विविधा से देखी–

''मेहरी के राज बा
मरद चूप
माई बाबू किनारे।''

अइसना में ई कहल बेजाँय ना कहल जाई कि 'हरियरी रोपत हथेली' अपना में अतना कुछ समेटले बा, जवना के हर भोजपुरिया के एक बेर जरूर पढ़े के चाही। रचनाकार के लेखनी दिनो दिन चोखगर हो रहल बा। भविष्य में भोजपुरी माई के भंडार भरे में आगही रही। एकरा संगे रचनाकार भाई कनक किशोर जी के पहिल संग्रह 'हरियरी रोपत हथेली' खाति अनघा बधाई आ शुभकामना।

पुस्तक का नाम–'हरियरी रोपत हथेली'
रचनाकार– कनक किशोर
मूल्य–रु 250/– मात्र
प्रकाशन– सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन
नई दिल्ली

❑❑

❍ **गाजियाबाद,**(उ0 प्र0)

सुघर, सचेत आ माटी के कवि: शशि प्रेमदेव

कनक किशोर

प्रेमदेव मानवता के प्रेमी होले। प्रेम विहीन लोक कवना काम के। ढाई आखर बिनु सब सुन रे भाई। आजु समाज में जे आपसी ताप आ तनाव बढ़ल बा ओकरा पीछे प्रेम बगिया के सूखलके कारण बा। शशि शीतलता के द्योतक ह बाकिर शीतलतो में हुल हुलावे के ताकत होला, नरमो के आपन गरमी होला शशि प्रेमदेव के कवितन से गुजर के एह बात के खूब महसूस कइल जा सकेला। एहिजा शशि प्रेमदेव के कुछ कवितन के समझे – बूझे के आ ओहि पर तनिका बतकही के प्रयास कइल गइल बा।उहां के कवितन में सामाजिक संचेतना, मानवतावादी लोकगंध आ माटी के खुशबू महसूसे के कोशिश कइल गइल बा।

शशि प्रेमदेव के लेखनी आ मंच प्रस्तुति से सोशल मीडिया के माध्यम से खूब परिचित रहीं बाकिर पाती के टटका अंक 105 – 106 में उहां के छव गो कविता पढ़िके मन भइल कि उहां पर कुछ लिखे के जरूरत बा। शशि प्रेमदेव पर विष्णुदेव तिवारी के कहल बात इयाद आ गइल –

''बात कहे के आपन लूर बटुए
बातो कहे के सहूर बटुए।
अइसनो ना कि गोड़े बा घुघ्घुर
तबो, छबि बा कि असली हूर बटुए।।''

कवनो रचनाकार के रचनन पर बतकही सांच पूछीं त ओकर सृजन आ परख दूनों के अपना में समेटले रहेला। रचनाकार के कृतित्व पर ओकर व्यक्तित्व आ परिवेश के बहुते प्रभाव होला।

बहुविध जीवन के चिरंतन सवालन से मुठभेड़ करत खाड़ कवि:

शशि प्रेमदेव के रचनन से गुजरला पर जिनिगी के राह में आवे वाली कठिनाई, समाज आ सत्ता के बिगड़त जा रहल रूप आ धरम के खाड़ कइल भरम दिखाई पड़ेला उहो खुल के परदा के भीतर में ना। कहीं कहत बाड़े –
घर में सुघ्घर बेटी... मतलब
सांसत में बेवा – महतारी।

त कहीं परिवेश में बदलाव के सामने र खत बाड़े –
हाहाकार मचल जंगल में
जसहीं चलल शहर से आरी।

धर्म–मजहब के आड़ में रोपल जा रहल लड़ाई पर व्यंग करत सचेत करत कवि कह रहल बाड़े –
मुहब्बत अयोध्या के झगड़ा त हऽ ना
कि राजा आ परजा ले फायदा उठाई।

देश में जनसंख्या विस्फोट के घ ातक बतावत शब्द के देखीं –
आबादी पर जबले अंकुश लागी ना
तै बाटे भारत कऽ किस्मत जागी ना।

गोरख पाण्डेय के सपना गंवे – गंवे समाजवाद ले आवे के रहे बाकिर कवि शशि प्रेमद. ेव के बदलत समय आ राजनीति में लूट के देखत समाजवाद के साइकिल पर ढोवे वाला बुड़बक बुझात बा तब त आजु के राजनीति पर व्यंग करत कहत बाड़े कि –
कुर्सी के तूहूं कल्पवृक्ष बूझऽ!
गाँधी के छोड़ऽ, तिजोरी के पूजऽ!
बनि जा बे – सरम ' शशि 'दूनो हाथे
लूटऽ बिटोरऽ कि सात पुश्त खाई!
समाजवाद सइकिल प' कबले ढोवाई!

प्रेमदेव जी प्रेम के ताकत बतावत कह रहल बानीं कि –
नेह छोह से बढ़ि के कवनो ताकत नइखे दुनिया में
तितली के आन्ही में देखऽ, कइसे फूल सम्हरले बा।

आजु के समय के सच्चाई के साथ कदमताल

कवि शशि प्रेमदेव आपन कविता, गीत आ गजल के माध्यम से समय के सच्चाई के साथ कदमताल करत हमनी के बीच उपस्थित बाड़ें। उहां के कविता मानवता के सामने खड़ा संकटन के पाठकीय चिंता के दायरे में ले आवे के महत्वपूर्ण काम कइले बा। कवि के रचनन से गुजरला पर कहल जा सकेला कि शशि जी के

कवितन कवनो लीक विशेष पकड़ के चले वाला ना ह आ नाही एक रेखीय।उहां के रचनन में समय के सच्चाई के कई गो परत देखे के मिल. ला।रचनन में उपस्थित इहे विविधता ओकरा के एक रेखीय ना रहे देवेला। डॉ. अशोक द्विवेदी के कहल ह कि ' समय के सच्चाई के समझे –बूझे आ जाने के बाद ओपर सीधा कमेंट ना कइ के, परोक्ष कहल आ सांकेतिक टोन कहल गजलकार के खासियत होला, आ ई खासियत शशि प्रेमदेव का कवितई में बा '। शशि प्रेमदेव के कवितन के देखि ई स्वीकार करे में कवनो हिचक ना होई शशि जी सामाजिक सरोकार से जुड़ल कवि हवें आ समाज आ समय के समस्या उहां के सरोकार आ लेखन में भरपूर मौजूद बा।

शशि जी के एगो गजल के एगो शेर में छुपल आजु के समय के सच्चाई आ व्यंग्य के तीखापन देखीं –

साँच के कइसे छिपावल जा रहल बा, देखिल'
लाश के पानी चढ़ावल जा रहल बा, देखिल'।

समरथ के नहीं दोष गोसाईं – सब दिन रहल बा। आजुवो कहां बदलल ऊ रीत।एह सामाजिक स्थिति प कवि के कहनाम –

दिन–दहाड़े अनेति समरथ के
देखियो ली त' का करी केहू।

धरम के बाजार में फइलल अराज. कता आ आदिमी के आदिमी से बढ़त दूरी देखि कवि चुप नइखे रहत आ इहे नूं कवि धरम ह –

धरम का नाम पर जारी रही उत्पात कहिया ले
डेराई आदमी से आदमी के जात कहिया ले।

समय के बदलाव के चलते अन्हरिया अँजोरिया पर हावी बा। उल्टा गंगा समाज में बह रहल बिया। कवि ई स्थिति के डेगे डेग अनुभव करत बा तब त कहत बा –

पीठ सूरुज क' के तरे ठोकीं
मोंछि अइँठत अन्हार बा आजुवो।

आजु के राजनीति आ सत्ता पर कवि के तीखा व्यंग्य एह शेर में देखल जा सकेला –

अजबे नूं अबरी के पहरेदार भेंटाइल बा
पहरा देता बाकी दूनो आंखि मुनाइल बा!

माटी से जुड़ल कविः

माटी लोक के प्रयाय होला, देश के प्रयाय होला। माटी से कटल कविता कालजई ना हो सके। माटी से जुड़ल कविता लोक गंध अपना में समेटले रहेला काहे कि ऊ परिवेश आ मनई से जुड़ल रहेला। शशि प्रेमदेव एगो माटी से जुड़ल कवि हवें जेकर कविता लोकगंधी होला।उहां के गजल होखे भा गीत ऊ लोक के बाति करेला। लोक में फैलल अन्हरिया पर बाति करेला बाकिर अँजोरिया खोजे के राहि देखावला, अनेत पर चुप ना रहे,देश हित के बाति करेला आ स्व में ना अझुराइल रहेला, सर्व के बाति करेला। शशि प्रेमदेव माटी के सरोकार आ बहुरंगी प्रकृति के उजर – करिया में देखे के बजाय ओकर सब रंगन के देखे के कोशिश कइले बाड़ें जे उहां के लेखन के बहुरंगी त बनावते बा साथे विशेष गहराई देके व्यापक बनावत बा। अपना परिवेश के स्थिति पर कवि के गहिर नजर रहत बा तब त कहत बाड़े कि –

हम बुझलीं – हे दूध सुगंधित
साबित भइल फिनाइल दुनिया।

तिलकहरू बनिके जब गइलीं
केतना नीक जनाइल दुनिया।

कइसे नयकी नसल के सौंपीं
पिलुआ परल, किराइल दुनिया।

बाकिर कवि के चिंता अंतिम शेर में स्पष्ट बा कि अगली पीढ़ी के ऊ सड़ांध से भरल जगत नइखन सौंपल चाहत।ई उहे सोच सकेला जेकरा सर्व के चिंता होखे।जब लोग आजु अपना खातिर चांद के चक्कर में रहत बा कवि के अगलो पीढ़ी के चिंता सता रहल बा। माटी से जुड़ल एगो कविये ई कह सकेला जे शशि जी कह रहल बाड़े –

फेंड़ झुराई ना जिनगी के, जहिया ले
बा हरियर असरा के एगो पात 'शशी'।
बनि के दीया जरे के आन्हीं में
भूत सिर पर सवार बा आजुओ।

ई एगो जमीनी कवि कह सकेला।ई उहे कवि कह सकेला जे अपना आँखिन में धूप भरले रहेला आ सूरज के अनुपस्थितियो में अन्हरिया में लुकाइल समाज के व्यथा के खोजि सामने रखे के ताकत रखेला। अतनो साहस आ माटी के सरोकारी कवि माटी के बिगड़ल गति आ चाल देखि ई कहे पर विवश बा कि –

हम का बीनब रउआ के फाँसे खातिर जंजाल 'शशी'
हम त' अपने अझुराहट सझुरावे सीख रहल बानीं।

माटी के दरद माटी से जुड़ल मनई महसूस कर सकेला। शशि जी के चिंता बा माटी खातिर शहिद होखे वाला जवान आ देश में पल रहल अलगाववादी तत्वन से। देखीं दूगो शेर –

कबो घाटी, कबो जंगल से आई गाँव में हमरा
तिरंगा में लपेटल लाश के सौगात कहिया ले।
पुजाई पाँव कबले, ए 'शशी' अलगाववदियन के
दिआ के सामने सूरुज चियारी दाँत कहिया ले।

कवि के माटी से जुड़ल अनुभूति भंडार के एगो नमूना –
मूँजि कहल जाला केकरा के – तू कइसे जनबे
का कबो पतलो से तहरो देंहि चिराइल बा?''

शशि प्रेमदेव के माटी से लगाव, माटी के प्रति मोह के एगो बाति करत हम कहब कि कुछ समय पहिले सोशल मीडिया से जानकारी मिलल कि शशि प्रेमदेव संभवतः अंग्रेजी के एगो निःशुल्क कोचिंग सेंटर अपना शहर बलिया में खोलले ह स्थानीय विद्यार्थियन के मदद करे के उदेस से। प्राचार्य के रूप में आपन प्रशासनिक आ अध्यापन के व्यस्तता के बावजूद एह तरह के पहल अपना माटी के मजबूती प्रदान करे के कोशिश कहाई ।उहां के ई काम उहां के सामाजिक सरोकार से जुड़ाव त बड़ले बा साथे समाज खातिर अनुकरणीय आ प्रणम्य बा।

कवि कर्म में निपुण आ कवि धरम के निर्वाहकः

लोकमानस के आशा, आकांक्षा, सपना आ आदर्श के अभिव्यक्ति होला कविता जे लोकजीवन के संपूर्णता में ओकर सहचर होखेले। देश और काल में जहाँ तक ले लोकजीवन के पैसार बा, कविता साक्षी के रूप में ओकरा के अपना में समेटले रहेला। लोग का सोचेला, कइसे सोचेला, का चाहेला, केकरा के सराहेला आ केकरा के निषिद्ध मानेला ओकरे के एगो निपुण कवि लोक से जुड़ल अनुभूति के थाती के अपना रचना में रा खेला आ इहे कवि धरम ह।कवि धरम लोकमंगल ह। सभके भला में जे भला बा ओहि से बढ़के दुनिया में कवनो भला नइखे। रचनाकार लोकमंगल के दृष्टा ह आ इहे गुण कविता के अध्यात्म ह।एगो सुघ्घर कवि जहाँ लोकमानस से जुटेला ओहिजे ओकरे से आपन रचना के संस्कारित करेला। लोकदृष्टि राजमहल आ झोंपडी में एके जइसन सुख–दुख देखे के अभ्यस्त होला। शशि जी के लोकदृष्टि आ रचनन के संस्कार लोक चेतना के संवाहक बा एकर गवाह रचनाकार के रचना खुद बा।आजु सब जगह अमन चौन चेन में जकड़ल बा, शब्द पर पहरा बइठल बा तबो शशि प्रेमदेव के लेखनी हुले लेले करे पर उतारू बा व्यवस्था के। व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करत बा,अनेत के विरुद्ध आवाज उठावत बा, माटी के दरद सुनावत बा, परिवेश आ पर्यावरण पर बतियावति बा, समय आ संदर्भ के सच्चाई से रूबरू करावत बा, अपना के कवनो वाद से दूर रख मानवता के गीत गावत बा शशि के कवितई।उहां के कविताई कहत बा कि हम एगो निपुण कवि के कलम के उपज हई जे कवि धरम के निर्वाहक ह।

एगो आपन आलेख में शशि प्रेमदेव कहत बाड़े कि ' एह लेख के लिखला के मकसद ई इयाद दिआवल बाटे कि हमनी के एकइसवीं सदी में जी रहल बानीं जा ! अगर एतना पढला–लिखला, देखला–सुनला आ भुगतला का बादो हमनीं का अपनी कबिलाई–बर्बर संकीर्ण मानसिकता से अपना के मुक्त नइखीं जा कर पावत ,त एह से ना खलिसा इन्सानियत के बलुक परमात्मो के अनादर हो रहल बाटे. वइसे जवना मनुष्य भा समुदाय में ईश्वर–अल्लाह–गाड के एह वैविध्यपूर्ण दुनिया के सम्मान करे के समझ नइखे, ऊ कब्बो ओह सुप्रीम पावर के सम्मान ना कर पायी. एह से हमनी सभे के भेंड़–बकरी के झुंड नियर आचरण कइल छोड़ के, मनसा–वाचा–कर्मणा आ देश सभ्य–विवेकशील मनुष्य लेखा आचरण करे के चाहीं . हमनी के कवनो धरम के अनुयायी होखीं जा , अपना मातृभूमि के एकता–अखंडता आ जन–सामान्य के भलाई हमनी खातिर सर्वोपरि होखे के चाहीं. हमनीं के अतीत केतनो दागदार होखे, हमनीं के वर्तमान साफ–सुथरा होखे के चाहीं. सबसे जरूरी ई बाटे कि हमनीं के एह अति खतरनाक धारणा से कि 'सज्जी बुराई दोसरा में, हमहन में एकहू ना !' ई कवि के लोक दृष्टिकोण के परिचायक बा, मानवता पूजक के परिचायक बा, लोक हित के परिचायक बा। कवि के निपुणता आ कवि धरम के निर्वाह के एकरा से बड़ का बात होई।

सुघ्घर आ सचेत रचनाकारः

डॉ। विष्णुदेव तिवारी के कहल ह कि ' भोजपुरी में बढ़िया गजल लिखेवाला लोग ढेर नइखे। जे ढेर नइखे, ओहमे एगो महत्वपूर्ण नाँव बा शशि प्रेमदेव के। प्रेमदेव महत्वपूर्ण एह से बाड़े कि उनका अपना स्थिति के बारे में कवनो अझुरहट नइखे। उनकर पढ़वइयो उनका के लेके कवनो भ्रम में ना रहे काहें से कि उनकर रचना कवनो

गरगट विचारधारा के प्रचार ना, आदमी आ ओकरा जद्दोजहद से निकलल आचार–विचार ह।' एह बतिया के सकारे में हमरो कवनो संशय नइखे।एकर प्रमाण शशि प्रेमदेव के लेखनी से उपजल गजल बाड़ी सं। शशि प्रेमदेव के भोजपुरी गीतो सभ शिल्प आ कथ्य दूनो दृष्टि से ओतने सुघ्घर दिखाई परताड़ीसं। शशि प्रेमदेव के गजल पर बाति करत बलभद्र के कहनाम बा कि ' भोजपुरी गजल में मोथा आ मूंज के अवाई एह बात के सुखद सबूत बा कि भोजपुरी गजल अपना भाषा – भूगोल के प्रकृति आ संस्कृति से नया मन–मिजाज के साथे संवाद बना रहल बिया।' ई कवि के अपना शब्द के प्रति सचेत रहे के साथे समाजो के सचेत करे के दृष्टिकोण के परिचायक बा। शशि प्रेमदेव के सृजन यात्रा से गुजरला पर दिखाई पड़ेला जिनिगी के राह में केतना उबड़–खाबड़ बा, केतना उतार – चढ़ाव, घुमाव – फिराव बा। जिनिगी के गीत एगो सजग, सुघ्घर आ सचेत गा सकेला। अंत में इहो कहब कि शशि प्रेमदेव साहित्य के ' भीड़– भारत ' के अंग ना हवें, उहां के गजल आ गीत के माध्यम से आपन एगो विशेष पहचान रखींना भोजपुरी साहित्य आ कवि मंच पर।भोजपुरी साहित्यांगन में अइसन सुघ्घर आ सचेत कवि शशि प्रेमदेव के भरपूर स्वागत होखे के चाहीं।उहां के साहित्यिक सक्रियता असहीं बनल रहे इहे ईश्वर से कामना बा।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

उचरत हरिनन्दी के पीर के बहाने से

हरिनन्दी भा हरनंदी अब ई नाम बिलम गइल बा। विरले लोग होई जेकरा के ई नाम के महातम मालुम होई। अंग्रेजन के दिहल अपभ्रंश नाम हिंडन से सबके परिचय बा। ई उहे हरिनन्दी नदी हई जे सहारनपुर के पास से निकल के आ चार सौ किलोमीटर चल के गौतमबुद्ध नगर माने नोएडा के पास यमुना से भेंट करेली। बाकि एह नदी पर जइसे राहू के साया होखे, आपन जनम स्थान से निकलते कईगो शहर के मैला आ कल–कारखाना के गाद अपना माथे ढोवे लागेली। देह गल के जइसे ठठरी हो जाला ओइसहीं इहो नोएडा पहुँचत–पहुँचत नदी से नाला बन जाली। अइसन नाला जवना में जलीय जीवन नील–बट्टा–सन्नाटा बा। कल–कल के गुलजार से ले के थथमल दलदल के बदबूदार जिनगी जियत हरनंदी आह से कराहे आ कुहुके ली। बाकि ई आह आ कराह के सुनेवाला के बा ? आ केकरा से कहल जाव। हाल– 'सुनी अठिलैहैं लोग सब, बाँट न लीहें कोई!'

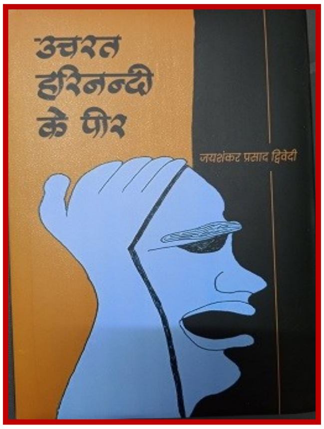

त केकरा आगे रोअल जाव। अब त दरद के आलम ई कि रोअत–रोअत हंसी आ जाता। दरद आ दरद देवेवाला दूनों पर हँसी आवेला। हरिनंदी अब कराहे ना, हँसेले। ओकर हँसी व्यंग्य ह – हमनी सभ पर, हमनी के सरकार पर, हमनी के बेवहार आ चुप्पी पर।

हरिनन्दी के कहानी आ दरद अकेला के ना ह। हरिनन्दी अपने आप में संउसे समाज आ समाज के बात–बिचार के अईनक ह। जवना के नजर से प्रश्न उठेला कि का आदमिए एह धरती पर सबसे बड़का बा कि उहो संसार के व्यवस्था के हिस्सा ह। कई तरह के सवाल जे आदमी के आदमी भइला पर शक–सुबहा कर सकेला। हरिनन्दी के दरद अथाह बा आ आदमी से लेके ओकर झूठ के बन. ावल जाल में अझुराइल कई हजार सवालो बा। एही सवाल के जवाब जोहे में हरिनन्दी कबो हँसेले, कबो रोअले आ कबो कटाह बोलेले।

हरिनन्दी के एही पीर के गूँज एकरे तीर पर बसल गाजियाबाद के कवनों कोना में बइठल जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के अंतर्मन झंझोरलस। समाज के आईना देखावत हरिनन्दी के पीर के आपन कलम से उचरले। भोजपुरी साहित्य में व्यंग्य लेखन के परंपरा बहुत मजबूत ना सही, बाकिर जे रचनाकार एह विधा में आपन अलग छाप छोड़ले बानी, ओह में जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के नाम आदर से लिहल जाला। "उचरत हरिनन्दी के पीर" उनकर व्यंग्य–संग्रह के नाम मात्र नइखे, बलुक एक नदी के पीड़ा में समाइल समाज,

राजनीति, संस्कृति आ पर्यावरण के करुण कथा ह।

रचना के भाषा ठेठ भोजपुरी ह, बाकिर ओकर प्रवाह साहित्यिकता से भरल बा। व्यंग्य के धार में भाषा के मिठास बा, आ साथे बा संवेदना के खोंचाह धार। द्विवेदी जी के भाषा ना खाली लोक–संवेदना से भरल बा, बलुक ऊ समाज के चुभत साँचो के सहज रूप में कह देले बानी। व्यंग्य के "कटाह" लहजा ओहिजे दि खेला, जहवाँ लेखक अपनो के सवाल में झोंक देवे।

ई खाली नदी के पीर नइखे बलुक एकरे बहाने द्विवेदी जी आपन संग्रह में समूचा समाज के जवना में इतिहास–भूगोल, राज आ राजनीती, अचार–बेवहार पर अइसन टोन मरले कि मय जिनिस बेअंग हो गइल बा। व्यंग्य सहजे नइखे, समाज के बदबूदार गाद के व्यंग्य के ईतर के अलोता चहेंटल बा। व्यंग्य के एह संग्रह में छियालीस जो रचना बा भा कह सकेनी कि हरनंदी के राह में छियालीस गो मोड़ जेकरा से ई घवाहिल भइली। एकर धाह के आँच अइसन कि कबो जेठ के तीत त कबो अगहन के कुनमुन घाम लाग सकेला। आ एकर छाप एह संग्रह के कई गो लेख में साफ बुझल जा सकेला।

पछ–विपछ से परे जहाँ गलत लउकल ओहिजे कलम के तलवार भोंकत, छल–कपट के बेवहार के गिरहबान चढ़ावत, त कब्बो जन–मन के मरम के बुझत ओकर पीर से नाता जोड़ ओकर बात कहल व्यंगकार के काम ह। आ एहमें द्विवेदी जी सोरहो आना न्याय कइले बाड़ें।

अथ मनराखन कथा से व्यंग्य बाण चलावत–चलावत द्विवेदी जी के अंत में सकारल – 'हम भोजपुरिया साहित्यकार बानी... ' तक पहुँचे में अलग–अलग ताव आ भाव के व्यंग्य के मार सहे पड़ी। "उचरत हरिनन्दी के पीर" खाली नदी के पीर पुराण नइखे, बलुक ई समाज के चरित्र–पत्र ह। ई संग्रह भोजपुरी व्यंग्य साहित्य के एगो महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानल जा सकेला, जे ना केवल भाषा के समृद्ध करेला, बलुक आदमी के संवेदनो के आईना देखावेला। अब ई पाठक लोग के कोरा बा कि उनकर मन हरिनन्दी के पीर से केतना भींजता।

व्यंग्य के मार के केतना सह पायी ई पढ़ला के बाद लोग बताई बाकि एह संग्रह के पढ़ल जरुरी बा– हरिनन्दी खातिर। ओह पीर के जानल जरुरी बा जवना के जयशंकर प्रसाद द्विवेदी आपन एह संग्रह में उचरले बानी। भोजपुरी के थाती में अइसन रचना धरम के सहेजे खातिर लेखक के बहुत बहुत बधाई।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली

डॉ राजेश कुमार 'माँझी'

गंवई माटी में सनाइल कविता

ई बात सबका मालूम बावे कि कविता मूल रूप से पाठक के भावना के उद्दात बनावेले, ओकरा सौंदर्य–बोध में सुधार ले आवेले आउर ओकरा के अपना परिवेश से जोड़ेले। कविता द्वारा पाठक में संवेदनशीलता आउर सुरूचि के भी विकास होखेला। कविता के भाव, विचार आउर शिल्प–सौंदर्य के उद्घाटन सही लय आउर प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ला से ही संभव हो सकेला। एही से आवश्यक बा कि प्रस्तुत कविता–संग्रह "पीपर के पतई" के पैंसठगो कविता के माध्यम से एकर रचनाकार श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी द्वारा जवन भाव आउर विचार रउवा लोग तक पहुंचावे के को. शिश कइल गइल बा ओकर प्राप्ति खातिर ऊपर कहल गइल बात पर ध्यान दिहल जाव।

श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के कविता में मानवीय भावना के सहज अभिव्यक्ति देखाई देत बा। कवि द्वारा अपना कविता में सरल–सहज भाषा में सुख–दुख के व्यक्त करे के सफल प्रयास कइल गइल बा। संग्रह के एगो खास बात ई बा कि एकरा में प्रेम सहित मानव जीवन के दोसर विभिन्न पक्ष संबंधी कवितन के भी पाठक लोग आनंद ले सकेला । रहल बात प्रेम संबंधित कवितन के त, एकर कवगो कारण हो सकेला। जवन असली बात बा, ऊ ई कि प्रेम मनुष्य के सबसे बड़हन खजाना हवे, जवना के

कवनो रूप होला । प्रेम के एगो रूप प्रकृति प्रेम भी होखेला जवना के बारे में हर भाषा–बोली में प्रचूर साहित्य मिलेला । प्रकृति प्रेम के एगो सुंदर उदाहरण पाश्चात्य कवि जॉयसी किल्मर (श्रवलबम झपसउमत) के कविता में देखल जा सकेला जवना में कवि कहत बा कि एगो पेड़ से सुंदर कवनो कविता ना हो सकेले जवाना के बारे में उनकर पंक्ति बा –

I think that I shall never see
A poem lovely as a tree-
A tree whose hungry mouth is prest
Against the earth's sweet flowing breast;

A tree that looks at God all day,
And lifts her leafy arms to pray;

उपरोक्त पंक्ति से स्पष्ट हो जात बा कि प्रकृति के विराट स्वरूप प्रेम ही हवे। प्रेम भगवान के अनुपम वरदान हवे जवन जन्म से लेके मृत्यु तक मानव में नैसर्गिक रूप से मौजूद रहेला। सच्चाई ई बा कि बचपन से शुरू भइल प्रेम प्रकृति से जुड़ला के बाद उदात्त रूप धारण कर लेबेला । प्रेम ऊ विषय हवे जवना पर महाकवि कालिदास 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' नाटक के रचना कइलें जवन अपना आप में प्रणय, विवाह, विरह, प्रत्याख्यान आउर पुनर्मिलन के एगो सुंदर कहानी हवे। इहो बात साँच बा कि प्रेम से संबंधित कविता खाली भारतीय भाषा में नइखे लिखल गइ, बल्कि सम्पूर्ण संसार के रचनाकार लोग ही ए सुंदर विषय पर आपन लेखनी चलवले बा लोग । एकर एगो सुंदर उदाहरण पाश्चात्य कवि जॉन गे (श्रवीद ळंल) के कविता में देख सकत बानी रउवा सभे । जॉन गे लिखत बाड़ें –

Youth's the season made for joys
Love is then our duty;
She alone who that employs
Well deserves her beauty-
Let's be gay, while we may,
Beauty's a flower despised in decay-

उपरोक्त कविता के पंक्ति ए ओर इशारा करत बा कि कवनो भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के जानल–समझल आसान ना होखेला पर ऊ व्यक्ति यदि रचनाकार होखेला त कुछ हद तक ओ.करा रचना से ओकरा व्यक्तित्व के संगे–संगे समाज आउर परिवेश संबंधित ओकरा सोच के बारे में पता चलेला । त चलीं, ''पीपर के पतई'' में संकलित कवितन के माध्यम से ई बात के जानें के कोशिश कइल जाव कि श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के सोच अपना घर–परिवार आउरो समाज आ परिवेश के प्रति कइसन बा ? उनकर बाहरी आ भीतरी दुनिया के जाने खातिर प्रस्तुत कविता–संग्रह में संकलित कुछ कविता के चर्चा इहाँ पर कइल जा रहल बा। अपना विवेकानुसार हम ए संग्रह के कुछ कवितन के गुण–दोष उजागर करे के कोशिश कइले बानी बाकिर प्रत्येक व्यक्ति अपना–अपना ढंग से कविता के मतलब निकालेला आ एमें केहू के केहू से कउनो शिकायत भी ना होखे के चाहीं ।

कविता की उत्पत्ति के बारे में विद्वान लोगन के कहनाम बा कि कविता के उत्पत्ति दुख के अनुभूति से होखेला। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के कविता 'अचके में' भी ए बात के प्रमाण मिलत बा जहां कवि के कहनाम बा:

"सोच के अऊँजाइल मन
क्रोध में काँपत हाथन से
लिखल चाहत रहनी दोसर
अचके में लोगन के पीड़ा
लिखा गइल।"

कवनो भी कवि समाज से कट के ना रह सकेला । समाज के समस्या ओकरा मन के उद्वेलित करत रहेला। आज भारतीय समाज में कवनो भी व्यक्ति खातिर बेटी के शादी करे में पसीना छूट जाला । जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के कविता 'अब्बो ले सुपवा बोलेला' में बेटी के शादी करे के चिंता पाठक लोग देख सकता बा:

'हम त बानी लइकी के बाप
सोचते छाती लोटत सांप
कइसे लागी हांथे हरदी
सोचते बेरी गइनी काँप'

जिन्दगी का ह, ई आज ले केहू के सही मायने में पता ना चलल। हरेक व्यक्ति अपना अपना हिसाब से एकरा के परिभाषित करे को कोशिश करेला। जिन्दगी अपना आप में एगो पहेली आ कि सवाल एकर खोज ए संग्रह के कवि भी 'आन्हर मनई' नामक कविता में कवना तरह से करत बा ऊ रउला स्वयं ही देखीं:

'जिनगी के चाल
आउर ओकर पड़ताल में
बूझल दियरी
रिसे लागल दरद के लोर
हियरा निकारे क बतकूचन
नवटंकी लेखा लागल।'

जवना तरह से पांचों अंगुली एक समान ना होले ओही तरह समाज में सब आदमी एक जइसन ना होले। केहू सहायता पाके के सहायता करे वाला व्यक्ति के उम्रभर कृतज्ञ रहेला तो कहे काम निकलला के बाद पीठ मोड़ लेबेला जवना के बखूबी चित्रण 'आस्था बदल गइल' नामक कविता में कवना तरह आइल बा , देखीं रउवा सबसे:

'देख न आस्था बदल गइल
कंहरत रहलन हमही उठवनी
नीमन जगहा पर बइठवनी
लागत बा तबीयत संभव गइल।'

समाज ही ना घर–परिवार में भी आज केहू के केहू पर भरोसा नइखे। प्रत्येक आदमी दोसरा आदमी के संदेह के नजर से देखत बा। आपसी विश्वास अब चरमरा गइल बा एकर वर्णन द्विवेदी जी 'कइसन बहल बेयार' में सुंदर ढंग से कइले बानीः

'छूंछ भइल अपनन के थाती
दुबक रहल बा अब उतपाती
धनियां के हेरीं अब कहवां
जोन्ही बदले सऊनाइल बा।'

समाज में भ्रूण हत्या के समस्या बहुते गंभीर बात। आएए दिन भ्रूण हत्या के केस देखें–सुने के मिलेला । जयशंकर प्रसाद दिवेदी जी के कविता ने भी भ्रूण हत्या के सुंदर उदाहरण देके मिलत बा जवना से कवि के मन बहुते व्यथित बा। 'कनिया धन' में कवि के कहनाम बाः

'लागल नाहीं हाथे हरदी
कोठी बुची मराइल बांटे।
बहरे चाहे कुछुओ बोलीं
माई घरे छोहाइल बाटे।।

नारी बा नारी के दुश्मन
मन के नेह हेराइल बाटे।
हेतना पीर सहाइ कइसे
बुद्धि पहरा घहराइल बांटे।।'

मधुमास के मादकता अइसन होखेला कि मन बउरा जाला । मधुमास पर भारतीय कवि लोग आपन लेखनी खूब चलवले बा । मधुमास में कोयल के तान मन के बेधे लागेला जलना के वर्णन 'केके देखाईं चुनरिया' में कवि द्वारा कइल गइल बा :
'अमवा के मोजरी से कोइलर के बोलियां
चढत चइतवा में ताना देव छलिया
सम्हरे न आपन नजरिया हो राम
मन मधुआइल ।"

भारत में किसान लोग के समस्या बहुते गंभीर बा। आज भी भारत में खेती–बाड़ी बारिश पड़ निर्भर बा। बारिश ना भइला पर किसान के मन उदास हो जाला। एही बात के चित्रण कवि अपना कविता ' कि बझै खगही के भाषा' में ब खूबी कइले बाड़न। कवि के कहनाम बाः

'बादर बन्हले खेतिहर कबहूं
बारिस पर सभ निरभर अबहूं
कहां मुनाफा भइल किसानी
सदियन से बा इहां निराशा।'

भारतीय समाज में किसान के समस्या सहित मेहरारू के दशा में आज भी ज्यादा बदल. ाव नइखे आइल। मेहरारू लोग के आज भी कमजोर समझल जाला। लोग औरत लोग के अनगिनत खामी निकालत रहेगा। औरत जन्म से लेके अपना जिन्दगी के अंतिम समय तक समाज के ताना सहत रहेले जवना बारे में ' खोबसन' नामक कविता में कवि के पंक्ति बाः

'पहिले बेटी
फेरु ससुरइतिन
फेरु माई से आजी तक
खोबसन में बाझल
रहेली मेहरारू।'

आज के युवा पीढ़ी अपना मां–बाप के बिल्कुले ध्यान नइखे राखत। फैशन के आंधी आइसन आइल बा कि युवा पीढ़ी से पुश्तैनी खेती–किसानी नइखे होत जवना के उल्लेख 'घूंटत बाप' नामक कविता में सुंदर ढंग आइल बाः

'जिनगी के सुरुवतिए में
फैशन के बेमारी घेरले बिया
खेत खरिहान कूल्हे भुलाइल
बबरी के झारल, चश्मा चढ़ा के
लागता तोहरा सुझात नईखे।'

जवना तरह से सूरज के रोज उदय आउरो अस्त होखेला ओही तरह जवना प्राणी के जन्म होखेला ओकर मृत्यु भी निश्चित रहेला ।

अकेले ही चल जाला जवन एगो सच्चाई हवे। कवि एही वास्तविकता के वर्णन 'चलती के बेरिया' में करत लिख रहल बा:
'साथ संग कुल सभसे छुट गइलें
हित मीत हमरे नीयरो ना अइलें
असवो गवाइ न कजरिया। चलती के बेरिया।।'

ए सब उल्लिखित कविता के अलावा जयशंकरप्रसाद प्रसाद द्विवेदी जी अपना कविता 'तू त रहबा यार' में कालाधनय 'पतोह का निबाही' में बूढ़ पुरनिया लोग के एकाकीपन के समस्या य 'फाटल लुगरी' में गरीबी आउर मेहरारू लोग के समस्याय 'बहल गांव बिलाइल खेती' में बुजुर्ग लोग के समस्या के रेखाचित्र खींचे में जहवां एक ओर कामयाब बाड़न ओही जगहा 'बड़भागी भोजपुरिया' आउर 'भकुआइल बबुआ' में कवि अपना मातृभाषा भोजपुरी के गुणगान कइले बाड़न। संग्रह के बाकी कविता भी पठनीय आउर सराहनीय बा।

ए सब बात के आधार पर हम कह सकत बानी कि ''पीपर के पतई'' के रचनाकार श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी अपना कवि कर्म में बहुत सफल बानी । ए संग्रह में संकलित कविता के भाव, विचार आउर सुंदरता के अनुभव खातिर ए रचना के जरूर पढ़ीं। ए कविता–संग्रह के रचनाकार के वाचलता, मुखरता आ शब्द के अंदर छुपल भाव के सही अनुमान तबहीं होखी जब रउवा लोग संग्रह के सब कविता एक–एक कर के पढ़ब। ए संग्रह के आधार पर हम ई कह सकत बानी कि श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के साहित्यिक भविष्य बहुत उज्ज्वल आउर सुनहरा बा।

❑❑

❍ हिंदी अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(केंद्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

केशव मोहन पाण्डेय

भोजपुरी खातिर जरूरी किताब : बात–बतकही

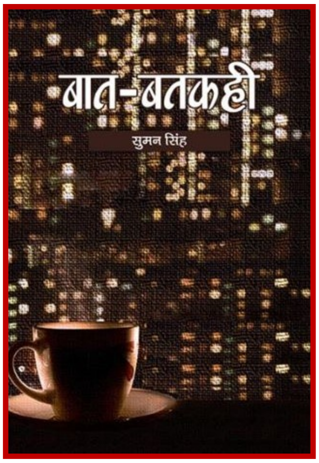

बातचीत कइला से ढेर बात निकलेला। मन के मरम पता चलेला आ भरम के पत्ता साफ हो जाला। आदमी के नियति अनुमान लगावल होला। अनुमान जब साँच के धरातल पर उतरेला त ओकरा रूप–स्वरूप के बदलला के ढेर संभावना रहेला।

बात हम बातचीत के करत बानी। त हमारा हाथ में भोजपुरी के बातचीत (साक्षात्कार) के किताब 'बात–बतकही' बा। एह किताब में एगारे भोजपुरी साहित्यकार लोग से लिहल साक्षात्कार सम्मिलित कइल गइल बा डॉ. सुमन जी की ओर से। बकौल डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी, ई भोजपुरी के पहिलका साक्षात्कार के किताब बा। उँहा के बतवनी की एगो 'साक्षात्कार' नाम से 1962–63 में किताब आइल रहे जवना में कई लोग, कई वरिष्ठ लोग से साक्षात्कार लिहले रहे। ऊ सगरो ओह 'साक्षात्कार' में संकलित रहे।

माने एक साहित्यकार की ओर से अनेक से कइल साक्षात्कार के ई पहिली पुस्तक ह। एह ऐतिहासिक काम बदे डॉ. सुमन सिंह जी के बधाई।

अब किताब के कलेवर। माने प्लेट में धइल कप। कप आ चाय भले अंग्रेजी देन होखे, बाकिर पइसल त घर–घर बा। भोजपुरिआ क्षेत्र में चाय के साथे बतकही ढेर होला। त एह सुन्नर कलेवर से सजवले बानी चित्रकार आ फिल्मी मनई आशीष पी मिश्र जी। उँहा के एह रंग चयन आ चित्र सज्जा ला बहुत बहुत बधाई आ धन्यवाद।

डॉ. सुमन सिंह जी विदुषी हई। उँहा के भाषा आ भाव सबसे मोहेला। एह किताब के सगरो साक्षात्कार उँहा के ओह आत्मीयता से लिहले बानी, जवन भोजपुरिया थाती ह। भोजपुरी संस्कृति बिना कवनो रिश्ता के रिश्ता जोड़े–निभावे वाली संस्कृति ह। ओही संस्कृति आ संस्कार

गइल बा।

किताब में पहिला साक्षात्कार पं. हरिराम द्विवेदी जी के बा। अति आत्मीयता से पूछल सवाल प उँहा के साफगोई से दिहल जवाब पाठक के मन मोहत चलत जात बा।

अगिला साहित्यकार बानी भोजपुरी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी। भोजपुरी खातिर इहाँ के एतना समर्पित हईं कि इतिहास के कइगो किताब इहाँ के आगे फेल बा। ज्ञान के भंडार आ तर्क के तासीर से सराबोर साक्षात्कार के सबके पढ़े–गुने के अवसर मिले के चाहीं।

किताब में अगिला साक्षात्कार भोजपुरिया स्वाभिमान के प्रतीक 'पाती' के संपादक आ साहित्यकार डॉ. अशोक द्विवेदी जी के बा। छात्र जीवन के साहित्यिक जतरा आ जरूरत के सथवे राजनैतिक रुचि आ फेर जीवन–क्रम के बाति पाठकगण के रोचक लगबे करी। ओकरा बाद जमशेदपुर के साहित्यकार गंगा प्रसाद अरुण जी के साक्षात्कार बा। उँहा के लेखन–जीवन आ भोजपुरी–अनुराग के पढ़ि के पाठक आह्लादितो होइहें आ प्रेरितो होइहें।

साक्षात्कार के क्रम में अगिला साहित्यकार बानी आनंद संधिदूत जी। अपना साहित्य लखां समृद्ध व्यक्तित्व के धनी मनई। देखाव के सुभाव से दूर एह साहित्यकार से सुमन सिंह जी के कइल बातचीत अनेक खातिर प्रेरक बनी।

चलतो फिरत शब्दन के समेट के साहित्य के शिरा में पगावल आ ओहके रसगर बनावल नव–लेखक लोग के इहाँ से सीखे के चाहीं। इहाँ के दृष्टि में भोजपुरी साहित्य कबो पुरान भइबे ना कइल। ऊ अपना समय–संदर्भ में सदा नया रहल बा। इहाँ के साक्षात्कार पढ़ल माने इहाँ के पढ़ल। आ पढ़ला के ओही क्रम में अगिला साहित्यकार के रूप में परिचय दास जी के साक्षात्कार बा। परिचय दास जी से लेखक भोजपुरी भाषा, साहित्य आ विशेषकर गद्य पर ढेर चर्चा कइले बानी, जवन पाठक खातिर ज्ञानवर्धक का।

किताब के अगिला साहित्यकार बानी भोजपुरी के एक मात्र प्रोफेसर डॉ. जयकांत सिंह 'जय' जी। उँहा के भाषा के बहुत समृद्ध ज्ञाता हईं। साक्षात्कार पढ़ के सहजे संज्ञान मिल जाई कि भोजपुरी के बचावे, बढ़ावे आ पढ़ावे खातिर का का उद्यम होत बा।

किताब में अगिला साक्षात्कार मनोज भावुक जी के बा। उँहा के संवेदना साहित्य के दोसरका रूप सिनेमा आ डिजिटल मीडिया के साथे ढेर बा। ऊहाँ के पढ़ल आ जानल आज के दौर में बेहद जरूरी बा।

किताब में दू महिला साहित्यकार लोग के साक्षात्कार बा। डॉ. प्रेमशीला शुक्ला आ डॉ. संध्या सिन्हा जी के। पाठक लोग इहाँ सभन के साक्षात्कार पढ़ि के ओह वस्तु–स्थिति आ परिस्थिति से पूरा परिचित हो जाई, जवना से गुजरत एह सब के साहित्यकार व्यक्ति तैयार भइल बा।

कुल मिला के भोजपुरी के बढ़न्ती के सथवे एगो मजबूत दस्तावेज के रूप में लउकत 'बात–बतकही' मन के निराशा के तंद्रा तुरि के सकारात्मक ऊर्जा के भंडार भरत बा। साहित्यकार लोग से हर पहलू पर मिलल उत्तर पढ़ि के मन भोजपुरिया भइला पर अउरी गर्वोन्नत होत बा। सथवे भोजपुरी माई खातिर बेर–बेर नेव के आदर प्रकट करता बा।

किताब : बात–बतकही
लेखिका : डॉ. सुमन सिंह
प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
मूल्य : 200 रुपया

❑❑

❍ **उत्तम नगर, नई दिल्ली**

भोगल यथार्थ के चित्रण – 'गजल गवाह बनी'

डॉ.संतोष पटेल

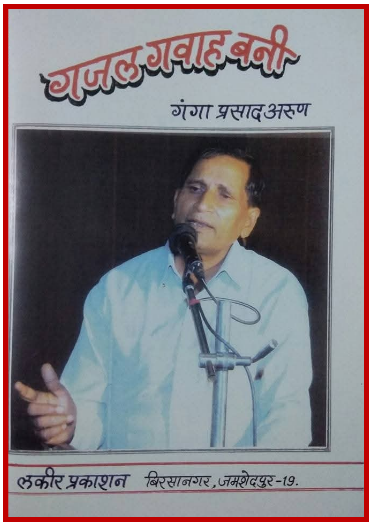

मराठी के वरिष्ठ दलित लेखक गंधाधर पणतावणे मानेलन कि दलित लेखन के पहिला दौर नकारवाद से भरल रहल। आक्रोश आ नकार में ओकर पहचान बनल, बाकिर अब ई लेखन चिंतन के मुद्रा में दाखिल हो रहल बा। ओकर स्वर अब धीर–गंभीर आ सेरा गइल बाकृ बाकिर ईहे नया रचनात्मकता के उदय के समय बा।

एह कथन के आलोक में देखल जाय त यथार्थ के वर्णन दलित साहित्य के पहिला सोपान बा। एह यथार्थ के आधार पर जाति–आधारित भेदभ. ाव आ शोषण के समुचित प्रतिकारकृई दलित विमर्श के दुसरका सोपान बा आ अंतिम सोपान बा ऊ चेतना, जेकर सहारे जाति–व्यवस्था के विनाश कर समतामूलक समाज खड़ा करे के लक्ष्य ठहरेला। भोजपुरी साहित्य आजू इहे चरण से गुजर रहल बाकृ ई कहनाम बिलकुल सटीक होई।

एही सन्दर्भ में वरिष्ठ कवि गंगा प्रसाद अरुण के प्रकाशित गजल–संग्रह 'गजल गवाह बनी', जे हस्तलिखित रूप में बा, दलित चेतना के ई सोपान पर खड़ा एगो अनमोल रचना ह। एक–एक अक्षर मोती जइसन पिरोवल, आ रचयिता के भीतर के संघर्ष गजल–गजल में मुखरित बा। एह संग्रह में गजलकार कल्पना के उड़ान में ना घूमेलन, बलुक पूरा सामाजिक व्यवस्था के बारीकी से खंगालेलन आ ओकरा कुव्यवस्था के भरपूर मुखालफत करेलन। गजलकार बराबरी, सम्मान आ समता के पक्ष में ठाढ़ बाड़े।

कवि गंगा प्रसाद अरुण के प्रतिरोध –स्वर एतना प्रखर बा कि एह गजल संग्रह के कई गो गजल कवनो भाषा में लिखल समकालीन गजल से टक्कर दे सकेला। भोजपुरी गजल में सामाजिक मुद्दा कमे मिलेला, आ मिले त इहाँ जइसन खांटी स्वर कमे सुनाई देला। एह संग्रह के 35 वां गजल में देखल जाव–

"बदतमीजी, बदगुमानी, बदजुबानी ना चली
दंभ कुल के, जाति के सुखल फुटानी ना चली।
जिंदगी में बा जरूरत, अदब के तहजीब के
बदमिजाजी, बददिमागी, बड़चलानी ना चली।"
(पृष्ठ 45)

'दलित साहित्य में बौद्ध दर्शन और चिंतन का प्रभाव' में डॉ. विमल कीर्ति लिखेलन–

"आज भारत के लगभग सभे भासा में दलित साहित्य लिखल जा रहल बा। भासा के लिहाज से दलित साहित्य संस्कृतनिष्ठ, भारी–भरकम भासा के समर्थन ना करे, बलुक लोकभाषा के समर्थन करेले। एही से दलित साहित्य में भासा सहज, सरल आ आसानी से सम्प्रेषित होखे वाला के महत्व दिहल जाला।"

एह कथन के मर्म ई बा कि लोकभाषा में दलित चेतना सहजता से ढल जाले, आ पाठक के दिल दिमाग पर सीधे असर करेले। गंगा प्रसाद अरुण के गजल एह सुगमता के जीवंत प्रमाण बाकृ

"अहीं ई कुरसीआइल लोग कहाँ ले जाई
छुआइल पीढ़ियन के रोग कहाँ ले जाई।
दोष अपने बा चनरमा में, छिपावे खातिर
लगावल आदित पर अभियोग कहाँ ले जाई।"
(गजल 4, पृष्ठ 14)

पिछला पचास बरिस से कवि अरुण भोजपुरी साहित्य के समर्पित सेवक रहनी। जीवन के 71वाँ साल में आके लिखल ई गजल–संग्रह विशेष महत्व पावेला, काहे कि एहमें रचनाकार के भोगल–सोगल यथार्थ धधक उठल बा। उ न केवल एह यथार्थ के प्रकट करेलन, बलुक गवाहो बना देलन–

"कभी त सुर्ख बनलीं आ कबो सिआह बनलीं
गजल के गाँव चलल, गजब सैरगाह बनली।
उड़े के अबहियो त आसमान बाकी बा
नया सूरज निकली, गजल गवाह बनली।"
(पृष्ठ 11)

गंगा प्रसाद अरुण के 'गजल गवाह बनली' में 54 भोजपुरी गजल समाहित बा। भाषा सादा, प्रभाव गाढ़, आ दर्द गूंजत। किनिया के महान साहित्यकार न्गुगी वा थ्योंगो 'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता' में लिखेलन—

"भाषा सबले ताकतवर साधन बा, जवन आत्मा के गुलाम बना सकेला। तन पर गोली चलेला, बाकिर मन पर भाषा राज करेले।"

एह संदर्भ में कवि अरुण के पंक्तियन में भाषा, दर्द आ प्रतिरोध मिल के नया शक्ति बन जाले—

"छलकत—तलफत नजर, त बरबस गजल भइल
लहसल—लहकत डगर, त बरबस गजल भइल
अद—बद पनघट पर जब परबत परस गइल
सइ—सइ लहरल लहर, त बरबस गजल भइल।"

सामाजिक पाखंड के वे खुलेआम ललकारेलन। ऊ समता के पैरोकार बाड़ें
"तेज बरियार धार बा अबहीं
लोग तेगा—कटार बा अबहीं
बोल बोले बुझा बड़प्पन के
लोग लुच्चा—लबार बा अबहीं।"

भोजपुरी समाज में जातिसूचक कहावत आ मुहावरा के भरमार बा। मंच, माला, माइक—सब जाति के हिसाब से बाँटल जात रहे। एह मंची प्रपंच के कवि अरुण तिखा घाव देलन—

"कुल सुविधा के मंच भइल बा
पचइती परपंच भइल बा।"
(पृष्ठ 26)

कविता के भीतर समाज आ समाज के भीतर कविताकृएह दूनू के भोगल यथार्थ से नापल जाए त अरुण के कवि—चेतना के फैलाव उनुकर गजलें में अपना शुरुआती बिंदु खोज लेवेला—

"झूठो कउड़ी—टई भाँच बा
रउरा लिखलीं आध साँच बा
सब कोई जानत बा रउरा
खाली मन के कुल कुलाँच बा।"

हर एक शेर वजनदार, कसल, आ कलात्मक नियम—कायदा में बाँधल। काफिया—रदीफ के अनुशासन में रहके विषय के ई तरह निभावलक् भोजपुरी गजल में दुर्लभ बा। अंत में उ खुदे कहेलन—

"अनका खातिर दरद सहेजी
अपना खातिर कर्ज हो गइल
भात—भवद्दी के चक्कर में
एगो खुन्नस दर्ज हो गइल।"

भोजपुरी में गजल परंपरा पुरान बा—1895 में तेग अली 'तेग' के 'बदमाश—दर्पण' 23 गजलगुल के दीवान रूप में छपल रहे। आजु समकालीन भोजपुरी गजल में विषय आ अभिव्यक्ति के लिहाज से 'गजल गवाह बनली' निस्संदेह एक प्रौढ़ संग्रह ह। एहि से ए संग्रह के स्वागत जरूरी बा आ गंगा प्रसाद अरुण जी के दिल से बधाई देत उहाँ के स्मृतियन के प्रणाम करत बानी।

———

गजल गवाह बनी
(भोजपुरी गजल—संग्रह)
लकीर प्रकाशन, बिरसानगर,
जमशेदपुर —19
सन् 2018
मूल्य — ₹200 मात्र

❑❑

❍ **द्वारिका, नई दिल्ली**

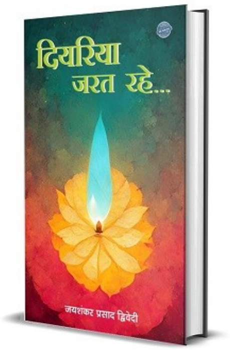

कुंडी क रहस्य

डॉ. सुमन सिंह

सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
मुकुलारण्यम् महाविद्यालय, सिगरा ,वाराणसी

'' देखा , ले त चलत हईं सिवसंकर भइया के इंहा बाकिर कुछ एने –ओने हो जाई त हमके दोस मत दिहा।समझ गइला ना ! अपने कपार क अलाय–बलाय हमरे पर मत पटकीहा।'' परताप एह अंदाज में बतिया कढ़वलन कि मनोज क पहिलहीं से संकित जीव में थरहरी दउड़ गइल।घबरा के पुछलन – '' काहें डेरवावत हउवा भाय।सिवसंकर सर क एतना बड़ाई सुनले हईं कि बिना मिलले रह ना जात ह।बनारस आके बिना उनकर चरन स्पर्श कइले लवट जाइब त हमार आत्मा के कल ना पड़ी।'' मनोज क बेकली देखके परताप मुस्किया दिहलन –
'' ऊ कुल त ठीक ह बाकिर जहाँ ऊ रहेलन उँहा एगो अइसन आत्मा निवास करेले कि ओसे मिलते बड़–बड़ लोगन के कपकपी छूट जाला।''
'' काहें डेरवावत हउवा भइया।हम भूत –परेत में हम बिसवास ना करीला। ''
भीतर से डेरात बाकिर बाहर से बहादुर बनत मनोज कहलन।
'' भूतो –परेत से जबर आत्मा हे ऊ।भूत –परेत क त कवनों न कवनों ईलाज ह बाकिर ओकर कवनों ईलाज ना ह।बिस्व क कुल बैद –हकीम फेल।'' परताप मन ही मन मुस्कियात रहलन।
'' अचम्भो ! जब भूत परेत ना ह त का कवनों जादू–टोना ह ? '' मनोज बिसम्य से भरल पुछलन।
'' ना हो ।जादू टोना क त काट ह बाकिर ओह फांस क कवनों काट ना ह।बचल जरूरी ह।बहुते जरूरी ।देखा हम चेता देत हईं। बाद में हमके नत कहिहा कि चेतवली हं ना।बूझल ? ''
'' काहें डेरवावत हउवा भाय। अइसन कवन बाधा –बिघ्न ह ? हम बड़–बड़ आफत–बीपत से जूझल हईं।हमके अब कवनों फरक ना पड़ेला।'' मनोज क बनल बेफिक्री देख के परताप क खल–मन खुशी से गदबद हो गइल रहे बाकिर ऊ चेहरा क भाव तनिको बदले ना देत रहलन।दुनिया भर क चिंता फिकिर ले आवत मुखमुद्रा के बनावत– बिगाड़त कहलन –'' चला चलते न हउवा।बड़ –बड़ लोग के कपार खराब हो गइल ।अब तोहरे न देखे के ह।''
'' अच्छा ! त तू कइसे साबुत बच गइला ? तोहके ना लागल आत्मा –वात्मा ?'' मनोज के आवाज में घुलल सिधाई भइया के गुदगुदावत रहे।
'' हमार बात छोड़ा।हम त भोले भंडारी के सरन में रहीला।कुल्ह भूत –परेत, डाइन –चुरइन, वैम्प–वैम्पायर से हमार दाँत काटल दोस्ती ह ।''
भइया के आँख में सरारत क बिजुरी चमकत रहे। मनोज उनके ओरी देख के कुछ अंदाज लगावल चहलन बाकिर फेल हो गइलन।भइया अपने चेहरा मोहरा पर आवे वाला भाव के छुपावे में एक ले माहिर।समने वाला के पते ना लगे दें कि उनके मन में का चलत ह।

गली के आखिरी छोर के एगो पुरान ढहल मकान के सामने जवने पर लिखल नेमप्लेट धुँधला हो गइल रहे।अउर जवन कुछ अच्छर पढ़े में आवत रहे ओसे एतने पता चले कि कवनों 'निवास' ह पर केकर ह,ई ना पढ़त बने। ऊँहवा पहुँच के परताप मनोज के कहलन –'' जा, जाके कुंडी बजावा। तीन बार बजा के छोड़ दिहा। तीन बार बजवले के बाद जदि कोई ना खोली त फिर तब तक बजइहा जब तक किवाड़ी ना खुले।'' परताप के सुर में पहिला बार बेधक ब्यंग क आभास पाके कुंडी के ओर बढ़ल मनोज क हाथ कुछ देर बदे थथम गइल।संशय से सराबोर परताप के ओरी निहारत पुछलन – '' ई तीन बार क का राज ह भइया ? देखा ! कवनों फँसे वाला बात त ना ह ? जदि होखे त बता द । हम कवनों बवाल में फँसल ना चाहत हईं।जियत जिनगी रही त सिवसंकर गुरुजी से फिर भेंट –मुलाकात हो जाई।बाकिर आपन जान सांसत में डाले त नहिये आइल हईं।अबहीं उमिरिये का भइल ह हमार।'' मनोज के पहिली बार डेरात देख परताप के हँसी छूट गइल –
'' का बे कुल बहादुरी निकर गइल ? अबहीं त कुंडियों ना बजवले।चल कुछ ना हो होई।बाबा बिसनाथ क नाव लेके कुंडी बजाव।डेरइले से काम ना चली।चल..शाबाश।'' परताप के अंदाज अउर आवाज में खोटखटकत रहे।मनोज दू कदम

आगे बढ़के पीछे लवट आवें।थकहार के जब ना रह गइल त परताप से निहोरा कइलन – " भइया ! तुहीं खटकावा।हमसे ना होई।"

" अच्छा गुरु ! भल कहला।तोहन गुरु –चेला लोग के मिलनी करावे में हम भेंट चढ़ जाईं न ? हमके का गरज।तोहके ना मिले के ह त लवट चला।हम कवनों रिस्क लेवे के मूड में ना हईं।" परताप लवटे लगलन कि उनकर बाँह खींच के अपने संगे ले आवत मनोज फिर से चिरौरी –बिनती करे लगलन।

" भइया ! देखा नराज मत होखा।हमही कुंडी बजाइब बाकिर तू इंहवे रहा। गुरु जी से हमके मिलवाई के जइहा।" मनोज क दीन दसा देख के परताप पसीज गइलन।

" ठीक ह । चल तीन बार कुंडी खटखटाव। जदि केहू ना खोली त भाग चलिहे।" मनोज के कान में फुसफुसा के परताप कहलन।डर के मारे मनोज क हाथ पैर में गनगनी लेस दिहलस।केहू तरे ऊ तीन बार कुंडी बजवलन बाकिर केहू क आहट ना आइल,किवाड़ ना खुलल।परताप मनोज क हाथ पकड़ के बिजुरी के गति से दउड़ गइलन अउर गली के अगिला मोड़ पर ही जाके साँस लिह. लन।मनोज मारे डर अउर लगातार धउरले से छाती पकड़ के बइठ गइलन।हांफत–हांफत पूछे लगलन –

" अइसन का हो गइल रहल ह ? काहें सिर पर पैर रखके भगला ह भइया ।"

" सुस्ता ला ससुर अउर चला चाह –वाह पिआव. ा।बहुत बड़ फजीहत से जान बचल ह आज।समझ ला पहिली बेर में एकदम साफ –साफ बच निकलला ह।नाहीं त एतना बुरा फँसता कि बाबा बिसनाथो के बचवले ना बचता।" परताप लगातार छूटत हंफरी में बोलत रहलन।

" काहें भइया ? अइसन का मामिला ह ? " मनोज क होस –हवास गुम रहे।

" कुल्ह आजुवे जनबा।काल्ह बताइब।काल्ह फिर चले के गुरुजी से मिले। ठीक न ?" मनोज क पीठ ठोंकत परताप चौरसिया चाय –पान के दो. कान ओरी चल दिहलन।एहर मनोज बेचारु सोचते रह गइलन कि आखिर ई तीन बार कुंडी बजवले क रहस्य का ह ?"

क्रमशः

❑❑

❍ वाराणसी (उ0 प्र0)

चर्चित नई पुस्तकें

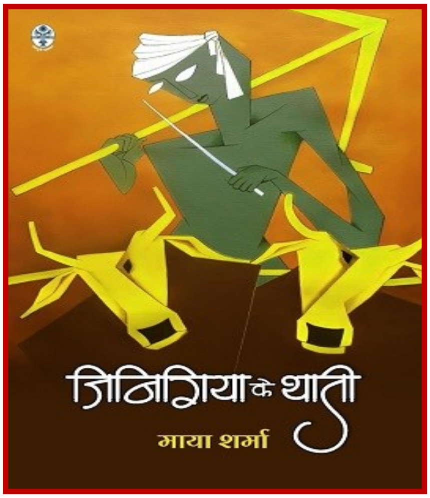

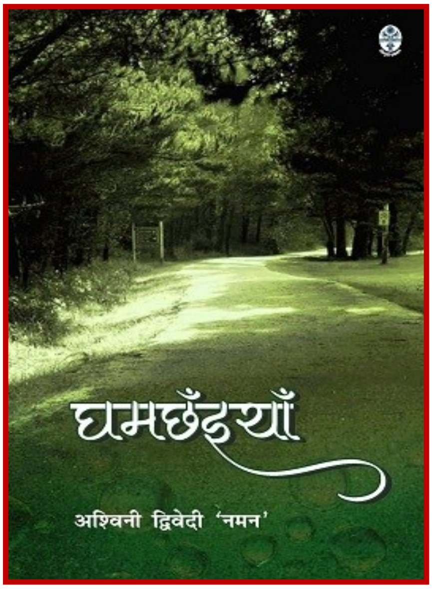

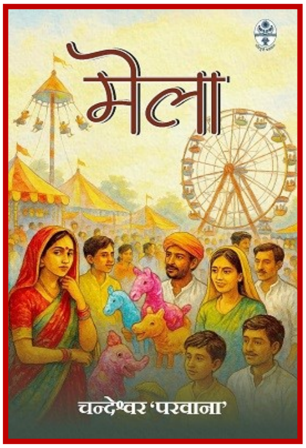

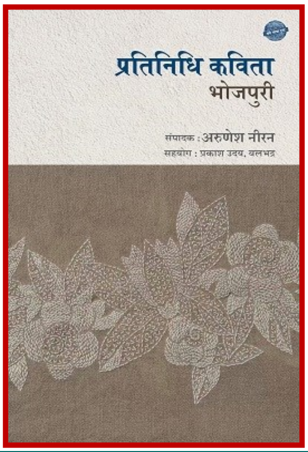

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana